श्रीगणेशायनमः

श्लोक

शकेन्द्र कालार्कयुतः कृत्वाशून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवादिबुधैः क्रमात्१

टीका ॥ शालिवाहन के शाकमें १२ बारह मिलावे और ६० का भाग देय शाष रहे तो प्रभवादिक संवत् का नाम जानना ॥१॥

श्लोकः

सएव पंचाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्यहि
रेवाया उत्तरेतीरेप संवत्साम्नाति विश्रुतः ॥ २

टीका ॥ शालिवाहन के शकमें १३५ एकसौ पैतीस मिलावे तो रेवानदी के उत्तरके किनारे पै वसे जो विक्रम राजा जिसका सम्वत्सर जानना ॥ २ ॥

सवत्सर नामानि

श्लोक

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोथ प्रजापतिः॥
अंगिराः श्रीमुखोभावो युवाधाता तथैवच १।
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्चतारणः पार्थिवो व्ययः २।
सर्व जित्सर्वधारीच विरोधी विकृतिः खरः ॥
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथ दुर्मुखो ॥३॥
हेमलंबो विलंबी च विकारी शार्वरी प्लवः॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसु पराभवो ४
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत्
परिधावी प्रमादीच आनंदो राक्षसो नलः ॥५॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मतिः॥
दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ६॥
॥ ६ ॥

भवंति तेषा मधिदेवता श्च क्रमेणा वक्ष्यामि मुनि प्रणीताः
विस्नु जीव: शक्रो दहन स्त्वष्टा अहिर्बुध्न्य: पितर: ॥
विश्वे देवाश्चंद्र ज्वलनौ नासत्य नामा नोर्च्च भग: २॥

टीका ॥ बारह वर्ष का एक युग कहते हैं ऐसे पांच मिलके ६० संवत्सर होते हैं तिन वर्षों के क्राम से अधि देवता मुनियों ने कहे हैं ॥१॥ विस्नु १ बृहस्पति २ इंद्र ३ अग्नि ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ पितर ७ विश्वदेवा ८ चंद्रमा ९ अग्नि १० अश्विनी कुमार ११ सूर्य १२ ये संवत्सरों के स्वामी कहे ॥ २

भेद कहते हैं ॥

संवत्सर: प्रथमक: परिवत्सरोन्य स्तस्मादिडा
न्विदिति पूर्व पदाद्वत्सरेयु: ॥ एवं युगेषु सकलेषु
तदीय नाथा वन्ह्यर्क सोमकमु विरंचि शिवा क्रमेण

टीका ॥ प्रथम संवत्सर का स्वामी अग्नि द्वितीय परिवत्सर का स्वामी सूर्य तृतीय इडावत्सर का स्वामी चंद्रमा चतुर्थ अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा पंचम इद्वत्सर का स्वामी शिव ये सबरे युगों के विषें जानियें॥

अन्य मतेतु

आनंदादि भवद्ब्रह्मा भावादिर्विस्नुरेवच ॥
जयादि पूर्वक: प्रोक्ता स्टष्टि पालन नाशका:

टीका ॥ आनंदादिक २० बीस संवत्सरों का स्वामी ब्रह्मा और भावादिक २० संवत्सरों का स्वामी विस्नु और जयादिक २० बीस संवत सरों का स्वामी रुद्र ब्रह्मा स्टष्टि कर्त्ता विस्नु पालन कर्त्ता रुद्र संहार कर्त्ता ये जानिये ॥१॥

ऋतु अयन प्रकर्ण

शिशिर पूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययन माहुरहश्च तदामरम्॥
भवति दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुता हिसा

टीका ॥ शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतुओं में सूर्य उत्तरायन होते हैं सो देवताओं का दिन जानिये और वर्षा शरद हेमंत इन तीन ऋतुन में सूर्य दक्षिणायन होते हैं सो देवताओं की रात्रि जानिये ॥८॥

मास परत्व ऋतु

चैत्रादि द्वि द्वि मासाभ्यां वसंताद्यत वश्च षट्
दक्षिणान्याग्रगृह्णति दैव पित्रेन्च कर्मणि ॥१

टीका ॥ चैत्रादिक दो दो महीनों में दक्षिणान्य के मत से देवकर्म पित्र कर्म में वसंत आदि छहों ऋतु ग्रहण करते हैं ॥१॥

उदाहरण

मास	ऋतु	मास	ऋतु
१ चैत्र	वसंत १	७ आश्विन	शरद ४
२ वैशाख		८ कार्तिक	
३ ज्येष्ट	ग्रीष्म २	९ मार्गशिर	हेमंत ५
४ आषाढ		१० पोष	
५ श्रावण	वर्षा ३	११ माघ	शिशिर ६
६ भादों		१२ फाल्गुण	

मास परिज्ञान

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः।
साराशिः संक्रमाख्या स्या मासत्पतनहायने

टीका ॥ पूर्व की राशि को छोडके आगे की राशि को जाय जो सूर्य से मेष राशि से आदि देके उसको मास संक्राति ऋतु वर्ष अयन या गिनती से होते हैं ॥

दर्शा वधि मास मुप्रांति चांद्रं सौरंतथा भास्कर
राशि चारात ॥ त्रिंशाद्दिनं सावन संज्ञमार्या
नाक्षत्र मिंदोर्भगण भ्रमाच्च ॥ १॥

टीका ॥ मावस से मावस तक चंद्रमास कहते हैं संक्रांति से संक्रांति तक सौरमास कहते हैं तीस ३० दिन का सावनमास कहते हैं । चंद्रमा के नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र तादिन सत्रमास कहते हैं १

मास नाम

मधुस्तथा माधव संज्ञ कश्च शुक्रः शुचिश्चाथ

श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशंतु भाद्रके ॥
आश्विने पद्मनाभं च कर्जे दामोदरंवतु ४

टीका ॥ मार्गशिर में केशव नाम विष्णु का नाम जानिये - पौष में नारायण नाम जानिये - माघ में माधव नाम जानिये - फाल्गुन में गोविंद नाम जानिये - चैत्र में विष्णु नाम जानिये - वैशाख में मधुसूदन नाम जानिये - ज्येष्ठ में त्रिविक्रम नाम जानिये - आषाढ में वामन नाम जानिये - श्रावण में श्रीधर नाम जानिये - भादों में हृषीकेश जानिये - आश्विन में पद्मनाभ नाम जानिये - कार्तिक में दामोदर नाम जानिये - मार्गशिर में केशव नाम जानिये - पौष में नारायण नाम जानिये ॥ ४ ॥

मास परत्व देवीन के नाम

मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥
माघेतु रुक्मणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रि नामका ।
चैत्रे मासि रमादेवि वैशाखे मोहिनी तथा ५ ॥
पद्माक्षी ज्येष्ठ मासेतु आषाढे कमले तिच ॥
कांतीमती श्रावणेच भाद्रेतु अपराजिता ६ ॥
पद्मावती आश्विनेतु राधादेवीतु कार्तिके ॥ १

टीका ॥ चैत्र में रमा देवी जानिये - वैशाख में मोहिनी नाम जानिये - ज्येष्ठ में पद्माक्षी नाम जानिये - आषाढ में कमला देवी नाम जानिये - श्रावण में कांतिमती जानिये - भादों में अपराजिता नाम जानिये - आश्विन में पद्मावती नाम जानिये - कार्तिक में राधा नाम जानिये - मार्गशिर में विशालाक्षी नाम जानिये - पौष में लक्ष्मी नाम जानिये - माघ में रुक्मिणी नाम जानिये - फाल्गुण में धात्री नाम जानिये - ये देवीन के नाम हैं ॥ १ ॥

वार परत्व मास फल

पंचार्क वासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयं
पंचार्क वारा दुर्भिक्ष शेषा वाराः शुभप्रदः

अधिक मास

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासै र्दिनैः षोडशभिस्तथा
घटिका नाञ्च तुष्केन पतत्यधिकमासकः

टीका ॥ ३२ महीना १६ दिन ४ घटी इनके भागजाने पर्यंत अधिक मास संभव होता है ॥ १ ॥

क्षय मास

असंक्रांति मासाधिमासः स्फुटं स्याद्विसंक्रांतिमा
सः क्षयाख्यः कदाचित ॥ क्षय कार्त्तिकादित्रयेना
न्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येधिमासद्वयंच ॥ १ ॥

टीका ॥ जिस महीने में संक्रांति होय नहीं तो अधिक मास होता है और जिस महीने में दो संक्रांति होंय तो क्षय मास जानिये कार्त्तिकादि तीन मासों में संक्रांति का सभव न हो तो उस वर्ष मे दो अधिक मास होते हैं ॥ १ ॥

तिथि प्रकरणं

तिथिज्ञान

मासभाच्चांद्रभं यावत् गणयेत्तावदेवतु ॥
यावंति गणनाद्रानि तावंत्यः स्तिथयः क्रमात्

टीका ॥ मासके नक्षत्र से लेके दिवस के नक्षत्र की जितनी संख्या होय तितनी तिथि जानिये परंतु पूर्णिमास की गिनती समझले ॥ १ ॥

तिथि कर्म फल

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृती
या रोग्यदाचैव हानिदाच चतुर्थिका ॥ शुभातु पंचमी
ज्ञेया षष्ठिकात्वशुभामता ॥ सप्तमीतु शुभा ज्ञेया अष्ट
मी व्याधिनाशिनी ॥ नवमी मृत्युदा ज्ञेया द्रव्यदा दश
मी तथा ॥ एकादशीतु शुभदा द्वादशी सर्व सिद्धिदा ॥
त्रयोदशी सर्व सिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा
पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्या शुभा तिथिः ॥ २ ४ ५ ॥

तिथि जानिये – पञ्चमी ५ दशमी १० पूनों १५ ये पूर्णा तिथि कृष्ण पक्ष में पंचमी पर्यंत शुभ जानिये – पंचमी से मावस पर्यंत मध्यम – मावस से पंचमी पर्यंत हीन – शुक्ल पक्ष में पंचमी तक हीन – पंचमी से दशमी तक मध्यम – दशमी से पंचमी पर्यंत श्रेष्ठ जानिये ॥ १ ॥

तिथि वर्ज्यतानि

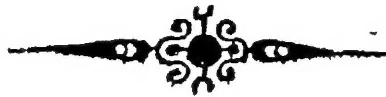
कूष्मांडं बृहती फलानि लवणं वर्ज्यं तिला
म्लतथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षक
पालं नकम् ॥ निष्पावं मसूरिका फल
मथां हंताकसंज्ञं मधु द्यूतं स्त्री गमनं क्रमात्
प्रति पदादिष्वेवना षोडशः ॥ १ ॥ ५ ५ ॥

टीका ॥ पड़वा को पेठा न खाय – दूज को कटहल न खाय – तीज को नोंन न खाय – चौथ को तिल न खाय – पंचमी को आम की खटाई न खाय – छट को तेल न खाय – सप्तमी को आँवला न खाय – अष्टमी को नारियल न खाय – नौमी को कापूरी फल न खाय – दशमी को परवल न खाय – एकादशी को दलिया न खाय – द्वादशी को मसूर न खाय – त्रयोदशी को बेंगन न खाय – चौदश को सहत न खाय – पूनों को जूआ न खेले – मावस को स्त्री से भोग न करे ये आयु वारे को वर्जित करे हैं – अष्टमी को मांस न खाय चौदश को हजामत न करावे – ये बातें ऊपर लिखी सो वर्जित हैं ॥२॥

तिथियों के कृत्य

नंदासु चित्रोत्सव वास्तु तंत्र क्षेत्रा दि कुर्वीत तथैव नृत्यं ॥ विवाह भूषा शकटाध्वयाने भद्रासु कार्य्याण्यपि पौष्टि कानि ॥ जयासु संग्राम बलोपयोगी कार्याणि सिद्धंत्यपि निर्मितानि ॥ रिक्तासु विद्वद्वध घात सिद्धिर्विषादि शस्त्रादि च यांति सिद्धिम ॥ पूर्णासु मांगल्य विवाह यात्रा सपौष्टिकं शांतिक कर्म कार्यं ॥ सदैव दर्शे पितृकर्म मुक्तं नान्य द्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥ ३ ॥

ज्योतिषसार



मुन्शी किशनलाल ने पंडित वृंदा
वनदासजी के द्वारा संस्कृत से
भाषाटीका कराके मूल सहित

आगरा
मुहल्ला छिलीईंट मतबे ईजादकिशन
में छपवाया

चौथीबार ३००० पुस्तक ॥ मूल्य प्रति पुस्तक १)

3000 Copys } 1 Rupee

बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः

टीका ॥ पूर्व का स्वामी सूर्य अग्निकोण का स्वामी शुक्र दक्षिण का स्वामी मंगल नैऋत का स्वामी राहु पश्चिम का स्वामी शनि वायव्य का स्वामी चंद्रमा उत्तर का स्वामी बुध ईशान का स्वामी गुरु ये दिशाओं के स्वामी जानना चाहिये ॥

ग्रहों की जात

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियो भौमभास्करौ
सोम सौम्यो विशौ प्रोक्तौ राहु मंदौ तथांत्यजौ।

टीका ॥ बृहस्पति शुक्र यह ब्राह्मण जानिये - सूर्य मंगल ये क्षत्री बुध चंद्रमा ये वैश्य जानिये - राहु केतु शनि ये शूद्र जानना ॥

ग्रहों के वर्ण

रक्तावंगारकादित्यौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ
गुरु सौम्यौ पीत वर्णौ शनि राहु सितौ शुभौ ॥

टीका ॥ सूर्य मंगल ये लाल वर्ण जानिये - बुध बृहस्पति ये पीला वर्ण जानिये - शनि राहु ये काला वर्ण जानना ॥

रविवारादि कर्म जानना

राज्याभिषेकोत्सव यानसेवा गोवह्नि मंत्रौ
षधशास्त्र कर्म ॥ सुवर्णताम्रौर्णिक चर्मका
ष्ठ संग्राम पराद्या दिरवौ विदध्यात् ॥ १ ॥

टीका ॥ रवि वार के दिन राजा का अभिषेक गीत बाजा पालकी चढना राजा की सेवा गौ बैल का पालना अग्नि में हवन करना मंत्र उपदेश करना औषधि खाना शास्त्र बनाना दुकान का करना सोना तांबा ऊन चमरा काष्ट युद्ध प्रसंग ये रवि वार को कृत्य करना ॥ १ ॥

सोमवार के कर्म

शंखाब्जमुक्ता रजतेक्षुभोज्य स्त्री वृक्ष क
ष्यांबुविभूषणाद्याः ॥ गानं क्रतु क्षीर वि
कार शृंगी पुष्पांबरारंभण मिन्दु वारे ॥ २

सिद्धाति शुक्रास्य दिवे समस्ता:॥६

टीका ॥ शुक्रवार को स्त्री संग गावना शय्या मांगि रत्न उत्साह अलंकार वाणिज्य कर्म गाई द्रव्य ये शुक्र को क्षत्य करनी ॥६॥

शनिवार

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्र दास पापानृतस्ते
य विषाद विद्या ॥ गृह प्रवेश द्विपबंधदी
क्षा स्थिरंच कर्मा सुत वन्हि कुर्यात ॥७॥

टीका ॥ शनि वार को लोहे का काम पत्थर का शीशे का काम तरवार दास दासी पापकर्म झूठ बोलना चोरी विषका गृह प्रवेश हाथी बाँधन मंत्र उपदेश और स्थिर कर्म शनिवार को करना ॥७॥

वार देवता

सूर्य्यादित: शिव शिवागुह विष्णु केन्द्र
काल: क्रमेण पतय: कथिता ग्रहाणाम ॥

टीका ॥ सूर्य का स्वामी शिव - चंद्रमा का पार्वती - मंगल का स्कंद - बुध का विष्णु - गुरु का रुद्र - शुक्र का ब्रह्मा - शनि का चंद्रमा स्वामी यह ग्रहों के क्रम से स्वामी कहे मुनियों ने ॥

ग्रहों के अधि देवता

वन्हिंवुभूमि हरि शक्र शची विरंचि
स्तेषां पुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च॥ १ ॥

टीका ॥ सूर्य का अग्नि अधि देवता - चंद्रमा का जल - मंगल का भूमि - बुध का हरि - बृहस्पति का इंद्र - शुक्र का इंद्राणी और शनि का ब्रह्मा अधि देवता मुनिवरों ने ग्रहों के अधि देवता कहे ॥ १ ॥

काल परिणाम

पतंग शुन्यो दिवमाधि पत्यं निशाप्यरुश्चै
वतु तिग्मभानो: ॥ रात्रिद्वयंचे का दिनं चसो
मो शेषे ग्रहाणामुदयप्रवृत्ति: ॥ २ ॥ ३ ॥

टीका ॥ शनिश्चर का दिनवली - सूर्य का दिन रात्रिवली - चंद्रमा का

शुक्र को गोमय डालकर तेल लगावे तो तेल दोष दूर होय ॥ १

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वामी	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	रुद्र	ब्रह्मा	चंद्र
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
काल वि·	८ प्रहर	२रात्रि४४·	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिन दोष	दिन दोष	रात्रि दोष	रात्रि दोष	रात्रि दोष	दिन दोष
कृत्य	उक्त कर्म सि·	सर्व कर्म सि·	उक्त कार्य	कर्म सि·	काम सि·	कार्य सि·	उक्त कार्य
तत्फल·	ताप	शोभा	मृत्यु	धन	हानिः	दुःखम्	दुःखम्

अथ नक्षत्र ज्ञान

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो
भशोषितः स्याद् दुड शेषसंख्या ॥

टीका ॥ चैत्र से आदि लेकर गत महीनों को दूना करे गई भई तिथि जोड दे और १ घटाय दे तब सत्ताईस २७ का भाग देय शेष रहे सो नक्षत्र जानिये ॥

अथ शुभाशुभ नक्षत्र ज्ञान

अश्विनीतु शुभा प्रोक्ता भरणी नाशकारिणी ॥
कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः
मृगः शुभस्तथाश्चार्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ।
पुष्यः शुभः सार्पमघा पूर्वा शुक नाश मृत्युदाः
उत्तरा हस्त चित्रास्तु विद्या लक्ष्मी शुभ प्रदाः ।
स्वाती विशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ३
ज्येष्ठा मूलं तु मासान्तं यक्षय नाशार्थ दानिदम् ।
विष्णु ब्रह्मा विष्णु वश्च वृद्धि वृद्धि कर प्रदाः ४
वासव वारुणी प्रोक्तं शुभं मद्र मृति प्रदम् ॥ ५॥
उत्तरा भाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका ॥ ५ ॥

उत्तराभाद्रपद पूर्वा कहिये रेवती ये नक्षत्रों के स्वामी कहे ॥ २ ॥

अधोमुख नक्षत्र ॥

मूलाग्नेयमघाद्विदेवभरणी सर्पादि पूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं काला मि दं कीर्त्तितम् ॥ वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातौ निधेरुद्धतिक्षेपौ द्यूतविलप्रवेशगणितारम्भः प्रसिध्यंतिच ॥ २ ॥

टीका ॥ मूल कृतिका मघा विशाखा भरनी श्लेषा तीनों पूर्वा ये अधो मुख नक्षत्र कहे इन नो नक्षत्रों में बावडी कुआ तलाव गढेला खाई द्रव्य खोद के रखना जूआ खेलना बिलमें प्रवेश करना गणित का आरंभ ये कर्म अधोमुख नक्षत्रों में शुभ हैं ॥ २ ॥

तिर्यङ्मुखन

ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः पौषाऽनुराधानिलत्वष्ट्राख्यानि वदंति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषु च ॥ अश्वेभोष्ट्रतुलायरासभवृषोरभ्रादिदांत्यश्वनौ गंत्रीयंत्रहलप्रवाहगमनारंभाः प्रसिध्यंतिच ॥ ४ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृगशिर रेवती अनुराधा स्वाति चित्रा इन नो नक्षत्रों में घोड़ा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेढा कुत्ता नाव नंत्र नागर धरना गमन ये कर्म करना ४

ऊर्ध्वमुखन ॥

पुष्यार्द्रा श्रवणोत्तरा शतभिषक्त्राह्म श्रविष्ठा ह्वयान्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषु तु ॥ प्रासादध्वजहर्म्यवारणगृहप्राकारसत्तोरणारामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादिच ॥ ६ ॥

टीका ॥ पुष्य आर्द्रा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा उत्तराफा उत्तर

भेद बंधवध कर्म्मचान्तु ॥ १॥

टीका ॥ आर्द्रा अश्लेषा ज्येष्टा मूल इन नक्षत्रों में भूत यक्ष इन की पीडा निवारण मंत्र साधन करना बंधन कर्म भेद कर्म करना यह शुभ है ॥ १ ॥

चरनक्षत्र

वैष्णव त्रय युताः पुनर्वसु मारुतं च चर पंचकं त्विदम् ॥ दंति वाजि करभेष वाह नारम्भयान विधिषु प्रशस्यते ॥ २ ॥ २ ॥

टीका ॥ पुनर्वसु स्वाति श्रवण धनिष्टा शतभिषा इन नक्षत्रों में हाथी घोड़ा इत्यादि नाना प्रकार के वाहन नागीचे को जाना पालकी रथ बनाना ये विधि इनमें शुभ है ॥ २ ॥

उग्र नक्षत्र

पूर्विकात्रितय मांतिकं मघेत्युग्र पंचकमिदं जगुर्बुधाः ॥ शाठ्य नाश विष घात बंधनो त्साह शास्त्र दहनादिषु स्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वाभाद्रपद इन नक्षत्रों में शठकर्म विषकर्म बंधन उत्साह शास्त्र ये कर्म शुभ हैं ॥ १॥

मिश्र नक्षत्र

हव्य वाहभ युतं द्विदैवतं मिश्र संज्ञमथ मिश्र कर्म्मसु ॥ स्वाभिधान सम कर्मणा धनेकीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ॥ १

टीका

कृत्तिका विशाखा इन नक्षत्रों में अग्नि कार्य मिश्रका वृषोत्सर्गादि ये कार्य सिद्ध हैं ॥ १ ॥

॥ अथ नष्ट वस्तु प्राप्ति प्रश्न माह ॥

तिथि वारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितं ॥ दिक्संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ एकेन भूत

भाद्रपद भरनी ये मध्य लोचना जानिये – पुनर्वसु पूर्वा फाल्गुनी स्वाति मूल श्रवण उत्तराभाद्रपद कृतिका यह नक्षत्र सुलोचना जानिये ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

अंधके पूर्वतो वस्तु मंद के दक्षिणे तथा
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने १

टीका ॥ अंधे नक्षत्र मे वस्तु जाय तो पूर्व की ओर कहना घरसे मंदे नक्षत्र में दक्षिण की तरफ मध्य लोचन नक्षत्र में पश्चिम की तरफ – सुलोचना नक्षत्र में उत्तर की तरफ जानना ॥ १ ॥

दशार्द्राद्या स्त्रिय स्तारा विशाखाद्या न पुंसका
मूला च्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमा द्बुधैः ५ ५ ॥

टीका ॥ आर्द्रा से आद ले जो दश नक्षत्र तिनमें बस्तु स्त्रीने लीनी विशाखा से तीन नक्षत्र में जो वस्तु जाय पुरुष स्त्री दो जानना मूल में से १४ नक्षत्र में जो चीज जाय तो पुरुष जानिये ॥

अंधके लभते शीघ्रं मंद वोत्द दिनत्रयम्
मध्यके च चतुष्षष्टी न प्राप्नोति सुलोचने

टीका ॥ अंधे में वस्तु जाय तो शीघ्र मिले मंदे नक्षत्र में जाय तो तीन दिन तक खबर पावे मध्य लोचन में चौसठ दिन तक मिले सुलोचना में जाय तो नहीं मिले ॥ १

नक्षत्र संख्या

वह्नि त्रि ऋत्विषु गुणेन्दु कृताग्निभूत
बाणाश्विनेत्र शर भू कु युगाब्धि रामाः
रुद्राब्धि राम गुण वेद शत द्वि युग्म दंता
बुधैर्निगदिताः क्रम शोभतारा: ॥ १ ॥

टीका ॥ अश्विनी के तीन तारा ३ भरणी के ३ कृतिका के ६ रोहिणी के ५ मृगशिर ३ आर्द्रा के १ पुनर्वसु के ४ पुष्य के तीन ३ श्लेषा के ५ मघा के ५ पूर्वाफाल्गुणी के २ उत्तराफाल्गुनी के २ हस्त के पांच ५ चित्रा का १ स्वाति का एक १ विशाखा के चार ४

शय्याकार मचान — उत्तराभाद्रपद यमलाकार — रेवती मर्दलाकार गोल यह नक्षत्रों के रूप कहे ॥

संख्या	नक्षत्र	शुभ अशुभ	स्वामी	मुख संज्ञा	रूप संज्ञा नाम	नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूप की आकृति	संख्या
१	अश्वि·	शुभ	अ·कु·	ति·मु·	लघु	क्षिप्र	मंदलो·	अश्वमु·	३
२	भरणी	नाश·	यम	अ·मु·	उग्र	क्रूर	मध्य·लो	यो·मु·	३
३	कृति·	ऽशुभ	अग्नि	ऽधोमु	मिश्र	साधार	सुलोच·	छुरका	६
४	रोहि·	सिद्धा	ब्रह्मा	ऊ·मु·	ध्रुव	स्थिर	अंध	शंकट	५
५	मृग·	शुभ	चंद्र	ति·मु·	मृदु	मैत्र	मंदलो·	हिरन	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊ·मु·	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	नाणि स·	१
७	पुन·	मध्य	दि·मात	ति·मु·	चर	चल	सुलोच	गृहसम	४
८	पुष्य·	शुभ	गुरु	ऊ·मु·	लघु	क्षिप्र	अ·लो·	शरसम	३
९	श्लेषा	शोक	सर्प	अ·मु·	तीक्ष्ण	दारुण	मं·लो·	चक्रसम	५
१०	मघा	नाश	पितर	अ·मु·	उग्र	क्रूर	मं·लो·	शाला	५
११	पूर्वा	मृत्यु	भग	अ·मु·	उग्र	क्रूर	सुलोच	शय्या	२
१२	उत्त·फा	विद्या	अयमा	ऊ·मु·	ध्रुव	स्थिर	अं·लो·	पर्यंक	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि·	ति·मु	लघु	क्षिप्र	अं·लो·	दंतसम	५
१४	चित्रा	शुभ	ब्रह्मा	ति·मु·	मृदु	मैत्र	मध्यलो	मोतीसम	१
१५	स्वाति	ऽशुभ	वायु	ति·मु·	चर	चल	सुलोच	विद्रुम	१
१६	विशा·	ऽशुभ	इंद्राग्नी	अधोमु	मिश्र	साधार	अंधा	तोरण	४
१७	अनु·	सर्वसि	मित्र	ति·मु·	मृदु	मैत्र	मंदलो·	वलिनस	४
१८	ज्येष्ठा	क्षय	इंद्र	ति·मु·	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	कुंडल	३
१९	मूल	हानि	राक्षस	अ·मु·	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोच	सिं·पु·स	११
२०	पूर्वा·फा	हानि	उदक	अ·मु·	उग्र	क्रूर	अंधा	शय्या	४
२१	उत्त·फा	वृद्धि	वि·देवा	ऊ·मु·	ध्रुव	स्थिर	मंदलो·	हस्तीदंत	३
२२	ऽभिजि·	सिद्ध	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मध्य	कोणस·	०

टीका ॥ अश्विनी रेवती धनिष्टा हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा–रवि भौम गुरु शुक्र सोम इन वार नक्षत्रों में सोना मोती मूंगा मणि हाती दांत शंख ये पहरना और लाल वस्त्र पहरना शुभ है ॥ १ ॥

मद्यारंभ करण

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरहूते याम्ये सार्प्ये नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये ॥ पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारंभः कालविद्भिः पुराणैः ॥ १ ॥

टीका ॥ आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्टा भरणी श्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें मद्य काढना शुभ है ॥ १ ॥

औषधिग्रहण नक्षत्र

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ॥ मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥ २ ॥

टीका ॥ रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाति श्रवण धनिष्टा शतभिषा अनुराधा मूल मृगशिर इन नक्षत्रों में औषध कर्म करना शुभ है ॥ २ ॥

पुंसवन नक्षत्र

श्रवणः सकरः पुनर्वसु निर्ऋतेर्भं च सपुष्यकोमृगः ॥ रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ॥ १ ॥

टीका ॥ श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर रवि भौम गुरु ये वार नक्षत्र पुंसवन कर्म में शुभ हैं ॥ १ ॥

॥ कर्णवेधः ॥

पौष्ण[illegible]श्विनि चित्रापुष्य वासवपुनर्वसुमैत्राः ॥ सेन्दवे श्रवणे वेधविधानं ह्युशंति मनुयो हि शिशुनाम्

॥ समश्रु कर्मसु वर्ज्यो ॥

भद्रा पक्षांत रिक्ताव्रत दिनवसुभू श्राद्ध षष्ठीपुरा
त्रौ संध्याव्यातारभास्वत प्रानिपु घटधनुः कर्क
कन्यागतेर्के ॥ जन्मर्क्षे जन्म मासे सुर दिन यज
नेभूषितोग्राम यायीभुक्तोभ्यक्तोपिभिक्त:सम
दिनरजिग: पूमश्रु कार्यं न कुर्य्यात ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ भद्रा में पूनों मावस में चौथ नौमी चादश रिक्ता में व्रत के दिन में अष्टमी पड़वा में श्राद्ध के दिन में षष्ठी में रात्रि में संध्या समय मे व्यतीपात में दुष्ट योग में रवि मंगल सेनि इन वारन में कर्क कन्या धन कुंभ इनके सूर्य में जन्म नक्षत्र में जन्म मास में देवता के दिन में हवन कर्म में अलंकार धारण में यात्रा करने के समय में भोजन करे पर उबटना लगाये पर अभिषेक के पीछे मंगल कार्य में स्त्री रजस्वला के सम दिन में क्षौर कराना नहीं चाहिये ॥ १ ॥

श्लोक:

आज्ञया नरपते द्विजन्मनां दाह कर्म मृत
सूतकेषु च ॥ बंधमोक्षमखदीक्षणेषु
च क्षौर मिष्टमखिलेषु तुष्टिदम ॥ १ ॥

टीका ॥ ब्राह्मण राजा इनकी आज्ञा से क्षौर शुभ है दाह कर्म में सूतक के अंत में बंदी खाने से छूटने के समय यज्ञ में दीक्षा में क्षौर कराना श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

तारा शुद्धं क्षौर रवि गुरु शुद्धा व्रत दीक्षा
शुक्र विशुद्धि यात्रायां सर्वे शुद्धिं शशांकेन

टीका ॥ तारा शुद्ध होय तो क्षौर शुभ है सूर्य बृहस्पति शुभ होय तो व्रत दीक्षा शुभ है शुक्र शुक्र शुभ होय तो सर्व शुभ यात्रा करना शुभ जानिये चंद्रमा शुभ होय तो सर्व शुभ कहना चाहिये ॥ १ ॥

॥ दंत बंधनं ॥

श्लोक:

विद्यारंभे सुरगुरु सितज्ञेष्ववभीष्टार्थदायी कर्त्त
श्चषुश्चिरसपिकरोत्यंशुभान्मध्यमोत्र ॥ नीरा
हांशुभवति जडता पंचता भूमि पुत्रे छायासूना
वपिच्चमुनय: कीर्त्तयंत्येवमाद्या: ॥ १ ॥ ६ ॥

टीका ॥ विद्यारंभ करने में बुध बृहस्पति शुक्र ये शुभ हैं आयु के देनेवाले हैं ॥ और सूर्य को मध्यम है। सोमवार को विद्यारंभ करे तोजड़ रहे। और मंगल शनिश्चर को विद्यारंभ करे तो मृत्यु के तुल्य कष्ट पावे ॥ १ ॥ ॥ गान विद्या सीखना ॥

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं
वारुणं चोत्तराच ॥ पूर्वा चार्यै: कीर्तिताश्चं
द्रवर्गैर्नृत्यारंभे शोभनो अरक्षवर्ग: ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य धनिष्टा अनुराधा ज्येष्टा रेवती शतभिषा तीनों उत्तरा और चंद्रमा शुभ होय तो इनमें गाना सीखना अवश्य करके शुभ है ॥ १ ॥

॥ सर्पदंष्ट्र विचार: ॥

य: कृत्तिकामूलमघा विशाखामाप्पौतुकार्द्रा सुभजंगदष्ट:
सवैनतेयेन सुरक्षितोपि प्राप्नोति मृत्यो वेदनं मनुष्य: ॥ १

टीका ॥ कृतिका मूल मघा विशाखा अश्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रों में जो सर्प काटे तो गरुड़ भी रक्षा करे तो न जीवे ॥ १ ॥

॥ रोगोत्पन्न शुभाशुभ ॥

स्वाति श्लेषा रौद्र पूर्वात्रयेषु ज्येष्ठार्के भौमेसू
र्य्यजे सूर्यवारे ॥ नन्दा रिक्तास्ववरोगस्य
वाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेय: पुंकरो रक्षितापि ॥ ३ ॥

॥ टीका ॥

स्वाति श्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्टा भौम शनि रविवार नंदा तिथि १ । ६ । ११ रिक्ता ४ । ९ । १४ इनमें तो रोग

को स्नान करावना शुभ है ॥ १ ॥

लग्नेचरेसूर्यकुजेज्यवारेरिक्तातिथौ
चंद्रबलेचहीने ॥ केन्द्रत्रिकोणार्थगतेच
पापेस्नानंहितंरोगविमुक्तकानाम ॥ १ ॥

टीका ॥ चर लग्न में मेष कर्क तुल मकर रवि भौम गुरु ये वार हों हीन बल चंद्रमा हो केंद्र में १।४।७।१० त्रिकोण मे ९।५ अर्थ २ दूसरे इन में पापग्रह होये तो रोगी को स्नान करावना शुभ है ॥ १ ॥

लता औषधी वृक्ष लगाना

सावित्रतिष्याश्विनिवारुणानिमूलंवि
शाखाचमृदुध्रुवाणि ॥ लतौषधीपादपरो
पणेषुशुभानिभानिप्रतिपादितानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य अश्विनी शतभिषा मूल विशाखा और मृदु ध्रुव संज्ञक इन नक्षत्रों में लता औषधी पादप लगानी शुभ है

हल चलाने के न॰

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुमूलेमघाविशाखा
सहितेषुभेषु ॥ हलप्रवाहंप्रथमंविद
ध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेये ॥ १ ॥

टीका ॥ मृदु॰ ध्रुव॰ क्षिप्र॰ चर संज्ञक नक्षत्रों में और मघा विशाखा मूल इन सहित नक्षत्रों बलवान् बैलन करके प्रथम हल चलावना शुभ कहा है ॥ १ ॥

बीज बोवना

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधा
मृगरेवतीषु ॥ स्वातौधनिष्टासुमघासुमू
लेबीजोप्तिरुत्कष्टफलप्रतिष्ठाः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तरा रोहिणी चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती स्वाति धनिष्टा मघा मूल इन नक्षत्रों में बीज बोवना शुभ है

यह वर्जित है ॥ १ ॥

पूर्वाक्त वासव करेषु विशाखा पुष्य वारुण
पुनर्वसु भेषु ॥ आश्वि पूषभ युतेषु विधेयो
विक्रयक्रय विधिः सुरभीणाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रों में गाय बेचना खरीदना शुभ है ॥ १ ॥

राज्याभिषेक

मैत्र शाक्र कर पुष्य रोहिणी वैष्णवेषु तिस्त्रषूत्तरासु च ॥ रेवती मृगशिराश्विनी षुन्चक्ष्माभृतां समभिषेक इष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इनमें राजा को गद्दी पर बैठाना अभिषेक करना शुभ है ॥ १ ॥

राजा का दर्शन

सौम्याश्वि तिष्य श्रवण श्रविष्टा हस्त ध्रुव त्वाष्ट्र च पूषभानि ॥ मित्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भानि शुभ प्रदानि ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव गण चित्रा रेवती अनुराधा इनमें राजा का दर्शन करना शुभ है ॥ १ ॥

दूज के चंद्रमा का फल

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेन्द्रान्याहुर्जघन्यानि तथा वहंति ॥ ध्रुव द्विदैवादिति भानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनीन्द्रैः ॥ १ ॥ बहुत्सुधान्यं कुरुते समर्घ जघन्य धिष्ण्ये भ्युदितो महर्घः ॥ समेषु धिष्ण्येषु समं हि मास्युर्वदन्ति सन्दिग्ध भिदम्महान्तः ॥ २ ॥ ५ ॥

टीका ॥ श्लेषा भरणी स्वाति शतभिषा ज्येष्ठा यह

टीका ॥ मंगल के दिन धन ऋण करके न ले बुध को न दे धन काऊ को संक्रांति को रविवार को भराणी में ऋण न करे कभी ॥ १

चूल्हा पूजन नं०

हस्त पुष्योनुराधा च वायु विष्णुरवेर्दिनम्
रिक्ता षष्ठ्याष्टमी त्याज्या चूल्ही पूजन मिष्यते

टीका ॥ हस्त पुष्य अनुराधा स्वांति श्रवण रविवार इनमें चूल्हा को पूजे रिक्ता छठ अष्टमी इनको छोड़ के शुभ है ॥ १ ॥

मार्जनी अर्थात् बुहारी का

अश्विनी मृग पुष्येषु अनुराधोत्तरात्रये ॥
मार्जनी बंधनं कुर्या च्छुभ वारे शुभे तिथौ १

टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य अनुराधा तीनों उत्तरा शुभ वार शुभ तिथि में बुहारी का बाँधना शुभ है ॥ १ ॥

काष्ठ स्थापन मु०

सूर्यक्षांदृष्टभैरधस्थलगतैः पाकोरसैः
संयुतः शीर्षेयुग्म सितैः सवस्य दहनंमध्ये
युगैः सर्पभीः ॥ प्रागाद्या दिषुवेदभैःस्वसु
हृदां स्यात्संगमो रोगभीः छायादेः करणं
सुखं नेगदितं काष्ठादि संस्थापने ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

सूर्य के नक्षत्र से लेके छः नक्षत्र अधस्थल के जानिये इन में रस सहित पाक होय ॥ चार नक्षत्र सिर के हैं तिनमें जो काष्ठ संग्रह करे तो मुर्दे के जलाने में जाय है ॥ और बीच के चार नक्षत्र में जो काष्ठ स्थापन करे तो सुहृदों का संग होय और दक्षिण के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो रोग और भय होय ॥ पश्चिम के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो छायादिक उ० ॥ उत्तर के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो सुख में व्यंजन में लगै ॥ १ ॥

नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र ताईं गिने दोनों की संख्या को जोड़ देना सत्ताईस का भाग देना बाकी रहै सो योग जानना ॥ १ ॥

योगों के नाम

विष्कुंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा । अतिगंड सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च । गंडो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा । वज्रसिद्धिव्यतीपातो वर्यानः परिघः शिवः । सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः क्रमात् । सप्तविंशति योगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥ १ ॥

टीका ॥ विष्कुंभ १ प्रीति २ आयुष्मान ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वर्यान १८ परिघ १९ शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये जो सत्ताईस योग हैं सो नाम के समान फल को करें हैं ॥ १ ॥

योगों में घटिका वर्जनीया

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ॥ सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नव पंच शूले ॥ गंडे तिगंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ विरुद्ध संज्ञक योगों का आदि का चतुर्थांश शुभ कार्य में वर्जित है और व्यतीपात वैधृति ये संपूर्ण वर्जित हैं और परिघ का पूर्वार्द्ध वर्जित है और विष्कुंभ की ३ घड़ी वज्र की ३ घड़ी व्याघात की ९ गंड की ६ अतिगंड की ६ शूल की ५ ये शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥ २ ॥

करण जानने की रीति

गततिथयो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः

न सिद्धि ॥ कृतं च विष्ट्यां विषारिघाता दिषु नच सिद्धिः ॥ मंत्रौषधानि शकुने तु सपौ ष्टिकानि ॥ गोविप्र राज्य पितृ कर्म चतुष्पदे ति सौभाग्य दारुण धृति ध्रुव कर्म नागे किंस्तु- घ्न नाम्नि निखिलं शुभ कर्म कार्यम् ॥ ३॥

टी०॥ बव करण में पौष्टिक शुभ कर्म करे-बालव में ब्राह्मनो हित कर्म दानादिक करे-कौलव में उन्माद पूर्वक मित्र कर्म करे- तैत ल में विवाहादि शुभ मंगल्य कर्म करे-गर करण में वीज बोउ नाहल चलाना ये कर्म करे-वनिज में देव प्रतिष्ठा दुकान के व्यापार के कर्म करे। विष्ठि में शुभ कर्म न करना जादू घात क्रूर कर्म करना सि द्ध है-शकुन में मंत्र औषधी ग्रह पूजादिक कर्म करना - चतुष्प द में गो ब्राह्मण पितृ संबंधी कर्म करे-नाग में सौभाग्य कर्म युद्ध में जाना धीरता विद्याभ्यास ये कर्म करना ॥ ३॥

भद्रा विचार तिथि मान

कृष्णे ग्निदिशयो रूर्ध्वं सप्तमी भूतयोरधः॥ शुक्ले वेदेशयो रूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसु पूर्णयोः२

टी०॥ कृष्ण पक्ष में तीज और दशमी को उत्तर दल की भद्रा जानिये॥ और सप्तमी चौदश को पूर्व दल की भद्रा जानिये-शुक्ल पक्ष में १४ ।११ को परदल की भद्रा जानिये-और शुक्ल पक्ष में अष्टमी पूनों को पूर्व दल की भद्रा जानिये॥२॥

मनु वसु मुनि तिथिषु युग दश शिव गुण संख्या सु तिथिषु पूर्वान्त्या॥ आयाति विष्टि रेषा पृष्ठे शुभदा पुरस्त्व शुभाः॥२॥ ६॥

टी०॥ चौदश अष्टमी सप्तमी पूनो चौथ दशमी एकादशी तीज इन तिथों में भद्रा पूर्व दल पर दल की जानिये-भद्रा की पूंछ शुभ है और मुख भद्रा का अशुभ है॥२॥

शास्त्रार्थ

पिविष्ठिः कन्यायां तौलि संस्थे धनुर्मिथुनगा
ते नागलोके निवासः॥ कुंभे सिंहे वृषे वा मक
र भुजगते राजते मृत्युलोके भद्रा चंद्रप्रभावाद्दि
म कर्तनया नो सुभा लोकिके स्यात् ॥२॥

टी०॥ मेष मकर वृष कर्क इन के चंद्रमा में स्वर्ग में भद्रा का वासा॰ कन्या मिथुन तुला धन इन में पाताल में वासा - कुंभ मीन सिंह वृश्चिक इन में मृत्यु लोक में वासा भद्रा का जानिये ॥२॥

स्थान भद्रा फलं

स्वर्गे भद्रा भवेत्सौख्यं पाताले च धनागमः॥
मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदा नहि १

टीका॥ स्वर्ग की भद्रा में कार्य सुभ है - पाताल की भद्रा में धन का आगमन होय है - मृत्यु लोक की भद्रा कार्य का नाश करे है ॥१॥

वारानुसार भद्रा का नाम

सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैव तु वृश्चिकी
गुरौ पुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषु भद्रका॥ १

टी०॥ सोम शुक्र को भद्रा कल्याणी नाम कहते हैं शनिवार को वृश्चिक नाम कहावे - बृहस्पति वार को पुण्यवती जानिये - रवि बुध मंगल वार की भद्रा नाम कहिये ॥१॥

दैत्येन्द्रैः समरे भरेषु विजिते श्रीशः क्षुधाद्द
ष्टवान् स्वं कायात्किल निर्गता खरमुखी लांगूलिनी चक्रयान्॥ विष्टिः सप्तभुजा मृगेन्द्र
गलका क्षामोदरी प्रेतगा दैत्यघ्नी मुदितैः सु
रैस्तु करणप्रान्ते नियुक्ता तु सा॥ १॥ ८॥

९	१५	४	११	७	१४	३०	१०	विष्टी	यम	सर्व कर्म वर्जित
स्थिर	०	०	०	०	०	०	०	ध्रुव	काल	औषध
स्थिर	०	०	०	१	०	०	३०	नाग	सर्प	युद्ध सौभाग्य

वारानुसार संक्रांति नाम

घोरा रवौ ध्वांक्ष्य मृतद्युतौ च संक्रांति वारे च महोदरी स्यात ॥ मंदाकिनी ज्ञे च गुरौ च नंदा मिश्रा भृगौ राक्षसि चार्क पुत्रे ॥१॥

टी०॥ रविवार को घोरा नाम संक्रांति - सोमवार को ध्वांक्षी नाम - मंगल को महोदरी - बुध को मंदाकिनी - बृहस्पति को नंदा नाम शुक्र को मिश्रा नाम - शनिश्चर को राक्षसी नाम जानिये ॥१॥

नक्षत्रों के अनुसार सं०

उग्र क्षिप्र चरे मैत्र ध्रुव मिश्राख्य दारुणैः ॥ ऋक्षैः संक्रांति रर्कस्य घोराद्याः क्रमशो भवेत्

टी०॥ उग्र संज्ञक नक्षत्रों में घोरा नाम क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में ध्वांक्षी नाम जानिये - चर संज्ञक नक्षत्रों में महोदरी नाम मित्र संज्ञक नक्षत्रों में मंदाकिनी नाम - ध्रुव संज्ञक नक्षत्र में नंदा नाम - मिश्र संज्ञक नक्षत्र में मिश्रा नाम जानिये - दारुण संज्ञक नक्षत्र में राक्षसी नाम जानिये ॥१॥

संक्रांति फलं

ध्वांक्षी वैश्यान सुखयति महोदर्यलं चौर मार्गान घोरा शूद्रान थ नर पती नैव मन्दाकिनी च नंदा ख्याच द्विज वर गणान् मिश्र काख्या पशूंश्च चांडालानां प्रकृति मखिला राक्षसी संज्ञिता च ॥२॥

टीका॥ ध्वांक्षी नाम वैश्यों को सुख देय - महोदरी चोरों को सुख देय - घोरा शूद्रन को सुख देय - मंदाकिनी राजाओं को सुख देय - नंदा ब्राह्मणों को सुख देय - मिश्रा नाम पशु

॥ अथ करणानुसार संक्रांति स्थिति ।

चतुष्पदे तैतिल नाग योरव सुप्तो रविः संक्रमणं करोति ॥ विष्टा हवाख्येच गरा ह्वयेच । सवाल वाख्ये स्थित एव विद्वे ॥ १ ॥ ६१ ॥

टी॰॥ चतुष्पद तैतल नाग इन मैं सुप्त संक्रांति - गरल वणिज विष्टि बव बालव इन मैं निविष्ट जानिये - कौलव किंस्तुघ्न शकुन इन मैं ऊभी संक्रांति जानिये ॥१॥ फलं

किंस्तुघ्न नाम्नि शकुने वणि कौल वाख्येचो र्ध्वंस्थित स्य खलु संक्रमणं रवेस्यात ॥ ५ धान्यार्घ विष्टि षु भवेत् क्रम शस्त्व निष्ठो मध्येष्ठ तेति मुनयः प्रवदन्ति पूर्वे ॥ २ ॥ ६२ ॥

टी॰॥ धान्य महर्घ १५ मुहूर्ती - समर्घ ४५ मुहूर्ती - सम ३० मुहूर्ती - इस रीति से फल जानिये ॥ २ ॥ वाहनं

सिंहो व्याघ्रो वराहश्च गर्दभः कुंजरस्तथा ॥ महिषी घोटक श्वाच छागो वृषभ कुक्कुटो ॥ ३ गजो वाजि र्वृषो मेषः स्वरोष्ट्रो केसरी क्रमात् शार्दूल महिषी व्याघ्र वानराश्च बवादितः ॥ ४ ॥

टी॰॥ बव में सिंह - बालव में व्याघ्र - कौलव में वराह - तैतल में गर्दभ - गरल में हस्ती - वणिज में महिषी - विष्टी में घोडा - शकुन में कुत्ता - चतुष्पद में मेढा - नाग में बैल - किंस्तुघ्न में कुक्कुट ॥ उप वाहनं ॥ बव में गज - बालव में अश्व - कौलव में बैल - तैतल में मेंढा - गरल में गर्दभ - वणिज में ऊंट - विष्टी में सिंह - शकुन में शार्दूल - चतुष्पद में महिष - नाग में व्याघ्र - किंस्तुघ्न में वानर ॥ संक्रांति वाहन फलं ॥ बव बालव में भय होता है - कौलव चतुष्पद में पीड़ा होती है - तैतिल विष्टी में सुभिक्ष होता है - गरल में लक्ष्मी प्राप्ति होय नाम शकुन में स्थिरता - वणिज में क्लेश जानना चाहिये ॥ किंस्तुघ्न में मृत्यु जानना ॥ ४ ॥

चित्रान्नं गुड मध्वाज्यं शर्करा तु ववादितः॥

टी०॥ वव में अन्न· बालव में पायस·कौलव में भक्ष्य पदार्थ·तैतल में पकान्न·गरल में दुग्ध·वणिज में दही·विष्टी में चित्रान्न·शकुन में गुड·चतुष्पद में सहत·नाग में घृत·किंस्तुघ्न में शर्करा॥१॥

संक्रांति के गंध लेपनं

कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं मृत्तिका तथा

गोरोचन मलक्तश्च हरिद्रा च तथांजनम्

सिंदूरम गुरुश्चैव कर्पूरश्च ववादितः॥२

टी०॥ वव में कस्तूरी·बालव में कुंकुम·कौलव में चंदन·तैतिल में माटी·गरल में गोरोचन·वणिज में महावर·विष्टी में हलदी·शकुन में सुरमा·चतुष्पद में सिंदूर· नाग में अगर·किंस्तुघ्न में कपूर॥

ब्राह्मे दित्ये हिदैवे भवति शर कलादुत्तरात्रीणि अस्सं
वाण वेदैः समर्घं स्यान्मृध्यस्थ व्योम रामयोः॥
मूर्तौ पंच दशो याने दुर्भिक्षञ्च प्रजापतने ॥ २॥

टीका॥ आर्द्रा स्वाति भरणी शतभिषा अश्लेषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में जो संक्रांति अर्के तो १५ मुहूर्ती संक्रांति दुर्भिक्ष करने वाली जानिये – पुष्य हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में संक्रांति अर्के तो ३० मुहूर्ती जानिये साधारण फल के देने वाली है – रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इन में संक्रांति अर्के तो ४५ मुहूर्ती जानिये – ये सुभिक्ष कार्य देने वाली होती है ॥ २॥

करण	बव	बाल·	कौल·	तैतल	गरल	वणि·	विष्टी	शकु·	चतु·	नाग	किंस्तु·
स्थित	भिव·	भि·	ऊ·	सु·	नि·	नि·	नि	ऊ·	सु·	सु·	ऊभी
फल	मध्य·	मध्य	मदि	सम	महंगा	महंगा	सम	महंगा	सम	सम	महंगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	घोडा	कुत्ता	मेढा	बैल	मुरगा
उपवा·	हाथी	घोडा	बैल	मेढा	गधा	ऊंट	सिंह	शार्दू·	महि·	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुख	लक्ष्मी	क्लेश	सुभि·	स्थैर्य	पीडा	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	श्याम	चित्र	कम	नग्न	धनवत्
आयु·	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	केतु	पाश	खड्ग	अंकु·	बाण
पात्र	सोना	रूपा	ताम्र	कांसा	लोहा	ठीकरा	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठपात्र
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्का	पय	दही	चित्रा	गुड	मधु	घृत	खांड
लेपन	कस्तू·	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोचन	अलक्त	हल्दी	सुरमा	सिंदूर	अगर	कपूर
वर्ण	देवता	भूत	सर्प	पशु	मृग	बिडाल	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	स्त्रिका	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जया
भूषण	नूपुर	कंकन	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलक	परन	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पर्ण	हरित	[illegible]	सीप	पाटल	नील	कृष्ण	अंजन	वल्क	पांडुर
वय	बाला	कुमा·	[illegible]	युवा	प्रौढा	प्रगल्भ	वृद्धा	वंध्या	प्र·वं·	पुत्रवती	सुवासनी

इति सूचीपत्र ज्योति[illegible] समाप्तः शुभम्



टीका॥ जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्के उस का किसी से वैर होय जिस के जन्म मास में संक्रांति का संभव होय तो क्लेश करना - और जन्म दिन में संक्रांति पडे तो धन का नाश होय ॥१॥

संक्रांति का स्वरूप

षष्ठियोजन विस्तीर्णा संक्रांतिः पुरुषाकृतिः
एक वक्त्रा नव भुजा लंबोष्ठी दीर्घ नासिका १
पृष्ठात्ल्लोकाभ्रमंत्येव गृहीत्वा खर्परं करे।
एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः २

टीका॥ संक्रांति का शरीर ६० योजन का लंबा हे और पुरुष की समान चौडा एक मुख हे और नो भुजा हें ओठ नासिका लंबी हें और खपर हाथ में लिये हे और सब लोकों में फिरे हे॥ १॥२॥

(संक्रांति का चंद्रमा से फल कहें)

मेषालि कर्केच तथैव रक्तं चापेच मीनेच तुलेच पीतं॥ चंद्रे वृषे स्त्री मिथुनेच श्वेतं कृष्णेत नक्रे घटेच सिंहे॥ १॥ रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेतं चैव सुखं शुभं॥ पीते श्री स्तुतया प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः २

टीका॥ मेष वृश्चिक कर्क इन राशिन के चंद्रमा में संक्रांति का प्रवेश होय तो रक्त वर्ण जानिये - रक्त वर्ण दुःख दायक हे॥ और धन मीन तुला के चंद्रमा प्रवेश होय संक्रांति तो पीत वर्ण जानिये - सो पीत वर्ण लक्ष्मी देता हे। और वृष कन्या मिथुन के चंद्रमा में संक्रांति होय तो श्वेत वर्ण जानिये - सो श्वेत वर्ण सुख शुभ देता है॥ और सिंह मकर कुंभ इन के चंद्रमा में संक्रांति होय तो काला वर्ण जानिये - सो काला वर्ण मृत्यु का दाता हे॥ १॥२॥

राशि अनुसार चंद्र फलं

यादृशेन हिमरश्मिमालिना संक्रमो भवति तिग्मरोचिषा॥ तादृशं फलमुदाहुरुत्तमाः साध्वसाध्वपि वशेन शीतगोः॥ १॥ ६॥

उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छठी दशमी राशि पर होय तौ शुभ जानिये दूसरा सातवां नवमां मध्यम है पहला चौथा पांचवां आठवां ग्यारहवां बारहवां ये नष्ट है ॥२॥

दूसरा पक्ष

ग्रासात्तृतीयोष्टम गश्च तुर्यस्तथाधसंस्थः
शुभदःस्वराशेः॥ ग्रासादुवि: पंचनवर्तु म
ध्यमास्ततोधमोकाश्च वुधैश्च प्रोक्ताः॥१

टीका॥ जिस राशि पर सूर्य ग्रहण होय उससे अपनी राशि नक्र गिनैतौ ३।८।४।११ ये उत्तम है और ५।८।६ ये मध्यम है और १२।७।१०।१२ ये अधम है जैसी राशि होय तैसी फल होताहै॥२

ऋतु धर्म प्रकर्ण

तिथिरेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्रंच चतुर्गुणम्
वारःषष्ठ गुणो ज्ञेया मासश्चाष्ट गुणःस्मृतः
वस्त्रं शतगुणं विद्या दर्शनंच ततोधिकम्
आर्तवे प्रथमे चैत्रे वैधव्यंजायते ध्रुवम् ॥

टीका॥ तिथि का एक गुना फल नक्षत्र का ४ चौगुना वार का ६ गुना मास का आठ गुना ८ वस्त्र का सौ १०० गुणा अधिक फल जो ऋतु पहले चैत्र में होयतौ वैधव्य करै अच्छे मे अच्छा फल बुरे में बुरा फल जानिये ॥ २॥

वैशाखे धन वृद्धिस्याज्ज्येष्ठे रोगान्विताभवेत्
आषाढे मृत्वं वत्साच श्रावणे धनसंयुता १
भाद्रे च दुर्भगा नारी आश्विने धन धान्यभाक्
कार्तिके निर्धना नारी मार्गशीर्षे बहु प्रजा । २
पौषेच पुंश्चली नारी माघे पुत्रवती भवेत् ॥
फाल्गुणे पुत्र संपन्ना ज्ञेयं मास फलं वुधैः ३

टीका॥ चैत्र में रजो वती होय तौ विधवा जानिये वैशाख में रजोदर्शन होयतौ धनवती ज्येष्ठ में होय तौ रोगवती आषाढ में मृत्यु होय

में मृतप्रजा मंगल में आत्म घातनी बुध में कन्या संतति होय बृहस्पति में पुत्र प्राप्ति होय शुक्र वार में कन्या शनि में व्यभिचारिणी ॥ २ ॥

नक्षत्रफलं

अश्विन्यां शुभगा नारी भरण्यां विधवा भवेत् ॥ कृत्तिकायां च वंध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ॥ १ ॥ मृगेदारिद्र्यसंयुक्ता चार्द्रायां क्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पुत्र धनेश्वरी ॥ २ ॥ आश्लेषायां भवेद्दुष्टा मघायां चार्थ संयुता ॥ पूर्वायां चार्थयुक्ता स्यादुत्तरायां सतीलघा ॥ ३ ॥ हस्ते पुत्र धनैर्युक्ता चित्रायां मनुचारिणी ॥ स्वात्यां गर्भवती चैव विशाखायां तु निष्ठुरा ॥ ४ ॥ मैत्रे च दुर्भगा नारी ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ॥ मूले पतिव्रता साध्वी पूर्वा सौभाग्य भोगिनी ॥ ५ ॥ उत्तरायां वती श्रीर्वणे भाग्य संपदा ॥ धनिष्ठायां शुभा नारी शते भद्रान्वितावुधैः ॥ ६ ॥ पूर्व चोक्ता कामिनीतु उभे लक्ष्मी युता शुभा ॥ रेवत्यां पति रिक्ता तु स्त्रयं भानां फलं बुधैः ॥ ७ ॥

टीका ॥ अश्विनी में प्रथम ऋतु स्नान होय तो शुभ है भरणी में विधवा कृत्तिका में वंध्या रोहिणी में प्रिय भाषिणी मृगशिर में दरिद्रनी आर्द्रा में क्रोधनी पुनर्वसु में पुत्र वती पुष्य में पुत्र धन श्लेषा में वारू मघा में धन पूर्वा में अर्थ वती उत्तरा में पतिव्रता हस्त में पुत्र वती धन वती चित्रा में मन की इच्छा से चलने वाली स्वाति में अन्य गर्भवती विशाखा में कठोर चित्त और अनुराधा में दुर्भागिनी ज्येष्ठा में विधवा मूल में पतिव्रता पूर्वा में सौभाग्य वती उत्तराषाढ में लक्ष्मीवान् श्रवण में भाग्यवती धनिष्ठा में शुभ शतभिषा में शुभ पूर्वाभाद्र में उत्तम उत्तरा भाद्र में लक्ष्मी रेवती में पतिरहित ७

योगफलं

आद्यतो विधवा नारी विष्कुंभे च रजस्वला ॥ स्नेहप्रीत्यां तु दंपत्योरायुष्मांस्तु धन प्रदः ॥ सौभाग्ये

में पुत्र की प्राप्ति - कौलव में वेश्या - तैतिल में प्रिय भाषिणी - गरल में गुण संपन्न होय - वणिज में पुत्रिणी - वृष्टि में मृत वत्सा - शकुन में कामातुरा - चतुष्पद में सुभगा - नाग में पुत्र वती - किंस्तुघ्न में व्यभिचारिणी ॥ २॥

राशिफलं

व्यभिचारीतु मेषेस्याद्वृषभे सुख भोगिनी ॥ मिथु
ने धन युक्ता कर्के दुःखिता बुधैः ॥ सिंहे पुत्र
वती नारी कन्यायां मानिनी शुभा ॥ तुले विलक्ष
णा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी ॥ धने पतिव्रता ज्ञेया
मासहीना च नक्रके ॥ कुंभे धन वती ज्ञेया मी
ने च चपला बुधैः ॥ १॥

टीका ॥ मेषराशि में ऋतुवती होय तो व्यभिचारिणी - वृष में सुख भोगिनी - मिथुन में धन युक्ता - कर्क में दुखी - सिंह में पुत्रवती - कन्या में अभिमानी - तुला में कुचालनी - वृश्चिक में जारिणी - धन में पतिव्रता मकर में कृशांगी - कुंभ में धनवती - मीन में चपला ॥ १॥

होरा फलं

सूर्येच व्याधि संयुक्ता चंद्रे होरे पति व्रता ॥
कुज होरे तु दौर्भाग्यं बुध होरेतु पुत्रिणी १
जीवे सर्व समृद्धिस्या द्भृगौ सौभाग्य मेवच ॥
शनौ सर्व विनाशाय होरे शास्य फलं बुधैः ॥ २॥

टीका ॥ रवि की होरा में प्रथम रजो दर्शन होय तो रोगणी जानिये - चंद्र की में पतिव्रता मंगल की में दुर्भगा होय - बुध की में पुत्रिणी - गुरु की सिद्धदाई शुक्र की सौभाग्य शनि की सर्व नाशक ॥ २॥

लग्न फलं

मेष लग्ने दरिद्राच वृष मे धन संयुता ॥ कामिनी
मिथुने लग्ने कर्कटे पति नाशिनी ॥ सिंहे पुत्रप्रसू
ताच पति युक्ताच कन्यके ॥ तुले चे वांधता दायी द्वू-

पूर्वरात्रेन वा वंध्या दुर्भगा सर्व संधिषु ॥

टीका ॥ जिस स्त्री को प्रथम रजो दर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये-मध्यान्ह में निर्धना जानिये-तीसरे पहर में सुभगा जानिये-संध्या को होय तो सर्व भोगवती-और दोनों सधि में होय तो वेश्या के तुल्य-आधी रात्र में होय तो विधवा-पहली रात्रि में होय तो वांझ-सर्व संधि में होय तो दुर्भागिनी जानिये ॥१॥

पहिरे हुवे वस्त्रों का फल

सुभगा श्वेत वस्त्राच रोगिणी रक्त वस्त्रका ॥
नीलांबर धरा नारी विधवा दुःखभागिनी का ॥
भोगिनी पीत वस्त्राच भिन्न वस्त्र वरप्रिया ॥
सूक्ष्मास्यात्सूक्ष्म वस्त्रा च दृढ वस्त्रा पति व्रता ॥
दुर्भगा जीर्ण वस्त्रा च सुभगा मध्य वासना ॥
धौत वस्त्रा शुभा नारी मलिनी मलिना भवेत् ॥

टीका ॥ प्रथम रजो दर्शन के समय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तो सुभगा-लाल पहिरे होय तो रोगिनी-नीले वस्त्र पहिरे होय तो विधवा-पीत वस्त्र पहिरे होय तो भोग वती-भिन्न रंग का वस्त्र होय तो पति प्रिया-सूक्ष्म वस्त्र होय तो कृशांगी-मोटा वस्त्र होय तो पति व्रता-जीर्ण वस्त्र होय तो दुर्भागिनी-मध्यम वस्त्र युत होय तो सुभगा-धुले वस्त्र युत होय तो शुभ-मलीन वस्त्र पहने होय तो मलीन जानिये ॥२॥

गर्भाधान मुहूर्त

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुंनक्षत्रे शुभे दिने ॥
मघा मूलाम्बु पक्षांते मुक्त्वा चंद्रे बलेसति १

टीका ॥ प्रथम ऋतु दर्शन के समय पुरुष नक्षत्र और शुभ दिन मघा मूल रेवती अमावास्या पूर्णिमा इन को छोडि कर गर्भाधान करना शुभ है ॥१॥

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडशस्मृताः
तासामाद्यास्तु तस्त्र स्त्र निंदिते कादशीच या १

टी०॥ छठ अष्टमी पूनों मावस चौथ चौदश इन तिथीं को छोड के शेष तिथि शुभ हैं और सोम गुरु शुक्र बुध ये वार निषेक में शुभ हैं

नक्षत्र

विष्णु प्रजेश रवि मित्र समीर पौष्ण मूलो
त्तरा वरुण भानि निषेक कार्ये॥ पूज्यानि
पुष्य वसु शीत कराश्वि चित्रा दित्याश्च म
ध्यम फला विफला स्तुरन्ये ॥१॥

टीका॥ श्रवण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाति रेवती मूल तीनों उत्तरा शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम हैं॥ और पुष्य धनिष्ठा मृगशिर अश्विनी चित्रा पुनर्वसु ये मध्यम जानिये और शेष नक्षत्र अधम जानिये। वैधृति संक्रांति महापात आदि दुष्ट योग आद्यका अंत पूर्व दिवस जन्म नक्षत्र ये वर्जित हैं। और जिस लग्न में विषम स्थानी न वांश में उचित बृहस्पति वा सूर्य चंद्रमा होंय तो पुत्र प्राप्ति होय औ र यही ग्रह सम राशि के होंय तो कन्या की प्राप्ति करे ॥१॥

प्रथम गर्भिणी के पुंसवनादि
संस्कार

मूलादि त्रितये करे श्रवणके भाद्र द्वयार्द्रात्रये
रेवत्यां मृग पंच के दिनकरे भौमे न रिक्ता तिथो
नेत्रे मास्यथ वाग्नि मासि धनुषी स्त्री मीनयोश्च-
स्थिरे लग्ने पुंसवनं तथैव शुभदं सीमंत कर्मोच्यते

टीका॥ मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपद उत्त रा भाद्रपद आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रो- हिणी मृगशिर और रवि भौम ये वार और रिक्ता तिथि ये वर्जनीय हैं गर्भाधान होने पर्यंत दूसरे अथवा तीसरे मास और कन्या धन मी न ये स्थिर लग्न ये पुंसवन कर्म को कहे हैं और इन्हीं लग्नों में सीमंत कर्म करना• अष्टम मास में वार फलम् ॥२॥

मृत्युश्च सौरे स्तनु हानिरिंदोः प्रज्ञामृतिः पुंस

गर्भिणी के धर्म

भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहणावरोहणे॥ नदी प्रतरणं चैव प्राकटारोहणं तथा॥ उग्रौषधं तथा क्षारंमैथुनं भारवाहनं॥ कृते पुंसवने चैव गर्भिणी॥ परिवर्जयेत् १

टीका॥ पुंसवन कर्म करे पीछे गर्भिणी स्त्री को ऊंचे नीचे उतारना चढाना भाग कर चलना नदी तेरना गाडी पर बैठ कर चलना तीक्ष्ण ओषधी तथा क्षार आदि खाना मैथुन करना बोझा उठाना ये कर्म उचित नही हें सो वर्जित हें ॥ १॥

गर्भिणी का प्रश्न

नामाक्षराणि त्रिगुणी कृतानि तुरंग देशेतिथि मिश्रितानि॥ आष्टाभिर्भागं लभनेच्च शेषं समेच्च कन्या विषमे च पुत्रः॥ २॥ ४

टीका॥ गर्भिणी के नाम के अक्षर तिगुने करे तिसमें घोडा वो नाम के अक्षर ओर देश के अक्षर मिलावे ओर वर्त्तमान तिथि मिलावे आठ का भाग दे शेष अंक बचे सम तो कन्या का जन्म ओर विषम अंक बचे तो पुत्र उत्पन्न होय॥ २॥

प्रसूता के स्थान प्रवेश के नक्षत्र

रोहिण्यां दैव पौष्णे च स्वात्ये वारुणयेरपि॥ पुनर्वसौ पुष्य हस्त धनिष्ठा च्युत्तरासु च॥ मैत्रे त्वाष्ट्रे तथाश्विन्यां सूतिकागार वेशनं॥ प्रसूति संभवे काले सद्य एव प्रवेशयेत्॥

टीका॥ रोहिणी मृगशिर रेवती स्वाति शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनो उत्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी यह नक्षत्र प्रसूति का भवन के प्रवेश में कहे हैं प्रसूति संभव के समय में यह नक्षत्र विचार तत्काल प्रवेश करे॥ १॥

प्रसूति समय का प्रश्न

मीने मेषे स्त्रियो द्वे च चतस्रो वृष कुंभयोः॥ ४

तुला कन्यकयोः सप्त चाराणाख्या धनकर्कयोः २

हूतकी । घड़ी यह गंडांत की हैं तिथि गंड भगंड लग्न गंड ये त्रिविध गंडांत जानिये यात्रा विवाह जन्म काल इन में वर्जित हैं ।।२।।

गंडांत शुभाशुभ फल

अश्विनी माघ मूलानां पूर्वार्द्धे बाधते पिता ॥
पूषादि ब्राह्म पश्चार्द्धे जननी बाधते स्त्रियाः ॥१
सर्वेषां गंड जातानां परित्यागो विधीयते ॥
वर्जयेद्दर्शनं यावत् नक्षत्रं षण्मासिकं भवेत् ॥२

टीका ॥ अश्विनी मघा मूल इन के पूर्वार्द्ध में जन्म होय तो पिता को अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन के उत्तरार्द्ध में जन्म होय तो माता को अशुभ और गंडांत में जन्म होय तो बालक को त्याग करना अथवा छः मास तक न देखना ॥१॥

कृष्णचतुर्दशीजन्मफलं

कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलं ॥ चतुर्दशी च षड्भागं कुर्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ द्वितीये पितरं हंति तृतीये मातरं तथा ॥ चतुर्थे मातुलं हंति पंचमे वंशनाशनं ॥ षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम् ॥ २॥

टीका ॥ कृष्ण चतुर्दशी के छः खंड दश दश घडी के होते हैं पहले खंड में जन्म होय तो शुभ है दूसरे खंड में पिता को अशुभ तीसरे खंड में माता को चौथे में मामा को अशुभ पांचवे खंड में वंश नाश छठे में धन हानि करे ॥१॥२॥

अमावास्या के जन्म का फल

सिनीवाल्यां प्रसूता अदासी भार्या पशुस्तथा ॥ गजा अश्व महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥ कुहू प्रसूतिरित्येवं सर्व दोषकरी स्मृता ॥ यस्यां प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धन नाशनं ॥ सर्व गंड समस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत् ॥१

टीका ॥ चतुर्दशी युक्त अमावास्या को दासी अथवा भार्या गाय घोड़ी घोड़ा भैंसा जो इन में प्रसूती होय तो इंद्र की भी संपत्ति

फलेषुलभते राज्यं शिखायामल्पजीवितं ॥

टीका ॥ मूल नक्षत्र को वृक्ष कल्पना करते हैं तिस की ६० घरी इस भांति जानना - पहली ४ घरी मूल की इन मे जन्म होय तो नाश करे दूसरी सात घड़ी स्तंभ की तिस में जन्म होय तो हानि करे - तीसरी १० घड़ी त्वचा की तिस में जन्म होय तो भ्राता को अशुभ है - चोथी ८ घड़ी शाखा की तिस में माता के अशुभ - पांचवीं ९ घडी पत्र की तिस में परिवार नाश करे - छठी ५ घड़ी पुष्प की तिस में राजा का मंत्री - सातवीं ६ घरी फल की तिस में राज्य प्राप्ति करे - आठवीं ११ घरी शिखा की तिस में वालक अल्पायु जानिये ऐसे ६० घरी का विचार जानिये ॥१॥

जन्म समय में मूल किस लोक में सो जानना ।

वृषादि सिंहेषु घटेच मूलेदि विस्थितं युग्मतुलांगनान्त्य ॥
पातालगं मेष धनुः कुलीर नक्रेषु मर्त्यंप्र्व ति संस्मरंति । २।

टीका ॥ वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इन में जन्म होय तो स्वर्ग में मूल जानिये तिस का फल राज्य प्राप्ति करावे - मिथुन तुला कन्या मीन इन में जन्म होय तो पाताल में मूल जानिये तिस का फल धन प्राप्ति करे - मेष धन कर्क मकर इन में जन्म होय तो मृत्युलोक में मूल जानिये तिस का फल कुटुंब नाश करे ॥ २॥

श्लेषा नक्षत्र का नराकार चक्र म

मूर्द्धास्यनेत्रगल कांसयुगंच वाहू हृज्जानुगुह्य पदमि
त्यहि देह भागः ॥ वाणाद्रि नेत्र क्रुनभुक श्रुति नागरुद्र
षएभंद पंच शिरसः क्रमशस्तु नाड्यः ॥ राज्यं पितृक्षयो
मातृ नाशः काम क्रिया रतिः ॥ पितृभक्तो वली स्वघ्नं ।
स्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥ १ ॥ २ ॥ ४ ॥ ४

टीका ॥ श्लेषा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जन्म मस्तक की जिस में राज्य प्राप्ति - दूसरी ७ घड़ी मुख की तिस में पिता को अशुभ - तीसरी २ घड़ी माता को अशुभ - चौथी ३ घडी ग्रीवा की परस्त्री रत - पांचवीं ४ घड़ी कंधों की पितृ भक्त - छठें ८ घरी भुजा की वली कहना - सातवें ११ घड़ी

श्राम ॥ ९ ॥ कर्मस्थान ॥ अतिक्रमभौम ग्राजयः किलकर्मसं
स्था कुर्युनरं वहु क्रूकर्मरतंकुपुत्रं ॥ चंद्रः सुकीर्तिशुभ
त्वा वक्रविनयुक्तं स्यान्वितंबुधगुरु शुभकर्मभाजम् ॥ १०
लाभस्थान ॥ लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तं नाराप
निर्वहु धनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सोम्यो विवेकशुभगंच
धनासुधीज्य भृगुः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥
११ ॥ व्ययस्थान ॥ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं का
णांशशी क्षितिसुतो वहु पापभाजम् ॥ चंद्रांगजोगत धनं
धिषणा कृपाणं शुक्रो वहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् १२
राहु केतु फलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥ इति ग्रहफल ॥

टीका ॥ जन्म काल में जन्म कुंडली पुरुष की में जो ग्रह परे तिनका
फल १२ घरन में क्रमसे इस कोष्टक में पृथक् पृथक् जानना और
राहु केतु का फल शनिश्चर के फल के तुल्य फल जानना ॥

जन्मकालमें मृत्यु कारकग्रह

चंद्रात्प्रथमंच धरणीसुत सप्तमंच राहुर्नवंच शनि
जन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्त पंच भृगुषष्ठ बुध ।
श्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदंति सन्तः ॥ १ ॥

(टीका)

जन्म लग्न में चंद्रमा अष्टममें भौम सप्तम में राहु नवम में शनि ९ लग्न
में गुरु ३ छठें शुक्र चौथे बुध ऐसे ग्रह जिसके पडे होंय तो मृत्यु पावै १

सं० स्था	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श० रा० के
१ तन	देह पीडा	कांति सुखं	रक्त कोप	कांति सुखं	कांति सुख	कांति सुख	अतिदु खदाय
२ धन	अतिदुख धननाश	संपति की वहुप्राप्ति	दुख धन नाशक	नानाप्रका रके दुःख	नाना प्रका संतान प्रा०	नाना प्रका० संतान सुख	अतिदुख धननाश
३ सहज	निरोगी	कीर्ति नाश	कोप शत्रु	समृद्धि	सुबुद्धि	नाना वैभ धारक	स्त्रियोंको प्रिय

टीका

१	प्रभवः	१६	चित्रभानू	३१	हेमलंब	४६	परिधावी
२	विभवः	१७	सुभानु	३२	विलंब	४७	प्रमादी
३	शुक्लः	१८	तारण	३३	विकारी	४८	आनंदः
४	प्रमोदः	१९	पार्थिव	३४	शार्वरी	४९	राक्षसः
५	प्रजापति	२०	व्ययः	३५	प्लव	५०	नलः
६	अंगिरा	२१	सर्वजित्	३६	शुभकृत्	५१	पिंगल
७	श्रीमुख	२२	सर्वधारी	३७	शोभनः	५२	कालयुक्तः
८	भाव	२३	विरोधी	३८	क्रोधी	५३	सिद्धार्थी
९	युवा	२४	विकृति	३९	विश्वावसु	५४	रौद्रः
१०	धाता	२५	खरः	४०	पराभव	५५	दुर्मति
११	ईश्वर	२६	नंदनः	४१	प्लवंग	५६	दुंदुभी
१२	बहुधान्य	२७	विजयः	४२	कीलकः	५७	रुधिरोद्गारी
१३	प्रमाथी	२८	जयः	४३	सौम्यः	५८	रक्ताक्षी
१४	विक्रम	२९	मन्मथ	४४	साधारण	५९	क्रोधनः
१५	वृषः	३०	दुर्मुख	४५	विरोधकृत	६०	क्षयः

संवत्सरफलं

प्रभवादिद्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनंचकारयेत ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषंज्ञेयशुभाशुभम ॥ १ ॥ एकचत्वारिदुर्भिक्षंपंचद्वाभ्यांसुभिक्षकं । त्रिषष्ठेतुसमंज्ञेयं न्यूनं पीडानसंशय ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रभवादि सवत्सरों में वर्त्तमानजो संवत तिसेदूना करे और तीन उसमें से घटायदे और सात का भाग दे शेष रहे तो शुभाशुभजनना १।४ बचें तो महँगा कहना २।५ बचें तो सस्ता कहना ३।६ बचें समजानना और शून्य बचे तो पीडा जानना ॥ २ ॥

संवत्सरों के स्वामी

युगंभवेद्वत्सरपञ्चकेनयुगानिच द्वादश वर्षषष्ठ्या ॥

दशमो गारको यस्य सज्ञेय :कुलदीपक:१

टी०॥लग्न में बुध शुक्र हों केंद्र में१।४।७।१०वृहस्पति हो मंगल दश में होंय तो उस वालक को पराक्रमी और कुलदीपक जानियें॥२॥

नव शुक्रो बुधोनेव नास्तिकेन्द्रे वृहस्पतिः

दशमोङ्गारकोनेव सजातः किं करिष्यति

टी०॥ जिस वालक को लग्न में बुध शुक्र न होंय केन्द्र में वृहस्पति न हो दश में मंगल न हों तो उस वालक का जन्म वृथा है

जातिभ्रंश कारक योग

धनस्थाने यदा सोरिः सैंहिके याधरात्मजः

शुक्रे गुरुः सप्तमे चत्वष्टमे रविचंद्रको ।व्रस्त

पचे वापि वेश्या सुच सदारतिः।प्राप्ति विंशति

मेव र्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा २

टी० जिसके धन २ स्थान में शनि राहू मंगल अरु सप्तम स्थान में गुरु शुक्र अष्टम स्थान में सूर्य चंद्रमा ऐसे ग्रह होंतो वालक को जातिभ्रंश कहना २०वर्षकी अवस्था जानियें॥

माता पिता के नाशक ग्रह

षष्ठेच द्वादशेपदा पाप ग्रहो भवेत् +

तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितः २॥

टी० जो छठे और वारहे स्थान में पापग्रह होय तो माता को अशुभ जानियें चौथे दश में पापग्रह होय तो पिता को अशुभ जानो॥

मृत्युकारक ग्रह

अर्को राहुः कुजः सोरिर्लग्नतिष्ठति पंचमे

पितरं मातरं हंति भ्रातरं स्वपिश्रूस्त क्रमात्

टी० जो सू॰रा॰मं॰श॰ये लग्न से पंचम स्थान में पडे होंतो क्रम से फल॰सूर्य से पिता राहू से माता भौम से भ्राता शनि से अपने वालक को अशुभं॥

लग्नस्थाने यदा सोरिः षष्ठे भवति चंद्रमा

कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य नजीवति २

टी० जिस वालक के जन्म लग्न में शनि छठे स्थान चंद्रमा सातमे स्थान मंगल होय तो पिता नजीवे॥

बुधेर्ज्ञेय। पूर्णा दृष्टिर्भौमस्यच्चतुरष्टके॥२।

टी० जन्म लग्न से दशमे तीसरे स्थान जोन से ग्रह होंय वे एक पाद दृष्टि से जन्म लग्न को देखते हैं इसी क्रम से ९ वें ५ वें स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टि से देखते हैं और चोथे आठवें स्थान जो ग्रह पडे होंय तो त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं और सातवें स्थान में पूर्णा दृष्टि से चार चरण जानिये- और पालि एकादश वा तीसरे होंय तो पूर्णा दृष्टि लग्न को देखना है और पांचवें ९ वें गुरु पूर्ण दृष्टि से देखना है और चोथे आठवें मंगल पूर्ण दृष्टि से देखना हैं ॥२॥

ग्रहोंका उच्च नीचत्व

रविर्मेषे तुले नीचो वृषे चंद्रस्तु वृश्चिके॥ भौमश्च
नक्रे कर्केच स्त्रियां सौम्ये झषे तथा॥ गुरुः कर्केच
नक्रेच मीन कन्ये सितस्यच॥ मंदस्तुलायां मेषेच
कन्या राहुगृहस्यच। राहुर्युग्मे तु चापेच तमो व्यस्ते तु
फलम्। प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वंच क्रमादु बुधैः॥

ग्रह	सू	चं	मं	बु	वृ	भृ	श	रा	के	रा	स्व	के	स्व
उच्च	मेष	वृष	मकर	कंन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथु	धन	कंन्या	मि·	मीन	धन
नीच	तुला	वृश्चि	कर्क	मी·	मी·	कं·	मे·	ध·	मि	०	०	मी·	मिथुन

जन्मलग्न का फल

मेषे दैन्य मुपैति गर्वित वृषो नाना मतिर्मन्मथे
सूरः कर्कच के धनीच वनये कन्याच्च मायान्वितः।
सत्यं चैव तुले त्वलीं मलिनता पापान्वितं वै धनु
र्मूर्खोपि मकरे घटेत्व तुरता मीने त्वधीरा मतिः १

टी० मेष में जन्म होय तो दीन वृष में गर्विता मिथुन में नाना बुद्धि कर्क में सूरता सिंह में स्थिरता कन्या में असत्य वादी तुला में सत्य वादी वृश्चिक में मलीन धन में पापी मकर में मूर्ख कुंभ में चतुर मीन मीन में धीर वीर १॥

स्त्रीजातक

तनुस्थान। मूर्तौ करोति विधवां दिन कृत्कुजश्च राहु

रगुरुर्मृगुजः सुपुत्रीं राहुः करोति सुभगां सुखनीं वुधश्च ११ अंते पु
नव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां वंध्यां कुजः पररतां कुटिलांच राहुः ॥ स्वर्गी
सितेन्य शशिजा वहु पुत्र पौत्रा युक्तां विधुःप्रकुरुते व्ययगो दिनांधाम् १२

स्थान	रवि	चंद्र	मंगल	वुध	वृहस्प·	शुक्र	शनि	राहु केतु
१ तनु	विधवा	आयुना·	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रनी	पुत्र नाश
२ धन	दुःखी	वहु पुत्र	रति·दुख	सौभाग्य	संपति	सौ·संप·	दरिद्रनी	सरि·दुखी
३ सहज	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	लक्ष्मी	लक्ष्मीवान
४ सुख	दरिद्रनी	दुर्भगा	अल्पसं·	सुखी	अतिदुखी	अतिदुखी	दुधक्ष·	पुत्रनाश
५ सुत	पुत्रनाश	कंन्यासं	पुत्रनाश	वहुप्राप्ति	वहुफला	पुत्रकन्य	रोगिनी	मरण प्राप्त
६ रिपु	धन	विधवा	धनवती	कलहा	धन	दरिद्रनी	धनवती	धनवती
७ जाया	रोगिनी	प्रवासि·	विधवा	नाशक·	भयवंधन	मृत्युदा	विधवा	वित्तनाश
८ मृत्यु	विधवा	मरण	धनवती	स्वजन	वियोग	मरणवि	संतान	मरण विधु·
९ धर्म	धर्म	पुत्रवती	धर्मकार्य	उत्तमभो·	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१० कर्म	पापमति	व्यभिचा·	चंडाली	धनवती	धनवती	वरश्रेष्ठ	पापमति	विधवा
११ लाभ	अतिपुत्र	लक्ष्मी	पुत्रवती	सुखी	आयुवती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२ व्यय	खर्चनी	दिनांध	व्यभिचा·	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चनी	व्यभिचारनी

(अथोत्तरी महादशा)

आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा तुर वेदशा ।मघापूर्वोत्तरा
चैव चंद्रस्य च दशा लया। हस्ते विशाखा चित्राच स्वाती
भौमदशा स्मृता: । ज्येष्ठानुराधा मूलेच सौम्यस्यच दशा
वुधैः॥ अभिजिच्छ्रवणः पूर्वा उषाचैव शनेर्दशाः । धनि
ष्ठा शततारा च पूर्वाभाद्रपदा गुरोः। उभा पूषा अश्विनी का
लराहो श्चैव दशा स्मृता:। कृत्तिका रोहिणी चोक्ता मृगः
शुक्र दशा वुधैः। एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेया सूर्यादिका
दशाः। क्रूरजा अशुभा प्रोक्ता शुभस्या त्सौम्य खेटजा। संख्या
का क्रम महादशा॥ श्लोकः। सूर्यस्य षट् वर्षाणि इंदोः पंच
दशैवच १५ भौमस्य वसु वर्षाणि ८ त्र्यष्टौ चंद्र १७ वुध

चंद्रमा की दशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफाल्गुनी – उत्तराफाल्गुनी							
चंद्रमा	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य
२ १ ०	१ १ १०	२ ४ २०	१ ४ २०	२ ७ २०	१ ८ ०	२ ११ ०	० १० ०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

मंगल की दशा के वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाति विशाखा ये नक्षत्र							
मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
० ७ ३ २०	१ ३ ३ २०	० ८ २६ ४०	१ ४ २६ ४०	० १० २० ०	१ ६ २० ०	० ५ १० ०	१ १ १० ०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

बुध की दशा के वर्ष २७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल ये नक्षत्र							
बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
१ ८ ३ २०	१ ६ २६ ४०	३ ११ २६ ४०	१ १० २० ०	३ ३ २० ०	० ११ १० ०	२ ४ १० ०	१ ३ ३ २०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

शनि की दशा के वर्ष १० – पूर्वाषाढ उत्तराषाढ अभिजित् श्रवण ये नक्षत्र							
शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
० १० ३ २०	१ ४ ३ २०	१ १ १० ०	२ ११ १० ०	० ६ २० ०	१ ४ २० ०	० ८ २६ ५०	१ ६ २६ ४०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

केस्तदूनादशा सा भवत्त भोग्य संज्ञा ॥

टीका ॥ जिस नक्षत्र में जन्म होय उसे पूर्व के नक्षत्र की घड़ियों को साठ से घटावे शेष रहे जिस में जन्म नक्षत्र की घड़ी जोड़े तो सब नक्षत्र होय और उस में इष्ट जोड़े तो गत नक्षत्र होय गत नक्षत्र को दशा के वर्ष से गुणा करे सब नक्षत्र का भाग देय तो वर्षादिक आवें उन को दशा पति के वर्ष में घटाय दे शेष रहे सो भोग्य दशा जानिये इसी रीति सो सब ग्रहों की दशा जानना चाहिये ॥२॥

कृत्तिकादि क्रमेशोक्त्र्मेयानि शोत्तरी दशा अंतर्दशा यता वर्ष मास वासरवर्तिनी ॥ ३

टीका ॥ कृत्तिका नक्षत्र से लेके भरणी पर्यंत २७ नक्षत्र दशा के पतिओं को क्रम से इस को चक्र में जानना चाहिये ॥ ३॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ उ उ	रो ह श्र	मृ चि ध	आ स्वा श	पु वि पू	पु अनु उ	श्ले ज्ये रे	म मू अ	पू पू भ

दशा से दशा को गुने १२० का भाग दे तो अंतर्दशा के वर्ष पावे फिर १२ से गुणा करे १२० का भाग दे तो महीने पावें फिर तीस गुणा करे १२० का भाग दे दिन पावे इसी रीति से अंतर्दशा जानना अंतर्दशा० चक्र ॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योगि
०	०	०	०	०	०	०	०	२	६
३	६	४	१०	९	११	१०	५	०	०
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	०

चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योगि
०	०	१	१	१	१	०	१	०	१०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	०

महादशा और अंतर्दशा का फल

देशांतरस्थ जनबंधुवियोगदुःखउद्वेगरोगभय
चौरभवाच्च पीडा॥ पूर्वस्थितस्यनिखिलस्यध
नस्य नाशो भानोर्दशा जननकालदशाभवंति १

टी॰॥ देशांतर वास भ्राता का वियोग दुःख मन का उद्वेग रोग भय चो
र पीडा संचित धनका नाश होय ये रवि दशा का फल जानिये॥१॥

हेमादिभूतवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापवलवृद्धि परंपरं
इष्टान्नदानशयनाशनभोजनानि नूनं सदा शशिदशागमनभंवंति

टीका॥ सुवर्ण आदिक ऐश्वर्य का और अश्वगज पालकी इत्यादि वा
हनों का लाभ होय शत्रु की हार और बल की वृद्धि और नाना प्रकार
के सरस अन्न दान शयन स्थान उत्तम आसन और भोजन यह सब
चंद्रमा की दशा में प्राप्ति होती है॥२॥

भूपालचोरभयवन्हिकृताच्च पीडा सर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता
च चिंताज्वरश्च बहुकष्टदरिद्रयुक्तः स्यात्सदा कुजदशागमने भवंति १

टीका॥ राजा चोर अग्नि से पीडा सर्व अंग रोग सदा दुखी और नाना प्र
कार की चिंता ज्वर कष्ट दरिद्र ये मंगल की दशा में जानिये॥३॥

दीनो नरो भवति बुद्धि विहीन चिंतासर्वांगरोगभयदु
खसुदुःखिताच॥ पापानि बंध बहु कष्ट दरिद्रयुक्तं
राहोर्दशा जननकालदशाभवंति॥ ४॥

टीका॥ मनुष्य बुद्धि हीन और दीन होय चिंता होय सर्व शरीर को रोग
भय रहे और दुःख बंधन कष्ट बहुत दरिद्रता ये राहु की दशा में जानिये

राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तवृत्तिं धर्माधिकारपरि
पालन सिद्धि बुद्धिम्॥ सद्विग्रहोपि धन धान्य समृ
द्धिताच स्याद्धि वनागुरुदशागमने भवंति॥५॥

टीका॥ राज्याधिकार चित्त की वृत्ति में वृद्धि धर्म में नेष्ठा शरीर
की और धन धान्य की वृद्धि यह गुरु की दशा में जानिये॥५॥

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रे च बन्धुव

एक द्वि त्रीणि वेदाश्च पंच षट् सप्त मानि च ॥
अथ वर्षाणि हि भवेन्मंगलादं वनु क्रमात् १

टीका॥ मंगला १ वर्ष की पिंगला २ वर्ष की धान्या ३ वर्ष की ४ वर्ष की भ्रामरी ५ वर्ष की भद्रिका ६ वर्ष की उल्का सिद्धा ७ वर्ष की संकटा ८ वर्ष की ये योगिनी दशा के वर्ष और नाम कहे हैं ॥ १ ॥

अंग	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योगि
मंगला	१०	४०	९०	१६०	२५०	३६०	४८०	६४०	०
पिंगला	२०	६०	१२०	२००	३००	४२०	५६०	८०	०
धान्या	३०	८०	१५०	२४०	३५०	४८०	७०	१६०	०
भ्रामरी	४०	[illegible]	१८०	२४०	४००	६०	१४०	२४०	०
भद्रिका	५०	१२०	२२०	३२०	५०	२५०	२१०	३२०	०
उल्का	६०	२४०	२४०	४०	१००	१८०	२८०	४००	०
सिद्धा	७०	१६०	३०	८०	१५०	२४०	३५०	४६	०
संकटा	८०	२०	६०	१२०	२००	३००	४२०	५६०	०
योगिनी	३६०	७२०	१०७	१४४०	१८००	२१६०	२५२०	२८८०	०

योगिनी दशा का फल

मंगला मंगलानंदयशोद्धि करा दायिनी ॥ पिंग
लानतुते व्याधिमान सो दुःख संभ्रमो ॥ धान्या
धनसुह द्धध रूपसीमंतनी करी ॥ भ्रामरी जन्म भूमि
श्री भ्रामयेत्त वनो दिशम् ॥ भद्रिका सुख संपत्ति विला
स प्रदायिनी ॥ उल्का राज्य धना रोग्य हारिणी दुः
ख कारिणी ॥ सिद्धा साध्यपते कार्य न्नराणां चे सुख्य लभ
वेत् ॥ संकटा संकटे व्याधि मरण क्लेश कारिणी ॥ २

टी०॥ मंगला आनंद यश द्रव्य प्राप्ति की करावने हारी और पिंगला रोग की करन हारी धान्या धन सुत की देन हारी भ्रामरी दिशाओं में भ्रमण कराने हारी भद्रिका सुख संपत्ति विलास की कराने हारी ॥

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितं ॥ नवभिस्तु हरे द्भागं शेषं दिन दशोच्यते ॥ १ ॥ रविणा शोक संतापो चन्द्रा । णां के क्षेम लाभ को ॥ भूमि पुत्रे तु मृत्युः स्याद्बुधे प्रज्ञा विवर्द्धनं ॥ गुरौ वित्त भृगौ लोख्यं शनौ पीडा न संशयः राहुणां घात पातो च केतौ मृत्यु र्दशाफलम् ॥ २ ॥ ३ ॥

टीका ॥ जन्म नक्षत्र को चौगुना करे और गत तिथि वार मिलावे नव का भाग दे १ शेष रहे तो सूर्य की दशा जानिये शोक संताप कारक २ बचे तो चंद्रमा की दशा लाभ कारक और ३ बचे तो मंगल की दशा मृत्यु कारक ४ बचे तो बुध की दशा बुद्धि वृद्धि कारक ५ बचे तो गुरु की दशा धन की प्राप्ति करे ६ बचें तो शुक्र की दशा सुख कारक ७ बचे तो शनि की दशा पीडा कारक है ८ शेष रहे तो राहु की दशा घातक है ९ बचे तो केतु की दशा मृत्यु कारक फल जानना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

(गोचर प्रकरण ग्रह कितने मास एक राशि को भोगें हैं)

मासं शुक्र बुधादित्याः सार्द्ध मासं तु मंगलः ॥ त्रयोदश गुरुश्चैव सपाद द्वे दिने शशी ॥ १ ॥ राहु रष्टादशान्मासान त्रिंशन्मासान शनैश्चरः ॥ राहु वत्केतु रुक्तस्तु राशि भोगाः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥ फलं ॥ सूर्यः पंच दिनं शशी त्रिघटिका भौमो ऽष्टैव वासरं सप्ताहं हि सना बुधस्त्रय दिनं मास द्वयं चैगुरोः षण्मासं रवि जस्तथैव सततं स्वर्भानु मास द्वयं केतोश्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

राशि प्रवेशे सूर्यादौ मध्ये शुक्र बृहस्पतिः ॥
राहुश्चन्द्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदा शुभम् २ ।

टी० ॥ गोचर ग्रहों के दिनों की संख्या का क्रम लिखते हैं — सूर्य १ मास में एक राशि भोगता है उस में पहले पांच दिन फल देता है — चंद्रमा सवा दो दिन एक राशि भोगता है — अंत में तीन घरी फल देता है — मंगल डेढ मास एक राशि भोगता है पहले आठ दिन फल देता है — बुध एक मास एक राशि भोगता है और सब दिन फल देता है — ॥

टीका									
नाम	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तन	नाश	क्षमा	शत्रुभ॰	बंधन	भय	शत्रुभ॰	सर्वना॰	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा	धनना॰	धनप्रा॰	धनप्रा॰	धनप्रा॰	वित्तना॰	धनना॰	बैर
सहज	धन	सुख	धनप्रा॰	भीति	क्लेश	सौख्य	धनना॰	धनना॰	सुख
सुहृत्	मानहा	रोग	भय	धनप्रा॰	धनप्रा॰	धनप्रा॰	शत्रुवृ॰	बैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यना॰	अर्थना॰	रोग	सुख	पुत्रप्रा॰	सुतप्रा॰	शुचि	शुचिप्रा
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानलाभ	शुचि	पुत्रप्रा॰	धनप्रा॰	लक्ष्मी	धनप्रा
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	स्वर्ण	पीडा	लाभ	रिपुभ	दोष	कलह	मार्गक्ले॰
मृत्यु	पीड़ा	मृत्यु	शत्रुभ॰	अर्थप्रा॰	रोग	भय	रिपुभय	धनजा॰	रोगनाश
धर्म	पुन्यना	राजभ॰	पीडा	रोग	सुख	शोक	धनना॰	पापक॰	दुष्क॰
कर्म	लाभ	लाभ	धनप्रा॰	सौख्य	लाभ	महाव॰	धनप्रा॰	सौख्य	शोक
आयु	लाभ	लाभ	धनप्रा॰	सौख्य	लाभ	महाल॰	धनप्रा॰	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	स्वर्ण	हानि	नाश	पीडा	महाव	धनना॰	शुचि	शत्रु

(गोचर के ग्रहों का फल इस चक्र में देखलो)

जन्मर्क्षेच शशांकेतु पंचकर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रां युद्धं विवाहंच क्षौरंच गृहवेशनम् ॥१॥

टीका ॥ जन्म के चंद्रमा में पांच कर्म न करे यात्रा युद्ध विवाह क्षौर
गृहप्रवेश यह पांच कर्म वर्जित हैं ॥१॥

अभिषेके निषेकेच प्रासने व्रतबन्धने ॥
पाणिग्रहे प्रयाणेच चंद्रो द्वादशगः शुभः ॥२

टी॰॥ बारहवें चंद्रमा में यह कर्म करने शुभ हैं राज्याभिषेक गर्भजन्म
संस्कार अन्न प्राशन यज्ञोपवीत विवाह यात्रा ये कर्म करने शुभ हैं

द्विपंचनवमे शुक्ले शेषश्चंद्रो विशिष्यते ॥
अष्टमे द्वादशे ह्येष चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥
शुक्ले पक्षे बली चन्द्रः कृष्णे तारा बलीयसी

टी॰॥ दूसरा पांचमा नोमा चंद्रमा होय तो शुक्ल पक्ष में अच्

चित्रांबरं शुभ्रतरस्तुरंगमं धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णं ॥ स
तंडुलानुत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनंदनाय ॥ ६ ॥ मा
षाश्च तैलं विमलेंद्रनीलं तिलाः कुलत्था महिषी च लो
हं कृष्णा च धेनुः प्रवदंति नूनं दुष्टापदानं रविनंदनाय ७
गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलामलकंबलाश्च ति
लाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ८
वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोः छागस्य दानं कथितं मुनींद्रैः

(ग्रहोंका जप)

रवेः सप्त सहस्राणि चंद्रस्यैकादशैव तु ॥ भौमे दश स
हस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकं ॥ एकोनविंशतिं जीवे शुक्रे
एकादशैव तु ॥ त्रयोविंशति मंदे च राहोरष्टादशैव तु ॥ के
नोः सप्त सहस्राणि जपसंख्या प्रकीर्तिता ॥ ९० ॥ १० ॥

नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	माणिक	वांसकी	मूंगा	नीलावे.	मिश्री	चित्रवस्त्र	उडद	गोमेद	वैडूर्य
	गेहूं	चांवल	गेहूं	मूंग	पीतधा.	चांवल	तिलतेल	तिलतेल	तिलतेल
	सोवत्स	बैलश्वेत	ताम्रबे.	कांसासो.	घोडा	गाय	नीलवस्त्र	का.थाल	कंचुल
दान	रक्तवस्त्र	कपूरश्वे.	गुड सो.	घृत	पीतव.	रूपा सो.	कुलत्थी	लोहा	कस्तूरी
	सोनाताम्र	रूपा	कनेरपु.	गारुत्म	नमक	घोडाश्वे	भैंस	कालापु.	मेंढा
	लालचं.	छत्र	घृत	दासी	पुखराज	चंदन	लोहा	घोडा	मृगमद
	कमल	सकरा	रक्तवस्त्र	हाथी	सोना	पान	गौकृष्णा	कृष्णाव.	छुरी
	गूलरघ	दक्ष चं.	रक्तचंदन	वस्त्रपुष्प	पीतपुष्प	धनुष	नीलम	नीलवस्त्र	सतनजा
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

(ग्रहपीडा निवारणार्थ)

देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसंपादनात्प्रत्यहं साधूना
मपि भाषणाच्छ्रुतिरवःश्रेयःकथाकारणात् ॥ होमा
द्ध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो नो कुर्व-

अयन मध्येशुभाशुभकर्म ॥

गृह प्रवेशादि दृशाप्रतिष्ठा विवाह चौलव्रत वंधदीक्षाः
सौम्यायने कर्म शुभे विधेयद्गर्हितं तत्खल दक्षिणेच ॥१

टीका ॥ गृह प्रवेश विवाह देव प्रतिष्टा मुंडन जनेऊ मंत्र दीक्षाये उत्त रायण सूर्य में शुभ हैं और निंदित कर्म दक्षिणायन में करने शुभ हैं ॥१॥

संक्रांति परत्व ऋतु कथनं

मकरादि राशि द्वयभानुभोगात् षडृत्त वस्युः शिशिरो वसंतः
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरश्च तद्वद्धेमंत नामाः कथितश्च षष्ठः१

टीका ॥ मकर राशि से आदि लेके दो दो राशि सूर्य के भोगते छः ऋतु हो हैं शिशिर १ वसंत २ ग्रीष्म ३ वर्षा ४ शरद ५ हेमंत ६ ये छः ऋतु के नाम जानो ॥ १ ॥ ॥ उदाहरण ॥

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१० मकर ११ कुंभ	शिशिर ऋतु १	४ कर्क ५ सिंह	वर्षा ऋतु ४
१२ मीन १ मेष	वसंत ऋतु २	६ कन्या ७ तुला	शरद ऋतु ५
२ वृष ३ मिथुन	ग्रीष्म ऋतु ३	८ वृश्चिक ९ धन	हेमंत ऋतु ६

मतांतर राशि परत्व ऋतु

मेषादितोद्वि द्विभानुभोगाद्वसंतपूर्वा ऋतुः षडुक्ता ॥१

टीका

मेष राशि से लेके दो दो राशि सूर्य के भोगते छहों ऋतु कहे हैं मतांतर तें सो जानना ॥ १ ॥

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१ मेष २ वृष	वसंत १	५ सिंह ६ कन्या	वर्षा ३	९ धन १० मकर	शिशिर ५
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म २	७ तुला ८ वृश्चिक	शरद ४	११ कुंभ १२ मीन	हेमंत ६

नारा पेपो राशी नु चित्र का ॥ ४ ॥ रूरे रोता स्मती स्वाती ती तूते तो विशाखिका ॥ नानी नूने नुराधा ओं ज्येष्ठा नो यायी यूस्स ता ॥ ये यो भाबी मूल नारा पूर्वाषाढ बुधा फ डा ॥ ५ ॥ भे ओजा ज्युत्तराषाढा जूजे जोखा भिजिदूवेत् ॥ खीखू खेखो श्रवणं गागी गूगे धनिष्ठिका ॥ ६ ॥ गोसासी सू शतभिषक सेसोदा दी पूर्वभाद्रा दूझम थोत्तरा भाद्र दे दो चाचीतु रेवती ॥ ७ ॥

टी० ॥ इसकी टीका को क्रम से समझना नाम की राशि कहते हैं ॥ ७ ॥

अश्विनी भरनी कृत्तिका पादे मेष कृत्तिकानां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोर्द्ध वृष: २ मृगशिरोर्द्ध आर्द्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुन पुनर्वसु पादमेकं पुष्य श्लेषांतं कर्क ४ मघा च पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा पादे सिंह उत्तराणां त्रयः पादा हस्त चित्रार्द्ध कन्या चित्रार्द्ध स्वाति विशाखा पादत्रयं तुल विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांतं वृश्चिक मूलं च पूर्वा षाढ उत्तरा पादे धन उत्तराणां त्रयः पादा श्रवण धनिष्ठार्द्ध मकर धनिष्ठार्द्ध शतभिषा पूर्वा भाद्रपद पादत्रयं कुंभ पूर्वा भाद्र पादमेकं उत्तरा रेवत्यां तं मीन ॥

टी० ॥ सवा दो नक्षत्र की एक राशि होती है इसी प्रमाण से १२ राशि जानना सब नक्षत्रों के क्रम से और इसी रीति से चंद्रमा चलता है ॥

(मंच का रोहण)

मृगाश्विनी तुरंग धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषगनुराधा श्युत्तर स्वाति हस्ता ॥ बुध गुरु भृगु वारे सौम्ये लग्ने भे कस्य निगदितमिह पूर्व मंच का रोहणं तु ॥ १ ॥

टी० ॥ मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा तीनों उत्तरा स्वाति हस्त ये नक्षत्र और बुध गुरु शुक्र ये वार तुला वृश्चिक कुंभ इन लग्नों में बालक का सिर पूर्व दिशा को करे प्रथम मंच का रोहण करावे तो शुभ है ॥ २ ॥

॥ अथ पालने का मुहूर्त ॥

कर्णवेध

रोहिण्युत्तर मूल मैत्र मृगभे विष्णुत्रये केत्रये रेव
त्यां च पुनर्वसुष्यभगे कर्णस्य वेधः शुभः ॥ मीने
स्त्री धनमन्मथेषु च घटे वर्षेच शुभे तिथौ सौम्ये
चेंदु गुरौ रवौ न शयनं त्यक्त्वा च विष्णोर्बुधैः ॥१॥

टी० ॥ रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृग श्रवण धनिष्ठा शत
भिषा हस्त चित्रा ये नक्षत्र और शुभ तिथि और कुंभ वर्ष ये वार बुध
चंद्र गुरु रवि विष्णु शयन को छोड के कर्ण वेध शुभ है ॥२॥

॥ बालक को भूमि में प्रवेश कराने बैठाने का मु० ॥

पंचमे च तथा मासि भूमौ न सुपवे शयेत् ॥ तत्र सर्वे ग्रहाः
शस्ता भौमोप्यत्र विशेषतः ॥ उत्तरा त्रितयं सौम्यं पुष्यर्क्षं
शाक्र दैवतं ॥ प्राजा पत्यं च हस्तश्च शस्त मा श्विन भिवभम् ॥१

टी० ॥ पांचवे मास में रवि भौम गुरु ये वार और शुभ तिथि और तीनों
उत्तरा मृगशिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा इन में
बालक को पृथ्वी वराह की पूजा करके बैठावना शुभ है ॥२॥

अन्नप्राशन

पूर्वार्द्रा भरणी भुजंग वरुणांत्यक्ष्मा कुजार्की तथा ॥ नंदा
पर्व च सप्तमी मपि तथा रिक्तामपि द्वादशीम् ॥ षष्ठे मा
स्यथ बाल भक्ष्य विधिस्त्रीणाम युक्पंचमे गो कन्या
मृगमन्मथे बुध वले पक्षे च योगे शुभे ॥२॥१॥१॥

टी० ॥ तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी श्लेषा और भौम शनि ये वार नंदा पर्व
रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सब को छोड के आठवे महीने में लड़
के को और पांचवें महीने कन्या को वृष मिथुन मकर कन्या इन का ब
ल पाके शुक्ल पक्ष में शुभ योग में बालक को अन्न प्राशन करावे ॥२॥

चौलकर्म

रेवत्यादिक रत्न यादिति मृगज्येष्ठा सु विष्णुत्रये पुष्ये
चोत्तरगे रवौ गुरु कवीन्दुक्षेषु पक्षे सिते ॥ गोस्त्री-

बुध ये वार पंचमी दशमी से तीन दिन दूज तीन इन में मौंजी बंधन शुभ है ॥

वर्ष संख्या

गर्भाष्टमेषु मे वाब्दे पंचमे सप्तमेपिवा ॥

द्विजत्वं प्राप्नुया द्विप्रो वर्षेत्वेकादशे न्रप ॥

टी०॥गर्भ से अथवा जन्म से आठ मे पांच मे सात वें वर्ष में ब्राह्मण को और ग्यारह वें वर्ष क्षत्रियों को यज्ञोपवीत उचित है ॥ मास दिन ॥

विप्रं वसंते क्षत्रियं निदाघे वैश्यं धनान्तेव्रति नं विदध्यात् ॥ माघादि शुक्रा न्तिक पंचमासाः साधारणो वास कलो द्विजानाम् ॥ २ ॥ ६

टीका ॥ब्राह्मणों को बसंत ऋत मे क्षत्रियों को ग्रीष्म ऋतु में वैश्यों को शिशिर ऋतु में यज्ञोपवीत करावे माघ से ज्येष्ठ पर्यंत ५मास में साधारण शुभ है ॥ वर्णाधिपे वलोपेते उपवीत क्रियाहिता।

सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चन्द्रेच वल शालि नी

टी०॥ वर्णों के अधिपति के अनुसार वल देखि के और सवों को गुरु सूर्य चंद्रमा का वल देखि कें मौंजी वंधन करना शुभ है ॥

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादि तिथित्रयं

चतुर्थ का किनी प्रोक्ता अष्टावे गलग्रहा

टी०॥ तेरस से आदि चार तिथि और सप्तमी अष्टमी नवमी चौथ ये आठ गलग्रह जानिये॥ (शूद्रादिकों के संस्कार का मुहूर्त)

मूलार्द्राश्रवणादितिद्वय भे पुष्ये तथा चाश्विभे रेव त्या मृग रोहिणी दिति करे मैत्रे तथा वारुणे ॥ चित्रा स्वाति मघोत्तरा भृगु सुते भौमे तथा चांद्रजे शूद्राणां तुबुधैः शुभं हि कथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥२॥

टी०॥ मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाति मघा उत्तरा ये नक्षत्र - शुक्र भौम बुध शूद्रादिक अन्य जाति के संस्कार में शुभ जानिये ॥२॥ ॥ अस्तोदय ॥

टीका॥ आषाढ आदि लेके ४ मास और पौष चैत्र ये मास और गुरु शुक्र का अस्त और इन दोनों का बाल वृद्धपन और सिंह मकर की वृहस्पति और अधिक मास क्षय मास यह विवाह में वर्जित हैं ॥२॥

(मूलादि जन्म नक्षत्र का दोष)

मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा कुलटांगना।
विशाखजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठनाशका

टीका॥ मूल नक्षत्र में कन्या का जन्म होय तो श्वशुर का नाश करे अश्लेषा में जन्म होय तो व्यभिचारिणी विशाखा में देवर की मृत्यु कारक ज्येष्ठा में जन्म होय तो पति से ज्येष्ठे की मृत्यु दायक होय ॥१॥

जन्मर्क्षे जन्म दिवसे जन्म मासे शुभं त्यजेत्
ज्येष्ठे मासाद्यगर्भस्य शुभ्र वस्त्रं स्त्रिया यथा ॥१
अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ॥
व्यत्ययो वान योस्तत्र ज्येष्ठो मास शुभप्रदः॥२

टीका॥ जन्म के नक्षत्र जन्म के मास में बालकों का विवाहादि शुभ वर्जित है जैसे स्त्रियों को श्वेत वस्त्र धारण करना अशुभ है और कन्या कनिष्ठ होय वर ज्येष्ठ होय अथवा इस से विपरीत होय तो ज्येष्ठ के महीने में विवाह शुभ है ॥ १॥ २॥

वर्ष प्रमाण

जन्मतो गर्भधानाद्वा पंचमाब्दात्परं शुभं
कुमारी वरणं दानं मेखला बंधनं तथा ॥१

टीका॥ जन्म होने से अथवा गर्भ धारण से पांच वर्ष उपरांत कन्या का वर्ण अथवा दान व्रत बंध उत्तम जानिये गुरुचंद्रबलः स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठम् ॥२॥

गुरु चंद्र बलम्

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम्
तयोश्चंद्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण भाषितम्

टीका॥ कन्या को गुरु बल और वर को सूर्य दोनों को चंद्रबल ये गर्ग मुनि ने कहा है सो अति श्रेष्ठ है॥१॥

महिषी च ततो व्याघ्री महिषो व्याघ्र एकभात्॥ मृगो मृ
गस्तथा श्वा च कपिर्नकुलयुग्मकम्॥ ५॥ नकुलो वानरः सिं
हो तुरगो मृगराट् पशुः॥ अश्वो रेवत्यन्त्ययोश्च ये यस्यादि
भयोनयः॥ ६॥ गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च ब
भ्रूरगं वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरुः॥ लो
कानां व्यवहारतोन्यदपि च ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं दंपत्योर्नृ
पभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः॥ ७॥ मेषवृश्चि
कयो भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः॥ कन्यामिथुनयोः सौ
म्यो गुरुस्तु धनमीनयोः॥ ८॥ मकरस्य कुंभस्य शनैश्च
रस्तु भूपः॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कर्कस्याधिपतिः शशी॥

(ग्रहोंका शत्रु मित्र समजानना चाहिये)

शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवेस्तीक्ष्णां
शुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः॥ जीवेंदूष्ण
कराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोरिः सितार्की समौ मित्रे सूर्यसितौ बुध
स्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे॥ सूरेः सौम्यसितावरी रवि
सुतो मध्योपरे त्वन्यथा सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शु

गुण और दोनों की एक तारा—अथवा ये शुभ तारा होय तो तीन ३ गुण और जो दोनों की अशुभ तारा होय तो शून्य गुण जानिये ॥

तारा गुण

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनि के गुण

महावैरेच वैरेच स्वस्वभावे यथाक्रमात
मैत्रे चैवातिमैत्रे चववेंदुद्वित्रिचतुर्गुणाः १

टीका ॥ महावैरका गुण शून्य ० दोनों की शत्रुता का गुण १ स्वभाव के गुण २ दोनों की मित्रता का गुण ३ अति मित्रता के गुण एक गति के गुण ४ व्यवहार से जानिये ॥ (तारा गुण)

योनि	अ॰	ग॰	मैं॰	स॰	श्वा॰	मा॰	मू॰	गो॰	मै॰	व्या॰	मृ॰	बानर	मो॰	सिं॰
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	५	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेढा	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	०	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मजारि	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	०

वा स्त्री दूरत्व होय तो षड़ाष्टक द्विर्द्वादश नव पंचमादि दुष्ट कूटों के गुण ४ जानिये - यानि मैत्री वा स्त्री दूरत्व इनमें से एक हो तो दुष्ट कूट का गुण १ जानिये - और एक नक्षत्र वा एक चरण १ इस प्रकार गुणों का मिलाना १८ गुण अधिक हो तो शुभ गुण कम हो तो अशुभ गु॰ ॥

लग्न:	मे॰	वृ॰	मि॰	कं॰	सिं॰	क॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कु॰	मी॰
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	०	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

वर्ण आदिक का फल

यस्या वर्णाधिका कन्या भर्ता तस्य न जीवति
यदि जीवति भर्त्ता तु ज्येष्ठ पुत्रो विनश्यति ॥ १

टीका ॥ जिस कन्या का वर्ण वर से श्रेष्ठ हो उसका पति वा ज्येष्ठ पुत्र मृत्यु पावे ॥ वैर योनि का फल ॥ जैसे अश्व और भैंस की वैर योनि है इसी प्रकार बधू और वैर की योनि वैर विचारी चाहिये और राज सेवा इत्यादि का भी विचारिये इसमें शुभ की इच्छा नहीं है ॥ १ ॥

गुणों के फल ॥ स्वगणे चोत्तमा प्रीति मध्यमा नरदे वयोः ॥ कलहो देव दैत्यानां मृत्युर्मानव रक्षसाम् १

टीका ॥ दोनों का एक गण होय तो उत्तम प्रीति जानिये मनुष्य देवता में

पडाष्टक में गोदान दो २ नौमें पांचमें चाँदी काँसे का पात्र एक नाडी में गोदान दूसरे बारहें में अन्न सोना वस्त्र ब्राह्मणों को प्रसन्न करना इस से सब दोष दूर होता है ॥ १ ॥

यस्य वर्णास्य योनि ज्ञानं नोक्तं तस्य जातस्य
जात कावलोकन प्रकारो वास्तु प्रकर्णेउक्तः

टीका ॥ जिस वर्ण की योनि का जानना कहा नहीं है तिस के जानक देखने का प्रकार वास्तु प्रकरण में कहा है सो जानना ॥

(विवाहे नक्षत्रं)

मूलं मैत्र कर स्वाती मघा पौष्णा ध्रुवं दुवे:
एतैः निर्दोषभैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः

टीका ॥ मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती तीनों उत्तरा मृगसिर यह निर्दोष होय तो शुभ है ॥ १ ॥

(एक विंशति महा दोषाः)

पंचांग शुद्धि रहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तिताः ॥
उदयास्त शुद्धि रहितो द्वितीयः सूर्य संक्रमः ॥ तृ
तीयः पाप षड्वर्गो भृगुः षष्ठ कुजोऽष्टमः ॥ गंडांत कर्त्त
री रिस्फ षडष्टेंदुश्च संग्रहः ॥ दंपत्योरष्टमं लग्न राशी
विष घटी तथा ॥ दुर्मुहूर्त्तो वार दोष खार्जूरी कस
मांघ्रिभं ॥ ग्रहणोत्पात भं क्रूर विद्धर्क्षं क्रूर संयुतं
कुनवांशो महा पातो वैधृतिश्चैक विंशति ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रथम पंचांग शुद्ध रहित दोष १ उदयास्त शुद्धि रहित २ संक्रांति दिवस ३ पापग्रह का वर्ग ४ लग्न में छटे शुक्र ५ लग्न में आठवें मंगल ६ लग्न में ६ । ८ । १२ चंद्रमा ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९ लग्न में चंद्रमा ५ और पापग्रह १० वर वधू की राशि से अष्टम लग्न वर्जित है ११ विष घटी १२ दुष्ट महूर्त्त १३ या मार्द्दे आदिक १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहों करि विद्ध नक्षत्र १८ पापग्रह युक्त नक्षत्र १९ पापांश २० संक्रांति साम्य २१ ॥

गुरुवार से काल दोष बुधवार से कंटक शुक्रवार से निघंट ये सब यथाक्रम कुलिक के समान वर्जित हैं १ एक दिन का यामार्द्ध ८ कुलिकादि १६ वारानुसार जानिये परंतु उनमें से जिस वार को जो वर्जित है वे कोष्टक में नीचे लिखे हैं ॥

वार	यामार्द्ध	घाटका ४	पद्वति निक	कुलिक	कालवे·	कंटक	निघंट
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

लत्ता दोष

भौमाद्या क्रतिषट्जिनाष्टनखभं हंत्यग्रतो लत्तया ॥
खेटो र्कोर्कमितं शशी मुनिमितं पूर्णो न सत्त च्छुभे ॥ १

टीका ॥ मंगल जिस नक्षत्र पै होय तिस्से तीसरे नक्षत्र में लत्ता दोष और बुध जिस नक्षत्र का होय तिस्से २२वें नक्षत्र में लत्ता दोष- गुरु जिस नक्षत्र पै होय तिस्से छठ नक्षत्र लत्ता दोष -शुक्र जिस नक्षत्र में तिससे २४वें नक्षत्र लत्ता दोष हो- शनि के नक्षत्र से आठवें नक्षत्र में लत्ता दोष -राहु के नक्षत्र से २०वें नक्षत्र में लत्ता दोष-सूर्य के नक्षत्र से १२वें नक्षत्र में लत्ता दोष चंद्रमा से ७वे नक्षत्र लत्ता दोष यह दोष मालव देश में अशुभ होता है ॥ १ ॥

यस्मिन् धिष्ण्ये महोत्पातो ग्रहणं वा भवेद्यदि
तस्मिन् धिष्ण्ये शुभं कर्म षण्मासं वर्जयेद्बुधः ॥

टीका ॥ जिस नक्षत्र में उत्पात अथवा ग्रहण हो यति से नक्षत्र में षट् मास तक शुभ कर्म वर्जित है ॥ १ ॥

पाप युक्त ग्रह और वेध नक्षत्र

एकार्गल दोष होता है ॥ चंद्र सूर्य बलसे दोष दूर होते हैं ॥

चंडायुध

शूलगंडातिपातानां साध्यहर्षणयोस्तथा
अत्यंयच्चंद्रभंतस्मिन्नतच्चंडायुधेनसत् ॥

टीका ॥ शूलगंडातिव्यतीपात साध्य वधृति हर्षण इन योगों के अंत में जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

क्रांति साम्य

युग्मेधनुःकर्किरलौच युक्ते कन्याचमीनेवृषनक्रयुक्ते
मेषेच्च सिंहेच घटेतुलायां क्रांतेच साम्यं शशिसूर्ययोगे ॥

टीका ॥ धन मिथुन इन लग्नों में सूर्य चंद्रमा होय तो क्रांति साम्य जानिये - कर्क वृश्चिक में · कन्या मीन में · मेष सिंह में · मकर वृष में · तुला कुंभ में परस्पर क्रांति साम्य दोष होता है ॥ १ ॥

चक्र का क्रम

उर्ध्वरेखात्रयंचैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा
क्रांतिसाम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनेतुयोजयेत्

टीका ॥ तीन रेखा ऊंची तीन रेखा तिरछी मध्य भाग की रेखाओं में तीन २ लग्न क्रम से लिखे बारह लग्नों में दो दो का क्रांति साम्य होता है ॥ १ ॥

जामित्र दोष

लग्नेंदोर्नास्तगःपापस्ततुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदा जामित्रदोषःस्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ क्रूरो वा यदि वासाम्यो लग्नाच्चंद्राच्च खेतरः ॥ एकोपि यदि जामित्रे समांशेच तदा भवेत् ॥ जामित्रंन प्रशंसंति गर्गकाश्यपदेवलाः ॥ आय षष्ठ तृतीयेषु धनधान्य प्रदोरविः ॥ १ ॥

टीका ॥ लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान पाप शुभ न होय जो होय तो यामि मित्र दोष होता है और उसके तुल्यांश आवे तो जामित्र दोष होय ॥

नभो नभस्य ॥ तथेष उर्ज श्च सहो सहस्यस्तपस्तपस्य श्चयथा क्रमेण ॥ १ ॥

टीका ॥ मधु कहिये चैत्र माधव कहिये वैशाख शुक्र कहिये ज्येष्ट शुचि कहिये आषाढ नभ कहिये श्रावण नभस्य कहिये भाद्रपद ईष कहिये आश्विन उर्ज कहिये कार्तिक सहा कहिये मार्गशिर सहस्य कहिये पोष तय कहिये माघ तपस्य कहिये फाल्गुन इस क्रम से महीनों क नाम जानना ॥ १ ॥

मास परत्व सूर्य के नाम

अरुणो माघ मासेतु सूर्य्योवै फाल्गुणे तथा ॥
चैत्रमासेत वेदांगो भानु वैशाख एवच्च ॥ १ ॥
ज्येष्टमासेतपेदिन्द्रः आषाढेतपते रविः ॥
गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्र पदतथा २
सुवर्णरेता श्च पुजि कार्तिकेच्च दिवाकरः
मार्ग शीर्षेतपेन्मित्र ; पोषे विस्नुः सनातनः
इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात्

टीका ॥ माघ में अरुण सूर्य का नाम है फाल्गुण में सूर्य नाम है चैत्र में वेदांग सूर्य का नाम है वैशाख में भानु नाम है ज्येष्ट में इंद्र नाम है आषाढ में रवि नाम सूर्य जानिये श्रावण में गभस्ति नाम सूर्य जानिये ॥ भादों में यम नाम सूर्य जानिये आश्विन में सुवर्ण रेता सूर्य जानिये ॥ कार्तिक में दिवाकर नाम सूर्य जानिये मागशिर में मित्र नाम सूर्य जानिये पोष में विस्नु नाम सूर्य जानिये ॥ यह बारह महीनों में सूर्य के नाम जानिये ॥ १ ॥

मास परत्व विस्नु क नाम

केशवं मार्गशीर्षेतु पोषे नारायणं विदुः
माधवं माघ मासेतु गोविन्द मद्य फाल्गुने
चैत्र विस्नुं तथा विद्या वैशाखे मधुसूदनम्
त्रिविक्रमं तथा ज्येष्टे आषाढे वामनं विदुः

टीका : ३१८ कुगुणानलाश्च ३३१ षट् राम रामा ३३६ स्व प्रशांक रामा ३१० सप्तांग पक्षा २६७ श्च गजाग्निदस्त्र २३८

मेषादि १२ राशिन का पल संख्या

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३११	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्न की घटिकाओं की संख्या

मीने मेषे त्रयः पंच क्रमान्नाड्यः पलानि च ॥ वृषे कुंभे व्धि सप्त द्विपंच द्विड्य घुने मृगे ॥ धनुः कर्के शरे षट् त्रि सिंहाल्यो: शरभूत्रयं ॥ बाणाष्ट दश तूलांगे लग्न नाड्यः पलानि च ॥ २

मेषादि १२ लग्नों का क्रम

राशि	मे	वृ.	मि.	क	सिं	क	तु.	वृ.	ध	म	कुं	मी.
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

दिन प्रति भुक्त पल जानने का क्रम

मानाजे सप्त षट् पञ्च पलानि विपलानि तु ॥ गोकुंभष्टो युग शरादि विंशति र्नृ युमम्गे ॥ कर्क चापे भवाः सूर्याः सिंहाल्यो रुद्र दृड्मिताः ॥ तुलागे दृक् च षट् त्रीणि लग्ने ष्वंकाशसम्मिति: ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्त लग्न कथनं

यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदयो भवेत् ॥
तस्मात्सप्तम राशिस्तु अस्त लग्नं तदुच्यते ॥ १

टीका ॥ जिस राशि के सूर्य हो वही लग्न सूर्योदय में होती है और उससे सातवीं लग्न में सूर्य अस्त होता है उसे अस्त लग्न जानिये ॥ १

लग्न से भुक्त लाना ॥

मकरलग्न वृषलग्न तिसको कोष्ठक में देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि ९ । १३ । २० कह्रिये मकर राशि की लग्न १३ अंश २० घटी होती है इस लग्न के अंश घटी में अयनांशा: २२।५ मिलाने से सायन लग्न १०। ५। २५ हुई कुंभ राशि के अंक ५ घटी २५ सायन लग्न होती है लग्न के भुक्तांश ५। २५ कुंभ राशि का उदय २६७ इस गुणने से अंक हुआ १४४६ इनमें ३० का भाग दिया तो आया ४८।१२ यही अंक लग्न का भुक्त होता है ॥

भोग्य भुक्त से इष्ट लाने का क्रम ॥

भोग्य भुक्त योग १२१। २० सूर्य अथवा लग्न इस राशि के मध्यंतर का उदय २ धन ३१६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१ इनमें मिलाया तो अंक हुआ ७६७ इस अंक में ६० का भाग दिया तो वह इष्टकाल की घटी १२ पल ४७ हुए इन पलों में वृत्ति के ५ पल जाड़ने में स्पष्ट इष्टकाल १२।५२ आ जाता है ॥ उदाहरण

सायन सूर्य से भोग्य लाने का क्रम ॥

अंश	घटी	पल
३०	०	०
२३	२२	१५
६	३७	४५

इसमें सायन सूर्य के अंश घटाने से यह सूर्य वृश्चिक का है

		३३१ गुणक
१९८६	२३१७	१६५५
२०८	९९३	१२२४
	१३२४७	भाग ६०) १४८९५ (घटिका का
	२४८	१२०

२८९
२४०
४९५
४८०
१५ शेष पलें ॥

भाग २६०) १२४९५ (अंश २०८
१२०
४९५
४८०
१५ शेष

इष्टकाल
धन ३३६
भकार ३१० मिलावे
६४६
१२१ ये भुक्त भो. मिलावे
भाग ६०) ७६७ (१२ घटी
६०
१६७
१२०
४७
६०
भाग ६०) २८२० (४७ पल
२४०
४२०
४२०

भुक्त भोग योग

४८	१२	भुक्त
७३	८	भोग
१२१	२०	सूर्य लग्न

उत्तर इष्ट घटी का

घटी	पल
१२	० ४७
	५ प्रकृति का फल
१२	५२ उत्तर इष्ट

इष्ट समय का तत्काल सूर्य साधन

तत्कालभवस्तथा घटद्यः खरसै र्लब्धकलोनसंयुतस्यात् टी०॥ इष्ट घटी में सूर्य लाना होय तो उसको और उससे सूर्य की घटियों को गुणा करना ६० का भाग देना जो लब्ध होय उसमें जो सूर्य गत हो तो हीन करै और जो भोगम्य होय तो उसमें युक्त करै तब तत्काल सूर्य आजाता है उदाहरण ॥ शक: १७६६ कार्तिक शुदि ८ भौम वार के दिन प्रातःकाल का सूर्य ७।१।९७।१५ है तो कहो कि सायन सूर्य। कतवा होगा ॥

इष्ट घटी की गति का गुणाकार
१२ ५२ इष्ट घटी
भा. ६० ७२० ३१२०
४७ ५६४ २४४४
७२० ३६८४ २४४४

घटी पलों का भागाकार
७२० ३६८४ ६०) २४४४
६२ ४० २४
७८२ ३७२४ (६२ ४४
३६०

२१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्य काल निकल आवे उसके हिसाब का क्रम ॥ ३० में सायन सूर्य के अंश घटाये २३।३५।१७ तव यह रहे ६।२४।४३ भोग्यांश उदय ३३१ हुआ ॥

अंक	कला	विकला
१९८८६	१२२४	४३
१३६	६६२	१२९
३०) २१२२ (७०	७९४४	भा॰ ३०) १४२३३ (२३७ कला
२१०	२३७	१२०
२२	६०) ८१८१ (१३६	२२३
६० गुणक	१६०	१८०
३०) १३२० (४४	२१८	४३३
१२०	१८०	४२०
१२०	३८१	१३
	२१	

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ॥ इष्ट घटी १२।५२ इसके पल ७७२ इस अंक में भोग्य काल घटाया तो शेष अंक ७०१।१६ धन राशि का उदय ३३६ वा मकर राशि का उदय ३१० इन दोनों का योग ६६४ शेष अंक में हीन किया तो रहे ५५।३६ इन अंकों में कुंभ राशि का उदय २९७ घट नहीं सका इस लिये अशुद्ध उदय जानिये ॥

इष्ट घटी १२
 ६०
गुणक ७२०
 ५२
 २२८
 ७७२

भोग्य काल ७० ४४
३३६ धन राशि का उदय ७०१ १६
३१० मकर राशिका उदय ६४६ ५५ १६ इन अंकों में कुंभ

सो दृष्ट काल जाने और रात्रि में लग्न अथवा दृष्टकाल निकालना हो तो सूर्य की राशि में ६ मिलावे शेष क्रिया पूर्ववत् जानना ॥

(लग्न के शुभाशुभ ग्रहों का विचार)

लग्ने चंद्रः खलारिपौ शशिसितौ सर्वे खे बुधो ऽब्धौ त्ये गुः स्मरखमो ष्टमाः कुज शुभाः शुक्रस्तृतीयो शुभे ॥ लाभे सर्वखगाः शुभाः अखिलगास्त्र्यरिगास्तु खलाश्च इ स्थौ बुधे प्रिये शुभ ... स्थान्मृत्यु बेष्टा रिगः ॥ १

टीका ॥ लग्न में चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्न से षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्रमा और सप्तम स्थान में कोई ग्रह न होय दशम स्थान में बुध हो दशम चंद्रमा चौथे राहु आठवें मंगल वा शुभग्रह और तीसरे शुक्र ऐसे ग्रह लग्न में होय तो अनिष्ट शोक कारक अशुभ ग्रह जानिये ॥

लग्न से ११वें स्थान में संपूर्ण ग्रह होंय और निंद्य स्थान को छोड के और शेष स्थान में शुभग्रह होय और तीसरे छटे स्थान में सूर्य और दूसरे तीसरे चौथे चंद्रमा होंय तो शुभ है लक्ष्मी की प्राप्ति करे और लग्न का स्वामी अथवा अंश का स्वामी अथवा द्रेष्काण का स्वामी ये ६ या ८ वें स्थान में होय तो मृत्यु दायक जानिये ॥ १ ॥

पंच भिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरनिष्टमादेश्यम् ॥

स्थानादि फल सम्बृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः १

टीका ॥ लग्नों के पांच ग्रह शुभस्थानी हों तो पुष्टि कारक होते हैं और अशुभ स्थानी हों तो अरिष्ट कारक होते हैं और यवनादिक के मत से च्यार ग्रह भी दृष्ट कारक शुभ जानिये ॥ १ ॥

षट्वर्ग शुद्धि जानने का क्रम ॥ ग्रहं होरा चद्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ॥ त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गोस्त्व सौम्यग्रहजा शुभाः

टीका ॥ प्रथम जानने में १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ३ द्वादशांश ४ त्रिंशांश ५ और ग्रह ६ इन छः वर्गों में शुभग्रह के वर्ग शुभ होते हैं और अशुभ ग्रह के वर्ग अशुभ होते हैं ॥ त्रिंशांशादि कथनं ॥

त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
१अं.१०	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
२अं.२०	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.
३अं.३०	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.

सप्तांश कथनं ॥ श्लो॰ ॥ ओजराशौ स्वराशाद्यास्समे सप्तमराशितः

टीका ॥ विषम राशि में अपनी राशि से सप्तांशक जानये॥ और सम राशि में सातवीं राशि से लेके जानिये ॥ सप्तांश

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
४।१७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८।३४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
१२।५१	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१७।८	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
२१।२५	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
२५।४२	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
२९।५९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९

नवांशक कथनं

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ॥
वृषकन्यामृगेलग्ने मकरान्नवमांशकाः १
कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतस्मृताः
नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलिनः स्युर्नवांशकाः

टीका ॥ मेष सिंह धन इन लग्नों को नवांश मेष से गिनिये और वृष कन्या मकर इनका नवांश मकर से जानिये मिथुन तुला कुंभ इनका तुला से जानिये कर्क वृश्चिक मीन इनका कर्क से जानिये सूर्य मंगल शनि इनका नवांश अशुभ जानना चाहिये ॥ १॥२

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
१अं.१०	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
२अं.२०	सू.	बु.	शु.	मं	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु	बु.	चं.
३अं.३०	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	बु.	चं	सू.	बु.	शु.	मं.

सप्तांश कथनं ॥ श्लो. ॥ ओजराशौ स्वराशाद्या समे सप्तमराशितः
टीका ॥ विषम राशि में अपनी राशि से सप्तांशक जानये ॥
और सम राशि में सातवीं राशि से लेके जानिये ॥ सप्तांश

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
४ १७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८ ३४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
१२ ५१	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१७ ८	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
२१ २५	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
२५ ४२	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
२९ ५९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९

विषम त्रिंशांशकथनं॥ श्लो०॥ कुजार्कगुरुविद्शुक्राः त्रिंशांशपतयः क्रमात्॥ पंचपंचाष्टसप्ताक्षभागानां विषमे गृहे
टी०॥ विषम लग्न में पहले मंगल के पांच अंश तिसके पीछे शनि के पांच तिस पीछे बृहस्पति के ८ इसके पीछे बुध के ७ अंश इसके आगे शुक्र के ५ अंश इस क्रम से विषमराशि में त्रिंशां जानना ॥ १॥

विषम	मं·	श·	बृ	बु·	शु	त्रिंशांश
भाग	५	५	८	७	५	भाग

समत्रिंशांश॥ श्लो०॥ शुक्रज्ञज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांश पतयः समे॥ पंचांगाष्टेषुपंचानां भागानां कथिता बुधैः
टी०॥ समराशि के त्रिंशांश में प्रथम ५ अंश पर्यंत शुक्र है इससे आगे बुध ७ पर्यंत इससे आगे बृहस्पति ८ पर्यंत इससे आगे शनि ५ पर्यंत इससे आगे मंगल ५ पर्यंत इस क्रम से सम राशि में त्रिंशांश जानिये २

समराशि	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	मंगल	समराशि
भाग	५	७	८	५	५	भाग

उक्तांशाः॥ श्लो०॥ मेषे षट् घटी वृषे विहगिनाहं द्वौ द्विगो कीश्रयः कीटे कर्य्यंगवाङ्गयोर्कभवने गाश्वाश्रियां अर्कषट्॥ जूके कोद्रिखगाः अलौ गवगषट् चापे त्रिषट् गोद्वयो नक्रे शास्त्र्य रुगा घटे ऋषवृषो मीने द्रिगोषट्शुभाः
इसका अर्थ इस चक्र से जानना सुगम है॥

उक्ता·रा·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·
अंश	६	२	७	४	६	३	१२	९	३	३	१२	७
कला	७	३	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९
विकला	०	१२	१२	६	०	६	६	६	६	०	०	६

षट्वर्गं पंचवर्गं वा चतुर्वर्गमथापि वा॥ केचित्त्रिवर्गसंप्रोक्तं व्येकवर्गं तनुं त्यजेत् १
टीका॥ कोई ६ वर्ग कोई ५ वर्ग कोई ४ वर्ग लग्न के होंय तो बली अव

अधमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति साम्य दिन तुल्या दिदुष्ट योग छोडिके शुभ है और किसी के मन में विषादिक करके अति संकट में वर कन्या होय तो गोरज शुभ है ॥२॥

वधूप्रवेशमाह

विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मे थवा षो
डशवासरांतात् ॥ तदूर्ध्वमध्येयुजि पंच मा
द्व्दतः परस्तान्नियमो न चास्ति ॥ १॥

टी०॥ विवाह से सम १६ दिवस पर्यंत वधू प्रवेश कहा है आगे ५ वर्ष पर्यंत विषम मासादि कहे हैं इस से स्वेच्छा जानना ॥१॥

उक्तमासादि ॥ माघ फाल्गुन वैशाखे शुक्लपक्षे शुभे
दिने ॥ गुरु वीदित्य विशुद्धो स्यात् नित्यं पत्नी द्विरागमः १

टीका ॥ माघ फाल्गुन वैशाख और शुक्ल पक्ष शुभ दिन गुरु आदि अस्त वर्जित में द्विरागम कहा है ॥१॥

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरु ब्राह्मानुराधाश्विनी
शक्रे भास्कर वायु विष्णु वरुणान्याद्ये प्रशस्ते तिथौ
कुंभाजालिगते रवौ शुभ करे आप्नोदये भार्गवे जीव
ज्ञास्फुजितां दिने नव वधू वेश्मः प्रवेशः शुभः १

टी०॥ मृगशिर तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाति श्रवण शतभिषा चित्रा ये नक्षत्र और कुंभ मेष वृश्चिक इन राशों के सूर्य होंय और शुक्र का उदय होय और गुरु बुध चंद्र ये वार ऐसे शुभ दिवस में वधू प्रवेश करावे ॥१॥

नूतन पल्लव धारण का मुहूर्तः

हस्तादि पंच मृग पुष्य मदस्र भेषु विष्णु द्वये बुध दिने
गुरु शुक्र वारे ॥ स्त्रीणां शुभं प्रथम पल्लव धार
णं स्यात्सारिणि गदोक्त समये खलु पीतवस्त्रे ॥१॥

टी०॥ हस्त से पांच ५ मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा ये नक्षत्र और गुरु बुध शुक्र ये वार और वे ग्रह होंय जो किरण काल में

अथ वास्तु प्रकरणं ग्रामादि अनुकूलं

ग्रामादिरनुकूलत्वे दिशो भूतग्रहस्य च ॥ भा
सन्धिग्रायादि शुद्धिं च वीक्ष्यायव्ययभांशकान १

टी०॥ ग्राम दिशा और शुभ ग्रह इनके अनुकूल दे रविके मास वा नक्ष
त्र शुद्धि और आय व्यय वा लग्न अंश शुद्धि शुभ देखि लीजे॥ १॥

ग्रह बलं

गुरु शुक्रार्क चंद्रेषु स्वोच्चादि बल शालिषु ॥
गुर्वे केंद्रबलं लब्ध्वा ग्रहारंभः प्रशस्यते ॥ १

टीका॥ गुरु शुक्र सूर्य चंद्र इनका बल पाकर ग्रह का आरंभ करना
शुभ है ॥ १॥

वर्ज्यानि

विवाहोक्तान्महा दोषान्मूले जामित्र शुद्धितः
रिक्ता कुजार्क वारोंश्च चर लग्नं चरांशकम् १

टीका॥ जामित्र शुद्धि वचा के विवाह के जो दोष कहे हैं वे सब वर्जित
करिकें और रिक्ता तिथि भौमवार रविवार लग्न और चर लग्नों के
अंश ये वर्जित हैं ॥ १॥

त्यक्त्वा कुजार्क योरंशं पृष्ठे चाग्रे स्थितं विधुः
बुधज्य राशिगं चार्कं कुर्याद्गेहं शुभाप्तये ॥ १

टीका॥ सूर्य मंगल का अंश और पीछे स्थित जो चंद्रमा सो वर्जि
त है मिथुन कन्या धन मीन इन राशिन का सूर्य ग्रहारंभ करने में शु
भ है॥

(द्वार शुद्धिः)

द्वार शुद्धिं निरीक्ष्यादौ भ शुद्धिं वृषचक्रतः
निष्पंचके स्थिरे लग्ने द्विगे चालयमारभेत् १

टी०॥ प्रथम द्वार शुद्धि और वृष चक्र से नक्षत्र शुद्धि देखकर पंचक र हि
त स्थिर वा द्विस्वभाव लग्न में द्वार का आरंभ कीजे॥ ग्रामानुकूलं॥

स्वनाम [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] द्विशारांके शक्तिभिः
संग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोऽन्यथा

टी०॥ अपनी राशि से २।५।९।१०।११।१० जिस ग्राम की राशि होय वह

सं.	मासनाम	मास नाम	मास सूर्य	मास विष्णु	मासस्त्रीकेन
१	चैत्र	मधु	वेदांग	विष्णु	रमा
२	वैशाख	माधव	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इंद्र	त्रिविक्रम	पद्माक्षी
४	आषाढ़	शुचि	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण	नभ	गभस्ति	श्रीधर	कांतिमती
६	भाद्रपद	नमस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विन	ईष	सुवर्णरेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशिर	सह	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौष	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघ	तप	अरुण	माधव	रुक्मिनी
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	गोविन्द	धात्री

टीका ॥ जिस महीने में पांच रविवार होंय तो रोग जानिये और जिस महीनि में पांच मंगलवार होय तो बडा भय होय - जिस महीने में पांच शनीचर होंय तो दुर्भिक्ष पडे - और बुध गुरु शुक्र ये वार होंय तो शुभ को देते हैं ॥ १ ॥

पक्ष

पूर्वापरे मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सित
नील संज्ञौ ॥ पूर्वस्त्व देवस्त्व परश्च पैत्र्यः
केचित्तु कृष्णे सितपंचमीतः ॥ १ ॥ आदौ
शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोपि मासके २

टीका ॥ शुक्ल पक्ष की पडवा से लेके पूनों तक शुक्ल पक्ष कृष्ण पक्ष की पडवा से लेकें मावस तक कृष्ण पक्ष शुक्लपक्ष में देव कार्य करे कृष्ण पक्ष में पित्र कार्य करे दो पक्ष मिलकें एक महीना होता है शुक्ल पक्ष की पंचमी से लेके कृष्ण पक्ष की पंचमी तक शुभ है कृष्ण पक्ष की पंचमी से लेकें शुक्ल पक्ष की पंचमी तक मध्यम है ॥ २ ॥

करे और अपने नाम का वर्ग मिलावे ८ का भाग देइन दोनों में से जो शेष बचे सो अर्थ सात जानिये अर्थात् कमती वाले से रणिया जानिये॥

चंद्रमा के मुख जानने का क्रम

वह्निमैत्राग्नि मघेस्थे चंद्रे याम्योत्तराननम्
पित्र्यादा सव तस्त्रिदृ स्तागस्य रास्याद्गृहंशुभम्

टी०॥ कृत्तिका से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो गृहों का मुख दक्षिण को और अनुराधा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो गृहों का उत्तर को मुख और मघा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो गृहों का पूर्व मुख और धनिष्ठा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का मुख पश्चिम को शुभ है॥

आयादि साधन

गृहेशकरमानेन गृहस्यायादि साधयेत्
करैर्वेन्नेक्ष्मायादि साध्यमंगुलितस्तथा

टी०॥ गृह के स्वामी के हाथ प्रमाण से अथवा अंगुल मान करके द्रव आयादि साधन करे॥

क्षेत्र फल

विस्तार गुणितं दैर्घ्यं गृह क्षेत्र फलं भवेत्
तत्स्य वसुभिर्भक्तं शेषमायाध्वजादिकः

टी०॥ ध्वजा से आदि आय के साधन का प्रकार चौड़ाई लंबाई अथवा लंबाई चौड़ाई को आपस में गुणने से क्षेत्र फल जानना और उस में ८ का भाग देने से शेष बचे सो ध्वज आदि आय जानिये॥१॥

आयों के नाम

ध्वजो धूमोथ सिंह श्वा सौरभेयः खरोगजः
ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतत्दायाष्टक मुदीरितम्

टी०॥ ध्वज१ धूम२ सिंह३ स्वान४ बैल५ गर्दभ६ हस्ती७ काक८ या क्रम करके आयाष्टक जानिये — वर्णों के अनुसार आय जानिये॥२॥

ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वै क्षत्रियस्य च
वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः१

टी०॥ ब्राह्मण को ध्वज आय क्षत्री को सिंह आय वैश्य को वृषभ आय

क्रम से जानना ॥१॥ (गृहों के नाम)

गृहस्य पूर्वतो दिक्षु क्रमात्कं स्थाप्य दक्षिण: ॥
संस्थाप्य मिलितं जातं कांस्तान्मित्या षोडश गृहा:

टी०॥ गृहों के पूर्व दिशा क्रम से अंक स्थापित करे ऐसे अंक पूर्व को १ दक्षिण को २ पश्चिम को ३ उत्तर को ४ ऐसे चारों दिशा को स्थापित करे और जिस ओर को गृह का मुख होय तिस दिशा के अंक मिलावे ताला की संख्या अधिक एक करके मिलावे जो अंक होय सोई घर का नाम जानिये ॥१॥ गृहों के नाम

ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं खरं कान्तं मनोरमं ॥ सुमुखं दुर्मुखं
क्रूरं रिपुदं धनदं क्षयं ॥ आक्रन्दं विपुलं स्थैर्यं विजयं
चेति षोडश: ॥ गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नाम तुल्य फलप्रदम् १

टी०॥ इन गृहों के ध्रुव धान्य जय इत्यादि १६ नाम हैं इनका शुभाशुभ नाम के अनुसार जानिये ॥१॥ (अंक मिलाने का प्रकार)

व्ययेन संयुते क्षेत्रे गृहनामाक्षरान्विते ॥
त्रिभिर्भक्तावशेषे तु द्वितीये शून्ये न शोभन:

टी०॥ पीछे व्यय होय उसे क्षेत्र फल में मिलावे और गृहों के नाम के अक्षर मिलाके ३ का भाग दे शेष दो बचें तो अशुभ और एक वा शून्य बचें तो शुभ फल जानिये ॥१॥ गृहों के भाग

नवभागं गृहं कुर्यात्पंच भागं तु दक्षिणे ॥
त्रिभागं चोत्तरे कुर्यान्मध्ये द्वारं प्रकल्पयेत्

टी० ॥ गृह क्षेत्र के नव भाग करि के पूर्व तिसमें से पांच भाग दक्षिण के ३ भाग उत्तर को और १ भाग मध्य में तिस में द्वार की कल्पना करे गृहों की १

गृहों के द्वार

द्वारस्योपरि यद्द्वारं द्वारस्यान्यच्च सन्मुखम्
व्ययदं तु यथा लक्षण कर्तव्यं शुभेप्सुभि: ।१।

टी०॥ द्वार के ऊपर द्वार और आमने सामने के द्वार व्यय दायक हो ते हैं शुभाभिलाषी पुरुषों को ऐसे घर न बनावने चाहिये ॥१॥

तिंच लक्ष्मी कुर्युश्चैत्राद्या गृहारंभकाले ॥१॥

टी०॥ चैत्र में शोक बैशाख में धन ज्येष्ठ में मृत्यु आषाढ में पशुहानि श्रावण में द्रव्य प्राप्ति भाद्रपद में दरिद्र आश्विन में कलह कार्तिक में मृत्यु नाश मार्गशिर में धन प्राप्ति पौष में लक्ष्मी माघ में अग्निभय फाल्गुन में लक्ष्मी इस प्रकार मासों में शुभाशुभ फल जानिये ॥२॥

(दिशाके अनुसार गृहोंका मुख करना)

कर्कनक्रहरिकुंभगतेर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि ।
तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि वदंति २

टी०॥ कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंके सूर्य में पूर्व अथवा पश्चिमको घरका द्वार करे मेष तुल वृष वृश्चिक इन राशियोंके सूर्य होंय तो दक्षिण वा उत्तर में घरका द्वार करे इस प्रकार रत्नमाल ग्रंथ में लिखा है २

गृहारंभके नक्षत्र

उत्तरां मृगरोहिण्यः पुष्यमैत्रकरत्रये ॥ धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारंभः प्रशस्यते ॥१॥ आदित्य भौमवर्ज्यंतु सर्वे वाराः शुभावहाः ॥ चंद्रादित्य बलं लब्ध्वा लग्ने शुभ निरीक्षिते ॥ स्तंभोच्छ्रायस्तु कर्तव्यस्तान्यत्र परिवर्जयेत् प्रासादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषु चैवहि २

टी०॥ तीनों उत्तरा मृगशिर रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाति धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं और रवि भौम ये वार वर्जित शेष वार शुभ हैं और स्थिर लग्न में करे स्तंभारोपण देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्यों में शुभ हैं ॥२॥ (वृषचक्र)

त्रिवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वित्रिभैरर्कतः शशी ।
कुर्याल्लक्ष्मी समुद्वासं स्थैर्यं लक्ष्मी दरिद्रताम्
धनं हानिं क्रमान्मृत्यु मारंभे वृषचक्रकम् ॥१॥

टी०॥ सूर्यके नक्षत्र से दिनके नक्षत्रताईं गिने प्रथम भाग में तीन लक्ष्मीदायक दूसरे भाग में ४ उद्वासनका तीसरे भाग में ४ स्थिरताकारक चौथे भाग में ३ लक्ष्मी पांच में ४ दरिद्र छठे धनदायक

तव नैऋत्य कोणमें खात करावे इस प्रकार नीव धरै ॥१॥

दुष्ट योग॥ वज्र व्याघात मूलञ्च व्यती पात प्रगं-
डकः॥ विष्कुंभ परिघो वर्ज्यो वारे मंगल भास्करौ

टी०॥ वज्र व्याघात मूल व्यती पात गंड विष्कुंभ परिघ और मंगल रवि ये वर्जित हैं ॥१॥ (कूर्मचक्रं)

तिथिस्तु पंच गुणिता कृत्तिकाद्यर्क्ष संयुता॥ तथाद्वाद
श मिश्राच नव भागेन भाजिता॥ फलं॥ जले वेदाः मुनि
श्चैव स्थले पंच द्वयं वसु॥ त्रिषड् नवं चाकाशे त्रिविध
कूर्म लक्षणं॥ जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्त
थैवच॥ आकाशे मरणं प्रोक्त मिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥१॥

टी०॥ गृहारंभ की तिथियों को पांच से गुणा करै और कृत्तिकान क्षत्र संख्या को मिलावै फिर १२ मिलावै और ९ का भाग दे जो शेष बचें ४ ७ ८ तो जल स्थान में कूर्म जानिये ता को फल लाभकारक है और ५।२।८ ये बचें तो स्थल में जानिये ता को फल हानि कारक है और ३।६।९ ये बचें तो आकाश में कूर्म जानिये ता को फल मरण है इस प्रकार त्रिवि ध कूर्म के लक्षण जानिये॥१॥ (स्तंभ चक्रं)

सूर्यां धिष्ण्यात् भद्वयं प्रथमतो मध्ये तथा विंशति
स्तंभाग्रे त्रसंख्यया मुनिवरैः प्रोक्तं मुहूर्तं शुभम्
स्तंभाग्रे मरणं भवेत् गृह पतेर्मूले धनार्थ क्षयो म
ध्ये चैव तु सर्वसौख्य मतुलं प्राप्नोति कर्त्ता सदा ॥१॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम तिसमें प्रथम दो नक्षत्र स्तंभ के मूल के तिसका फल धन क्षय और दूसरे २० नक्षत्र स्तंभ के मध्य के तिसका फल लक्ष्मी और कीर्तिकी प्राप्ति तीसरे नक्षत्र स्तंभ के अग्र भाग के तिसका फल मरण कारक इस रीति से स्तंभारोपण करना॥१॥ (देहली रखने का मुहूर्त्त)

मूले भौमे त्रिकर क्षं गृहपति मरणं पंच गर्भे सुखं स्यात्
मध्ये देयाच्च कर्क्षं धन सुख सुखदं पुच्छ देशेथ हानिः

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने पहले ३ सूर्य के अ शुभ दूसरे ३ बुध-शुभ तीसरे तीन ३ भृगु शुभ चौथे ३ शनि अशुभ पांचमें तीन ३ चंद्रमा शुभ छठे ३ मंगल अशुभ सातमें ३ गुरु शुभ आठवें ३ राहु अशुभ नवमें ३ केतु अशुभ है॥ १॥

॥ गृहप्रवेश का मुहूर्त ॥

अथ प्रवेशो नवमंदिरस्य यात्रा नि वृत्तावथ भूपतीनाम्॥
सौम्यायने पूर्व दिने विधेयं वास्तवचनं भूतबलिंचकारयेत्

टी०॥ यात्रा और राज दर्शन के मुहूर्त में उत्तरायन सूर्य होने में प्रथम वास्तु पूजा और भूत बलि कर के नवीन गृहमें प्रवेश करनायोग्य है १

चित्रानुराधा मृग पौस पुष्य स्वाती श्रविष्ठा श्रवणोच मूलम्
वारेश्व सूर्या क्षितिजेथ रिक्ता तिथौ प्रशस्तो भवन प्रवेशः १

टी०॥ चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती पुष्य स्वाति धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र रवि भौम ये वार और रिक्ता तिथि इन को छोड के गृहप्रवेश करना

कलश चक्रम

प्रवेशे कल[illegible]षट् क्रमात्॥
अशुभंच शुभंज्ञेयं मशुभंच शुभं तथा॥ १॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक जो नक्षत्र होय उन में प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ जानिये और आठ नक्षत्र शुभ आगे आठ फिर अशुभ शेष ६ शुभ इस प्रकार कलश चक्र में में जानना॥ १॥

वामार्क लक्षणं

रंध्रात्पुत्राद्धना दायात्पंच सूर्के स्थिते क्रमात्
पूर्वापरादि मुखं गेहं विशेद्वामो भवेदनः॥ १॥

टी०॥ घर में प्रवेश करने के समय सूर्य वायां होय तिस के जानने का क्रम प्रवेश लग्न में ८ वें स्थान से ५ वें स्थान तक पूर्व द्वार वारे को शुभ और दक्षिन के द्वार वारे को ५ वें स्थान से ५ स्थान तक शुभ पश्चिम द्वार वारे को दूसरे स्थान से पांच स्थान तक शुभ उत्तर द्वार वारे को एकादश स्थान से ५ स्थान पर्यंत वामार्क होता है सो प्रवेश काल में शुभ है॥ १॥

स्वर्क्षगे हिमगौ लाभे सुरेज्ये केन्द्र संस्थिते ॥
धनधान्ययुता गेहे सुतारोग्य चिरं भवेत् ॥ १॥

टीका ॥ कर्क का चंद्रमा ११वें स्थान वें होय वा गुरु केंद्र में होय ऐसी लग्न में गृहारंभ होय तो धन धान्य युक्त सुतारोग्य सहित चिरकाल रहे ॥ १॥

स्वोच्च वर्तिनि भृगौ विलग्नगे देवमंत्रिणि रसातले थवा
स्वोच्चगे रविसुते थवायगे स्यात्स्थिति श्च सुचिरं सहश्रिया।

टीका ॥ शुक्र लग्न में बृहस्पति ४ स्थान शनि स्वगृही हो ऐसी लग्न में लक्ष्मी युक्त चिरकाल रहे ॥ १॥ (पृथ्वी शोधने का प्रकार:)

कुंडार्थ पृथ्वी परि शोधहेतवे प्रष्टमुखाद्यः प्रथमं स्फुटाम
वेत् ॥ वर्गादिवर्णाः किल तद्दिशि स्मृतं शल्यं मुनीन्द्रैहृप
यैस्तु मध्यतः ॥ १॥ स्मृत्वेष्ट देवतां प्रष्टवेचनस्याद्यमक्ष
रं ॥ गृहीत्वा तु ततः शल्या शल्यं सम्य विचार्यते ५ ॥

टीका ॥ कुंड के निमित्त अर्थात् नवीन घर के बनाने को प्रथम धरती शोधन करे पृच्छक इष्ट देवता का स्मरण करके प्रश्न करे ब्राह्मण सेता के मुख का आदि का अक्षर जिस वर्ग का निकले तिसका उत्तर अ क च ट त प य श वर्गो पूर्वादि अष्ट दिशाओं में जाने मध्य में हपय वर्गों के आदि अक्षर जहां होय तिस स्थान में शल्य है तिसका प्रकार नीचे लिखा है तिसमें से दो दो स्थानों को जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

प्रच्छायां यदि अः प्राच्यां नर शल्यं तदा भवेत ॥ सार्धहस्त
प्रमाणेन तच्च मानुष्य मृत्युकृत १ आग्नेयां दिशि कः प्रश्ने
स्वर शल्यं कर हये ॥ राजदण्डो भवेत तत्र भयं चैव निवर्तते ॥ २।
याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदास्या त्कटि संस्थितं । नरशल्य
गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ३ नैऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्ध ह
स्त दधस्थले । शुनोस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ।
तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ॥ सार्द्ध हस्ते गृ
हस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ५ वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तषां गा
रश्च तुष्करे । कुर्वन्ति मित्र नाशं च दुःस्वप्न दर्शनं सदा ॥ ६ ॥

यात्रा में सन्मुख शुक्र होय तो कुछ दोष नहीं है ॥ १ ॥

पौष्णादावह्निपादांतं यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥
तावच्छुक्रो भवेदंधः सन्मुखं गमनं शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती अश्विनी कृतिका इन नक्षत्रों के प्रथम चरण में शुक्र अंधा होता है उसके सन्मुख गमन में दोष नहीं है ॥ १ ॥

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सन्मुखे हंति लोचनः ॥ वामे पृष्ठे शुभो नित्यं गोधये दस्तगः शुभः ॥ १ ॥

टीका ॥ जाने में शुक्र दाहना होय तो दुःख दायक सन्मुख नेत्र पीडा कारक बायें और पीछे शुभ जानना -और जो पश्चिम में अस्त होय तो पूर्वे को उत्तम जानिये और जो पूर्व में अस्त होय तो पश्चिम में उत्तम जानना ॥ १

घात प्रकरणं ॥ प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्य संग्रहे। वादे चैव गृहारंभे वर्जयेत् घात चंद्रमाः

टीका ॥ यात्रा में युद्ध में व्यापार में खेती करने में धान्य संग्रह करने में वाद विवाद समय में गृहारंभ के समय में घात चंद्र वर्जित है ॥ १ ॥

घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च ॥
यात्रायां वर्जयेत् प्राज्ञै रन्य कर्मसु शोभनम्

टीका ॥ यात्रा समय में घात वार नक्षत्र तिथि वर्जित है और में शुभ जानिये ॥

मेषे रविर्मघा प्रोक्ता पष्टी प्रथम चंद्रमाः ॥ वृषभे पंचमो हस्त चतुर्थी शनिरेव च ॥ १ ॥ मिथुने नवमः स्वाती अष्टमे चंद्रवासरः ॥ कर्के द्विरनुराधा च बुधषष्टी प्रकीर्तिता ॥ २ ॥ सिंहे षष्ठश्चंद्रमाश्च दशमी शनि मूलके कन्यायां दशमश्चंद्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ३ ॥ तुलेगुरुर्द्वादशी च शतं तृतीय चंद्रमः ॥ वृश्चिके रेवती सप्त दशमी भार्गवस्तथा ॥ ४ ॥ धने चतुर्थो भरनी द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ मकरे द्वसो रोहिणी द्वादशी भौमवासरः ॥ ५ ॥ कुम्भे एकादशश्चार्द्रा चतुर्थी गुरुवासरः ॥ मीने च द्वादशः सार्पे द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ६ ॥ ५ ६ ॥

सत्वंतुचंद्रगुरुवोकुजभृगुराजसोगुणोघातः
रविशनिचंद्रसुतानांशध्नीनांतामसोनेष्टाः १

टीका ॥ बृहस्पतिवार सोमवार को सतोगुणघात मंगल वा शुक्र को रजोगुण घात रविवार शनिवार बुधवारको तमोगुण घात जानना ॥ १

धनुमीनकुलीराणां घातः सत्यो विनिर्दिष्टोत
तुलालिवृषमेषानां घातोरजसिनिश्चितम् ॥
कन्यामिथुनसिंहचकुम्भस्यमकरस्यच ॥
घातस्तमसिवेलायां विपरीतेशुभप्रदः ॥ २ ॥

॥ टीका ॥

	रजो॰	सतो॰	तमो॰	सतो॰	रजो॰	तमो॰	गुण
रा॰ शु॰ या॰	१ २ ७ ८	४ ९ १२	३ ५ ६ १० ११	चंद्र बृह	भौम भृगु	सूर्य शनि बुध	वारः

होराकथनंशकुन ॥ वारात षष्ठस्यसप्तस्यहोरासार्द्धद्विनाडिका । अर्कशुक्रोवुधश्चंद्रोमंदोजीवधरासुतो १ गुरुविवाहेगमनेचशुक्रोवोधेसौम्यःसर्वकार्येषुचंद्रः । कुजेचयुद्धेरविराजसेवामंदेचवित्तं इतिहोरयोगः । यस्यगृहस्यवारेपिकर्मकिंचित प्रकीर्तितम् । तस्यगृहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ३ ॥

टीका ॥ जिस वारका होरा होय उसीमें प्रथम २ घटिका होरा तिसके छटे वारकी दूसरी होरा इसी क्रमसे दिवसके १२ होरा जानिये रविकी होरा राजसेवा को शुभ दूसरी शुक्रकी गमनका शुभ तीसरी बुधकी ज्ञानप्राप्ति को शुभ चौथी चंद्रमाकी सर्व कार्य को शुभ पांचवी शनिकी द्रव्यसंग्रह को शुभ छठी गुरूकी विवाह को शुभ सातवीं मंगलकी होरा युद्धको शुभ इस प्रमाण होराका क्रम जानिये और जिस २ ग्रहका जो जो वार जिसमें कहा जो कर्म सो उसकी होरामें करावै ॥ १ ॥

(सूर्य का होरा)

सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच ॥
काकत्रयद्वौनकुलौतथैवचाषस्तथैकोवृषभस्तुगोश्च १

पिशाचगृध्रोविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः१

टीका ॥ शनिकीहोरामेंनग्नमुसलमान रजस्वला स्त्री प्रेत पिशाचगीध पक्षी विधवास्त्री अग्नि नपुंसक प्रचंडतरुण पुरुष ये शकुन मिलें ॥१॥

(मनु का वाक्य)

गमनंप्रतिराजेंस्तु सन्मुखादर्शनेनचू ॥ श्रु

तस्तांश्चैवसंभाषेत्सर्वान्नेताश्च कीर्तयेत१

टीका ॥ मनु का वाक्य राजा प्रति कहते हैं - गमन काल में पूर्वोक्त शकुनों का कीर्त्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तो मन में स्मरण करके गमन करे तो शुभ है ॥ १ ॥

(वारानुसार वस्त्र धारण)

रवौ नीलं बुधे पीतं कृष्णं वाणि शनि श्चरे ॥ श्वे

तंगुरौभृगौ भौमे रक्तं सोमेतुचित्रकम ॥ १ ॥

टीका ॥ रविवार को नीला वस्त्र - बुध को पीत - शनि को काला गुरु शुक्र को श्वेत पीत - मंगल को रक्त सोम को चित्र विचित्र इस प्रकार वस्त्र धारण करके गमन करे ॥ १ ॥ (यात्राप्रकरणं)

हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥ प्रो

क्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपंचादिमसप्ततारा:

टीका ॥ हस्त मृगशिर अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ हैं परंतु ३।५।७ ये तारा नेष्ट हैं ॥ १ ॥

रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥ षा

ढोत्तराभाद्रविश्वेप्रयाणेमध्यमास्मृता: ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढ उत्तराभाद्रपद उत्तराषाढ ये नक्षत्र यात्रा में मध्यम जानना ॥ १ ॥

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीकृत्तिकातथा स

र्पः स्वाति विशाखा च नित्यं गमनवर्जिता: ॥

टीका ॥ तीनों पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी कृत्तिका श्लेषा स्वाति विशाखा ये नक्षत्र यात्रा में वर्जित हैं ॥ १ ॥ (आवश्यके वर्ज्यानि)

भौमार्कभृगुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमां दिशाम्
टीका ॥ पश्चिम दिशा को रोहिणी पुष्य षष्टी ६ चतुर्दशी १४ मंगल रवि शुक्र इनमें न जाय ॥ १ ॥

करे चोत्तरफाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा । बुधो रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरां दिशाम् ॥ १ ॥ ॰ ॥

टीका ॥ हस्त उत्तरा फाल्गुनी दूज २ दशमी १० बुध रवि भौम इन में उत्तर दिशा को गमन न करे ॥ १ ॥

(विदिक्शूल)

ईशान्यां से शनौ शूले आग्नेय्यां गुरु सामयोः वायव्यां भूमि पुत्रेषु नैऋत्यां शुक्र सूर्ययोः ॥ १ ॥

टीका ॥ बुध शनि में ईशान को वर्जित है गुरु और सोम वार में आग्नेय कोण में गमन कीजिये मंगल को वायव्य में शुक्र और रवि को नैऋत दिशा को गमन कीजिये ॥ १ ॥

(शूलदोष निवारणभक्ष्य)

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ॥ गुडमंगारवारे तु बुधवारे तिलानपि ॥ गुरुवारे दधि ज्ञेयं भृगुवारे यवानपि ॥ माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूलदोषोपशांतये ॥ २ ॥ ॰ ॰ ॰ ॥

टीका ॥ सूर्य को घी सोम को दूध मंगल को गुण बुध को तिल बृहस्पति को दधि शुक्र को जव शनि को माष ये भक्षण करके गमन करे तो शूल दोष दूर होय ॥ २ ॥

(कुंभमीन के चंद्रमा में वर्जित कर्म)

शय्या वितानं प्रेताग्नि क्रिया काष्ट तृणार्जनम् याम्य दिग्गमनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभ मीनगे ॥ १ ॥

टीका ॥ पलंग बुनाना और प्रेत क्रिया और तृण काष्टादि संग्रह दक्षिण को गमन ये काम कुंभ मीन के चंद्रमा में न करे वर्जित है ॥ १ ॥

(सन्मुख चंद्र का विचार)

करणभगणदोषं वार संक्राति दोषं कुतिथि कुलिक दोषं यामयामार्द्ध दोषम् ॥ कुज शनि रवि दोषं राहु केत्वादि दोषं हरति सकल दोषं चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥ १ ॥

टीका ॥ करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मंगल शनि

टीका ॥ पड़वा सिद्ध की देने वाली कही – द्वितीया कार्य की साधन करने हारी कही – तृतीया आरोग्य की करने हारी कही – चौथ कलह की करने हारी – पंचमी ज्ञान की देने वारी – षष्टी अशुभ करने वाली – सप्तमी शुभ की देने वारी – अष्टमी व्याधि की दूर करने वाली – नवमी मृत्यु करने वाली – दशमी धन देने वाली – एकादशी शुभ करने वाली – द्वादशी प्राण की संदेह करने हारी – त्रयोदशी शुभ की देने वाली – चतुर्दशी उग्र कर्म की करने हारी – पूर्णिमा पुष्ट की देने वारी – अमावास्या अशुभ की करने हारी जानिये ॥४॥

तिथियों के स्वामी

वह्निर्विरंच्यो गिरजा गणेशः फणिर्विशाखो दिनकृन्महेशः ॥ दुर्गान्तको विश्वहरिस्मरश्च सर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥१॥ अमायाः पितरः प्रोक्ता स्तिथीनां मधिपा क्रमात् ॥ २ ॥

टीका ॥ पड़वा का स्वामी अग्नि – द्वितीया का स्वामी ब्रह्मा – तृतीया का स्वामी गोरी – चौथ का स्वामी गणेश – पचमी का स्वामी सर्प – षष्टी का स्वामी स्वामिकार्तिक – सप्तमी का स्वामी सूर्य – अष्टमी का स्वामी शिव – नवमी का स्वामी दुर्गा – दशमी का स्वामी यम – एकादशी का स्वामी विश्वेदेवा – द्वादशी का स्वामी हरि – त्रयोदशी का स्वामी कामदेव – चतुर्दशी का स्वामी शिव – पूनों का स्वामी चंद्रमा – अमावस का स्वामी पितर – यह तिथियों के स्वामी कहे ॥१॥२॥

तिथि संज्ञा

नंदाच भद्राच जयाच रिक्ताः पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ॥ कनिष्टमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवत्युत्तम मध्य हीनाः ॥१॥

टीका ॥ पड़वा १ छठ ६ एकादशी ११ यह नंदा तिथि जानिये – दूज सप्तमी ७ द्वादशी १२ यह भद्रा तिथि जानिये – तीज ३ अष्टमी ८ तेरस १३ यह जया तिथि जानिये – चौथ ४ नौमी ९ चौदश १४ ये रिक्ता

(वारानुसार कालवासा)

अर्कोत्तरे वायु दिशाच सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋतेच
याम्येगुरौ वह्नि दिशाच शुक्रे मंदेच पूर्वे प्रवदंति कालम्

टीका ॥ रविवार को उत्तर में काल सोमवार को वायव्य में मंगल को पश्चिम में बुध को नैऋत में गुरु को दक्षिण में शुक्र को आग्नेय में शनि को पूर्व में इस प्रमाणसे कालादिक भूल वार अनुसार जानिये ॥ (फलं)

रवि दिन गुरु पूर्वे सोम शुक्रे च याम्ये वरुणदिशि तु भौमे
चौत्तरे सौरि संस्थे ॥ प्रति दिन मति मत्वा कालराहु दिशा
नां सकल गमन कार्ये वाम पृष्टे च सिद्धिः ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ रवि गुरु को पूर्व को गमन करे तो काल राहु वाम पृष्टभागी जानिये जिसमें गमन करे तो सिद्धि होय सोम शुक्र में दक्षिण को गमन करे। भौम को पश्चिम को शनि को उत्तर को गमन करे तो कार्य सिद्ध होय॥१

क्षुधित राहु ॥ इंद्रे वायौ यमे रुद्रे तोये ग्नौ शशि रक्षसोः
यामार्द्धं क्षुधितो राहुर्भ्रमत्येव दिगष्टके । नतिथिर्नच नक्षत्रं
न योगो नच चंद्रमाः सिद्ध्यंति सर्व कार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ

टीका ॥ पहले पहर में क्षुधित राहु पूर्व में जानिये दूसरे में वायव्य में तीसरे में दक्षिण में चौथे में ईशान में पांचमें पश्चिम को षष्ट में अग्नि कोण को सप्तम में उत्तर में को अष्टम में नैऋत्य को इस प्रमाण से आठ दिशाओं में भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भाग में स्थित रवि विचार के गमन करे तो तिथि नक्षत्र दिशा का दोष जाता रहै और समस्त कार्य सिद्धि होय॥१॥

काल कोष्ठ

कालं पलं घातक लोह पात वडवानलः खड्ग कचोलि कांति
काः नखाश्चतु र्विंशतिषट्तथा दिक रुद्रा धृति र्वेद गुणाः क्रमेण
तिथ्या युतं वेद सुभाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदंति ॥ फल
॥ कालं च पृष्टे फल सन्मुखेन घातं च लोहं तृड वांश्च पृष्टे खड्गं च
चाग्रे कवचं च वामे कांतिश्चयो ज्यादिशि दक्षिणस्यात् ॥ ॥

टीका ॥ काल कहां है तिसका जानना - कालों के नाम १ काल २ पल ३ घातक

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और चंद्रमा दोनों हों तो हानि भंग संहार जा॰ ॥

धर्म मार्गे गते सूर्ये कामांशे चन्द्रमा यदि विग्र
हे दारुणं चैव चौरा कुल समुद्भवम् ॥ ३ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य होय और काम मार्गी नक्षत्रों में चंद्रमा होय तो विग्रह दारुण और चोर भय होय ॥ ३ ॥

धर्म मार्गे गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष गते यदि ॥ गृ
हाल्लाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशय:

टीका ॥ धर्म मार्गी सूर्य मोक्ष मार्गी चंद्रमा होय तो गृहा लाभ मार्ग में सुख होय ॥ अर्थ मार्गे गते सूर्ये चंद्रे धर्म स्थिते यदि गज
लाभो भवेत्तस्य तत्र श्री सर्वतो मुखी ॥ ५ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य हो और धर्म मार्गी चंद्रमा हो तो लाभ सुख करे सदा ॥

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥ प्रथमं
जायते कार्य तत्र भंगो भविष्यति ॥ ६ ॥ ५ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और चंद्र मार्गी दोनों होय तो पहले पहल कार्य करे और पीछे कार्य भंग करे ॥ ६ ॥

अर्थ मार्गे गते सूर्ये चंद्रे कामांश संस्थिते
सर्व सिद्धि भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशय:

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और काम मार्गी चंद्र होय तो सब काम सिद्ध होय ७ ॥ अर्थ मार्गे गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष स्थिते यदि
भूमि लाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्त: सुखी भवेत्

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य होय और चंद्रमा मोक्ष मार्गी होय तो हर्ष युक्त भूमि लाभ होय मार्ग में सुखी रहे ॥ ८ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते
गजाश्वाश्व विलभ्यंते राज सन्मान संभवेत्

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोड़ा पृथ्वी इनकी लाभ करावे और राज्य सन्मान पावे ॥ ९ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते

गमन शुभ है बृहस्पति के मत से शकुन अंगिरा के मत से उत्साह मन का और जनार्दन के मत से गमन में विप्र वाक्य शुभ जानिये ॥ १ ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनो जन्म नक्षत्राद्दीन नक्षत्रमेवच । एकीकृत्वाहरे द्भागं नंद शेषे च वाहनं । रासभोश्वो गजो मेषो जंबुकः सिंहसंज्ञकः काकश्चैवं मयूरश्च हंस इत्ये ववाहनं । फलं । रासभो अर्थलाभश्च धन लाभश्च वाहने । लक्ष्मी प्राप्तिर्गजाख्ये यं मेषे च मरणं ध्रुवं ॥ जंबुके स्वल्पलाभश्च सर्व सिद्धिश्च सिंहगे । काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सुखावहम् ॥ हंसे तु सर्व सिद्धिः स्याद्वाहनानां फलं स्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अपने नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने और नव का भाग दे शेष बचे सो वाहन जानिये एक बचे तो गर्द्धभ तिसका फल और लाभ दो बचें तो घोड़ा धन लाभ तीन बचें तो हाथी अभीष्ट लाभ चार बचें तो मेढा मरण तुल्य-५ बचें तो जंबुक स्वल्प लाभ-६ बचें तो सिंह कार्य सिद्धि-७ बचें तो काक निष्फल कहा है-८ बचें तो मोर सुख प्राप्ति-९ बचें तो हंस सर्व सिद्धि ये फल जानिये ॥

(अंक महूर्त्त)

तिथयः पक्ष गुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्चताः
वारास्युर्वै त्रिगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः॥
चतुर्गुणानि भान्यंगभाजितानि यथाक्रमम्।

टीका ॥ जिस तिथि में गमन करना चाहिये उसे दूनी करे सात का भाग दे और वार को तिगुणा करे आठ का भाग देय और नक्षत्र को चौगुणा करे सात का भाग देय जो शेष ३ अंक बचें तो शुभ जानिये और शून्य बचें तो अशुभ जानिये ॥ १ ॥

(फलं)

पीडास्यात्प्रथमे शून्ये मध्ये शून्ये महद्भयम् ॥
अंत्यशून्ये तु मरणं त्र्यंकेच्च विजयी भवेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रथम तिथि के भाग का शून्य बचे तो पीडा करे दूसरे वार के भाग में शून्य बचे तो बड़ा भय करे तीसरे नक्षत्र के भाग में शून्य बचे तो मरण करे तीनों जगह अंक बचें तो शुभ जानिये ॥ (भ्रमणाडल महूर्त्त)

करे गुरु को ७ पद हो तो गमन करै और रवि शनि सोम शुक्र इन वारों में ८ पद छाया हो तो गमन करै ये मुहूर्त गुण युक्त सर्व कार्य कर्त्तव्य लिखे ॥ १ ॥

काकशब्द शाकुनं ॥ काकस्य वचनं श्रुत्वा पादछायांतु कारयेत । त्रयोदशयुतां कृत्वा षड्भिर्भागमाहरेत् ॥ फलं ॥ लाभः खेदः स्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमः ॥ अशुभं च क्रमेणैव गर्गस्य वचनं यथा ॥ २ ॥

टी० ॥ काक का शब्द सुनि के अपने पादों छाया में १३ मिलावे और ६ का भाग दे शेष रहे तिस का फल १ शेष रहे तो लाभ २ बचें तो खेद ३ बचें तो सुख ४ बचें तो भोजन की प्राप्ति ५ बचें तो धन लाभ और शून्य हो य तो अशुभ जानिये ॥ २ ॥

पिंगला शब्द शाकुनं ॥

उल्हासः किल्बिले चैव चिल्पि भोजनं तथा ।
भंजनं रिवरि रिवि स्यात् कुकुशब्दे महद्भयम् ॥ १

टी० ॥ जो किल्बिल शब्द होय उल्लास होय और चिल्पिल शब्द होय तो भोजन प्राप्ति खिट शब्द हो तो बंधन करे कुकुर शब्द हो तो बहुत भय करे ॥ १ ॥

[illegible] पद छाया शाकुन

बुधैः छिंकारव श्रुत्वा पाद छायां च कारयेत् ॥ च योदश युतां कृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १ ॥ फलं ।
लाभः सिद्धिः हानि शोक भयं श्रीर्दुःख निष्फले ॥
क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेणोक्तं यथोदितम् ॥ २ ॥ २

टी० ॥ छींक का शब्द सुन के अपनी छाया नापै तिसमें १३ मिलावे ८ का भाग दे शेष रहे तिसका फल १ शेष रहे तो लाभ २ रहें तो लाभ ३ रहें तो कार्य सिद्धि ४ रहें तो हानि ५ रहें तो शोक ६ रहें लक्ष्मी ७ रहें तो दुःख शून्य रहे तो निष्फल ऐसा गर्गादि मुनि कहते हैं ॥ २ ॥

(छींक शाकुन)

छिंका प्रश्नं प्रवक्ष्यामि पू[illegible]भ फलं ॥ आग्नेय्यां शोक दुःखं स्यात् दक्षिणे तथा ॥ १ ॥ नैऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणं । वायव्ये धन लाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ।

अध्याञ्च दक्षिणो पादे वामे वंधु विनाशनं॥ स्त्रीनाशस्यात् पादमध्ये पादांते मरणं भवेत। पत्न्याः अयतने ज्ञेयं सरट स्याधिरोहणं। यत्नोद्युक्तं मनुष्यस्य शुभाशुभादि सूचकम॥ तिलमाषादि दत्वा देयं द्विजन्मने। पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मंत्रं षडक्षरं॥२०॥ प्रातस्त्वहस्त्रं मथवा सर्वदोष निवहेणम्॥ शिवालये प्रदद्याद्वै दीपं दोषोपशांतये॥२१॥

टी०॥ मनुष्योंके गमन समयमें अंग पर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरै अथवा गिरगट चढ़े तो शुभाशुभ फल स्थान अंग के अनुसार जानना कहते हैं कि छिपकली गिरे वा गिरगट चढ़े तो वस्त्र सहित स्नान करे तिल उड़द ब्राह्मण को दे शिवालय में जाय के शिव को नमस्कार करि षडक्षर ११०० शिव मंत्र का जप करावे तो दोष दूर होय॥२१॥

१शिर	राज्य प्राप्ति	११वामबाहु	राज्यभय	२१ऊरूपर	घोड़ाला०
२कपाल	बंधुदर्शन	१२कंठ	शत्रुनाश	२२दहिनापर	धनक्षय
३भृकुटी	राजसन्मान	१३स्तनोंपर	दुर्भाग्य	२३वा०गाणवं०	कीर्ति
४उत्तरोष्ठ	धनक्षय	१४उदरपै	शुभ	२४नरव	धनलाभ
५अधरोष्ठ	ऐश्वर्य	१५पृष्ठपर	वुद्धिनाश	२५मुरवपर	मिष्टभोजन
६नासिका	व्याधि	१६जानुपर	शुभ	२६टकनोंपर	बंधन
७दा०कान	आयुष्य	सिरपर ७	शुभ	२७कोशोंपर	मरण
८वा०कान	बहुलाभ	१८हाथोंपर	वस्त्रलाभ	२८दहिनापद	मार्गचलै
९ नेत्र	बहुलाभ	१९कंधोंपर	विजय	२९वायापद	बंधुनाश
१०दाढ़	राजसमारा	२०नाभिपर	बहुधन	३०पा०मध्य	स्त्रीनाश

अंग स्फुरण मनुः

ब्रुहि मेत्वं निमित्तानि अशुभानि शुभानिच
सर्व धर्म भृतां श्रेष्ठ त्वंहि सर्व विदुच्यसे १

टी०॥ मनु मत्स्य प्रति प्रश्न करे हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ शुभाशुभ फल वर्णन कीजिये॥

अंगस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत्
अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च २

२० नाभिमें २१ आंतोंमें २२ जानुसंधि	स्थानभ्रंश धन प्राप्ति वली शत्रुसेसंधि	२३ जंघकेएकदे २४ पाओंमें २५ तलुओंमें	देशका स्वामी उत्तम स्थानसे पाप का गमन

स्त्रियों का अंग स्फुरण

लांछनं पीडकंचैव ज्ञेयं स्फुरण वत्तया॥ विप र्ययेन विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः॥१॥ द क्षिणे विप्र प्रास्तेंग प्रशस्तंस्या द्विशेषतः॥

टी०॥ स्त्रियोंका अंगस्फुरणभी सब्यमें पुरुषोंही के समान है परंतु और सब स्थानों में पुरुष से विपरीत है अर्थात् वाम भाग शुभ जानिये॥१॥

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्य शस्तस्य च निंदितस्य। अनिष्ट निर्दोषगमे द्विजानां कार्यं सुवर्णौ ननु तर्पणंस्यात् २

टी०॥ हे राजा अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे सुवर्णदान करे तो अंग स्फुरण का दोष जाय॥२॥

नेत्रास्योर्द्ध हरति सकलं माल संदुःखजातं नेत्रोपांते दि शतिच धनं नासिकांतेच मृत्युः॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसक लसंगरे भङ्ग हेतुर्वामे चैतत्फलम वि फलं दक्षिणे वैपरीत्यम्

टी०॥ स्त्रीणां विपर्ययो नेत्रों के ऊर्द्ध प्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण हो यतिसका फल कहते हैं नेत्रों के ऊपर पलकमें स्फुरणहोय तो मनका दुः खजाय धनकी प्राप्ति होय और नासिका के निकट स्फुरणहोय तो मृत्युक ष्ट अधरके नीचे के पलक में स्फुरण हो तो युद्ध में पराजय होय ये फलवा यें नेत्रके जानिये जो पुरुष का दाहना और स्त्री का बायां अंग शुभ जानो॥

त्रिशूलयंत्र॥ रोगिणोच युद्धाद्यर्क्ष दिनाद्यर्क्षं चयु ञ्जतः॥ कृतिकागमने स्याद्यन्यत्र रविदीयते॥२॥

टी०॥ रोगी का प्रश्न त्रिशूल मध्याग्रमें जिस नक्षत्र का मंगल होय तिस को देखे और चंद्रमा जिस स्थान विषे यंत्र में होय तो फल देखै इस प्रकार से आगे फल जानिये - युद्ध में जाना होय तो दिवस नक्षत्र से सूर्य्य

टी०। धन मेष तुला इन में गमन करे तो कार्य विलंब से होय और मकर कुंभ वृश्चिक इन में गमन करे तो मृत्यु तुल्य कष्ट सिंह कर्क वृष इन में कार्य सिद्ध होय मिथुन कन्या मीन इन में गमन करे तो अन्न धन शुभदायक जानिये

द्वादश स्थानों के अनुसार यात्रा लग्न में ग्रह प्रथम स्थान

जन्मस्थं चाष्टमं त्याज्यं लग्नं द्वादशमेव च ।

ग्रहाणां च बलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः

टी०॥ लग्न और अष्टम द्वादश इन में पाप ग्रह वर्जित ग्रह बल देखि गमन करे तो विजय कार्य सिद्धि होय ॥

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिध्यंति कार्याणि च पंचभेऽह्नि। राज्यास्य दंवा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये ग्रहभाव शुक्रा

टी०॥ लग्न में गुरु वा बुध शुक्र ये होय तो पंच दिवस में तथा एक मास में राज्य सुख देश लाभ ये होंय ॥ २॥

दूसरे स्थान के फल॥ जीवो बुधो वा भृगुनंदनो

वा स्थाने द्वितीये गमनस्य काले। सुवस्त्रलाभं

चतुरंगलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशाह्नि ।२

टी०॥ दूसरे स्थान में गुरु बुध अथवा शुक्र होय तो वस्त्र तुरंग लाभ एक मास मध्य में वा चोदह दिन में सिद्ध होय ॥ २॥

क्रूरा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभिरेव मासैः। वित्तस्य नाशं विदधाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदंति

टी०॥ इन में से कोई भी होय तो तीन मास में मृत्यु और वित्त नाश होय यह मुनीश्वरों ने कहा है ॥ २॥

स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्य सूनुश्च निशापतिश्च करोति कार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण २

टी०॥ तीसरे स्थान में गुरु शुक्र वा चंद्रमा बुध होय तो दो पक्ष में अथवा तीन दिन में कार्य सिद्धि होय ॥ २॥

क्रूरास्तृतीये गमने यदा तु नरस्य भौमाः शुभदा हि कार्ये तथा परे चेन्नभवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ३

लग्ने चरे वा यदि वास्थिरे वा मास त्रये णापि च एक मासः॥
टी०॥ दशमस्थान में शनि आदि ले पाप ग्रहों को छोडि के सौम्य ग्रह
चर अथवा स्थिर लग्न में हो तो ३ मास वा एक मास में कार्य सिद्धि होइ

लाभ स्थितौ गुरु बुधौ भृगुनंदनो वा क्रूरश्च स
र्वे शशिनैव युक्ताः॥ सद्यः फलाप्तिश्च भवेच्च सिद्धि
यात्रा पक्षैक मध्ये दिवस [illegible] ॥१॥ ५ ॥ ५

टी०॥ एकादश स्थान में रवि को आदि ले पापग्रह चंद्रमा सहित अथ
वा गुरु आदि ले शुभ ग्रह होय तो १ पक्ष में वा ३ दिन में कार्य सिद्ध होइ१

सर्वे शुभा द्वादश संस्थिताश्च यात्रा भवेत्तत्र विचित्र लाभः।
पापाश्च सर्वे व्ययदा भवंति यात्रा फलं गर्ग मुनि प्रणीतम्

टी०॥ द्वादश स्थान में सर्व शुभ ग्रह होय तो लाभ होय पाप ग्रह हों तो
व्यय खर्च कारक जानिये यह यात्रा फल गर्ग मुनि कहे हैं ॥ २॥

प्रस्थान रचना॥ सुमुहूर्ते स्वयं गमना संभवे प्रस्था
कार्यम्॥ यज्ञोपवीत कं शस्त्रं मधु वस्त्राण्यथ फलं
विप्रादिकमतः सर्वे स्वर्णं धान्यां वरादिकम्॥१॥

टी०॥ मुहूर्त के समय किसी आवश्यक कार्य में आप न जा सके तो
प्रस्थान करना योग्य है उस की विधि ब्राह्मणादिक को ब्राह्मण यज्ञो
पवीत क्षत्रिय को शस्त्र वैश्य को मधु और शूद्र को फल इस क्रम
से जानिये सुवर्ण वस्त्र धान्य ये सब को युक्त है ॥१॥

प्रस्थान कितने दिवस तक उपयोगी है ॥

राजादशाहं पंचाहमन्यो न्यश्च स्थितो भवेत्॥
अंग प्रस्थान संपूर्णो वस्त्र प्रस्थान के अर्धके २

टी०॥ राजाओं को प्रस्थान करने पर दश दिन का औरों को ५ दिन
तक मुहूर्त उपयोगी रहता है परंतु वस्त्र प्रकार स्थान में आधा
फल जानिये और अंक के प्रस्थान में पूर्ण फल जानिये ॥२॥

प्रस्थान के स्थान का विचार॥ गेहाद्गेहांतरं गर्गः सीम्नः
सीमांतरं भृगुः॥ बाणास्त्येयं भरद्वाजो वसिष्ठो नगराद् [illegible] १

कंया युक्त पुरुष पापी पुरुष दीन अथवा नपुंसक ये भी अशुभ जानिये॥

आयः पंकस्तथा चर्म केश बंधन मेवच ॥

तथैवोद्धृत साराणि पिण्याकादि तथैवच

टी०॥ लोहा कीच चर्म केश बांधता हुआ मनुष्य जिस के सार निकाल लिये हैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक ये भी अशुभ जानिये॥१॥

चांडालस्य शवं चैव राज बंधन पालकाः॥

वधकाः पाप कर्माणो गर्भिणी स्त्री तथैवच १

टी०॥ चांडाल प्रेत बंधुओं के रक्षक वध कर्त्ता पापी पुरुष गर्भिणी स्त्री यह भी अशुभ जानिये॥१॥

तुषं भस्म कपालास्थि भिन्न भांडानि यानिच। रक्तानि चैवकुंडानि मृत सारंग एवच॥ एवमादीनि चान्यानि न प्रशस्तानि दर्शने

टी०॥ भूसी भस्म कपाल अस्थि रीते वा फूटे वर्त्तन मारा हुआ सारंग पक्षी यह यात्रा काल में हानि कारक जानिये॥२॥

क्व यासि तिष्ठ आगच्छ किं ते तत्र गतस्यतु॥

अन्य शब्दाश्च ये नि [illegible] अपि

टी०॥ कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जाने से तुम को क्या होगा ये और भी अनिष्ट शब्द विपत्ति कारक होते हैं॥१॥

ध्वजादौ वायसास्थानं क्रव्यादान विगर्हितं

स्खलनं वाहनानांच वस्त्र संगस्तथैवच।१।

टी०॥ ध्वजा वा पताका के ऊपर काक बैठे अथवा अग्नि दान और वाहनों को गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष ये भी अशुभ जानिये॥

दृष्टं निमित्ते प्रथमं अमंगल्य विनाशनम्॥

केशव पूजये द्विद्वान् स्तवे न्नर्म सेवनम् ३

टी०॥ यात्रा के समय प्रथम में जो अमंगल दृष्टि आवे तो नाश कारक है य इस के निवारण को विष्णु पूजा मधु सूदन स्तोत्र का पाठ करावे ३

द्वितीये च ततो दृष्टे तृतीये [illegible]॥

अथ वक्ष्यामि प्रवक्ष्यामि मंगलानि नृपानघ १

स्वस्तिवृद्धि निनादश्चनद्यावर्तःसकौस्तुभः
वादित्राणांशुभःशब्दोगंभीरश्चमनोहरः १

टी०॥आशीर्वाद शब्द कौस्तुभमणिवाद्यउत्तम शब्द ये विघ्ननाशकहैं

गांधारषड्जऋषभाद्येगीताःसुमधुराःस्वराः।
वायुःसध्मार्करोत्तृष्णाःसर्वे विघ्न विनाशकाः १

टी०॥गांधारषड्ज ऋषभ येराग अच्छे गायेगये हों सुर सुंदर मीठा पवन अथवाउष्ण ये सब विघ्न नाशक जानिये॥१॥

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्विजः।
अनुकूलोमृदुःस्निग्धसुखस्पर्शःसुखावहः

टीका॥ वर्णशंकर मनुष्य नीच मुसलमानादिक ये भयकरने वाले हैं ब्राह्मण को अपने अनुकूल पदार्थ और सुख स्पर्श मनुष्य आदि सुखकारी होते हैं॥१॥

शस्तान्येतानि धर्मज्ञ यत्स्यान्मनसःप्रियः
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम् १

टी०॥हे धर्मज्ञ पहलेकहे हुए शकुन शुभ जानिये और अपने मनको प्यारी वस्तु होय उसका दर्शनउत्तम पुष्टि कारकजय दायकजानिये॥१॥

यत्तोत्सुखत्वंमनसःप्रहर्षःशुभस्यलाभो
विजयप्रवादः॥मांगल्यलब्धिःश्रवणंच
राज्ञोज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि॥१॥९

टी०॥यात्रा के समय मन में हर्ष शुभ तथा लाभ कारक विजय वाद और मंगल प्राप्तिका श्रवण शुभ जानिये॥१॥

क्षेमंकरानीलकंठःश्चोलूकखरजंबुकाः
प्रस्थाने वामतःश्रेष्ठाःप्रवेशे दक्षिणाःशुभाः

टी०॥मोर कुत्ता उल्लू पक्षी गधा स्यार प्रस्थान समय वाम भागी होंयतो गमन मे शुभ और प्रवेश में दहने शुभ जानिये॥१॥

(अथ श्वानादि शुभाशुभ योग कहते हैं)

टीका ॥ नंदा तिथि में आनंदादि उत्सव देवी उत्साह राह संबंधी कर्म में गीत नृत्य वाजे ये करना १ भद्रा में विवाह गाडी रथ वनाना यात्रा पुष्टिकं कर्म करना २ जया में युद्ध कर्म सेना संबंधी कर्म तलवार ध्वजा वनानी ये कर्म सिद्धि होते हैं ३ रिक्ता में धात कर्म विषकर्म शस्त्र प्रयोग उग्र कर्म करना पूर्णा में विवाहादि शुभ कर्म शांतिक पौष्टिक कर्म करना मावस में पितृकार्य करना ॥

सं·	तिथि	फल	स्वामी	नाम	शुक्ला	कृष्णा	नकरेशो
१	पड़वा	सिद्धिदा	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	पेडा
२	द्वितीया	कार्यसा	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेढ
३	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	नोंन
४	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	आमखयदे
६	षष्टी	अशुभ	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तैल
७	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आवला
८	अष्टमी	व्याधिना	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	नवमी	मृत्य	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफ·
१०	दशमी	धनदा·	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	एकादशी	शुभ	विश्वेदेवा	नंदा	शुभ	अशुभ	दरिया
१२	द्वादशी	अशुभ	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	त्रयोदशी	सर्वसिद्धी	मदन	जया	शुभ	अशुभ	वेंगन
१४	चौदश	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	सहतक्षी·
१५	पूनों	पुष्टिदा	चंद्रमा	पूर्णा	शुभ	अशुभ	जूआ
३०	मावस	अशुभ	पितर	०	०	०	स्त्री संग

अष्ट दिशाओं के स्वामी

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधः

योगों के नाम		रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१	आनंद	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु·	उ·षा	शत	सिद्धि
२	कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि·	पू·भा·	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति·	पुन·	पू·फा	स्वाति	मूल	श्रव·	उ·भा	असुख
४	प्रजापति	रोहि·	पुष्य	उ·फा	विशा	पू·षा·	धनि	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्यः	मृग·	श्लेषा	हस्त	ऽनु·	उ·षा	शत·	अश्वि	अतिसौख्य
६	ध्वांक्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि·	पू·भा	भरनी	धनक्षय
७	ध्वजः	पुन	पू·फा	स्वाति	मूल	श्रव·	उ·भा·	कृत्ति·	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ·फा	विशा	पू·षा	धनि·	रेवती	रोहि·	सौख्य
९	वज्र	श्लेषा	हस्त	ऽनु	उ·षा	शत·	अश्वि	मृग	क्षयकृत
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि·	पू·भा·	भरनी	आर्द्रा	लक्ष्मीनाश
११	छत्र	पू·फा·	स्वाति	मूल	श्रव·	उ·भा	कृत्ति	पुन·	राज्यसन्मान
१२	मैत्र	उ·फा	विशा	पू·षा	धनि	रेवती	रोहि·	पुष्य	पुष्टिकरता
१३	मानस	हस्त	ऽनु·	उ·षा	शत	अश्वि	मृग	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्माख्यं	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	पू·भा	भरनी	आर्द्रा	मघा	धनकीप्राप्ति
१५	लंबक	स्वाति	मूल	ऽनु·	उ·भा	कृत्ति	पुन·	पू·फा	धनकीहानि
१६	उत्पात	विशा	पू·षा	धनि	रेवती	रोहि·	पुष्य	उ·फा	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा·	उ·षा	शत	अश्वि	मृग	ऽश्ले·	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	ऽभि	पू·भा	भरनी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रव	उ·भा	कृत्ति	पुन·	पू·फा	स्वाति	कामसिद्धि
२०	शुभः	पू·षा·	धनि	रेवती	रोहि·	पुष्य	उ·फा	विशा	जयहोय
२१	अमृत	उषा·	शत	अश्वि	मृग·	ऽश्ले	हस्त	ऽनु·	राज्यसन्मान
२२	मुसल	ऽभि	पू·भा	भरनी	आ·	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनकानाश
२३	गदाख्य	श्रवण	उ·भा	कृत्ति	पुन	पू·फा	स्वाति	मूल	अखंडविद्या
२४	मातंग	धनि	रेवती	रोहि·	पुष्य	उ·फा	विशा	पू·षा·	कुलकावृद्धि
२५	राक्षस	शत	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	ऽनु·	उ·षा·	अति काष्ठ
२६	चर	पू·भा·	भरणी	आ·	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि·	कामसिद्धि

अमृत सिद्धि योग ॥ आदित्य हस्ते गुरु पुष्य योगे बुधानुराधा शनि रोहिणी च ॥ सोमे च विसुभ गुरे वती च भौमाश्विनी चामृत सिद्धि योग: ॥ २१ ॥
टीका चर योगादिक और सात वार कोष्टक में लिखते हैं तिनमें जिस वार को नक्षत्र वा तिथि होय सो योग उस दिन जानना ॥

योगों के नाम		सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फ.
१	चरयोग	पू. षा.	आर्द्रा	विशा.	रोहि.	पुष्य	मघा	मूल	न.
२	कृतदग्ध	१२	११	१०	९	८	७	६	ति.
३	दग्धा	१२	११	५	३	६	८	९	ति.
४	मृत्यु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ति.
५	सिद्धि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ति.
६	उत्पात	विशा.	पू. षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	न.
७	मृत्यु	ज्ये	उ. षा.	शत	अश्वि.	मृग.	श्ले.	हस्त	न.
८	काल	ज्येष्ठा	अ.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	विशा.	न.
९	सिद्धि	मूल	श्र.	उ. भा.	कृति.	पुनर्व.	पू. फा.	स्वाति	न.
१०	शुभ दग्धा	मघा धनिष्ठ	मूल विशा.	कृति. रोहि.	पू. षा. पुनर्व.	उ. षा. अश्वि	रोहि. अनु	श्रवण शतिभि.	न.
११	यमघं.	मघा	विशा.	उ. षा.	मूल	कृति.	रोहि.	हस्त	न.
१२	मुसलक.	भरणी	चित्रा	अश्वि	धनि.	उ. षा	ज्येष्ठा	रेवती	न.
१३	अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	आर्द्रा	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि.	न.

दास चक्रम्
नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे भृत्यसंग्रहे ॥ मूर्ध्नि त्रिषु स्थिरो लाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनं ॥ हृदि पंच धनं धान्यं पादे षट् दरिद्रता पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो

नक्र मिले उनमें से ३ तीन मस्तक पर लाभदायक मुखमें २ हानि पेरों पर ६ अर्थलाभ हृदयमें ५ मुख स्तन में ६ महालाभ अंग पर स्थ झना पृष्ठ गुह्य पर ४ भय जानिये भैंस वा लेनी होय तोभी इसी क्रम से शुभ अशुभ फल जानिये परंतु सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक मिले और बैल लेना होय तो भी यही क्रम जानिये परंतु पैरों पर २ नक्षत्र धरे और शेष स्थानों में छेहे नक्षत्र धरे गाय के समान शुभाशुभ जानिये ॥२॥

(अश्व लेने का मुहूर्त)

अश्वेतु सूर्य भां चैव साभिजिद्वाजि विन्यसेत् ॥
पुच्छे द्वयं तत श्चाङ्घ्रौ चत्वारि हृतु वर्क्षे ॥ उदरे।
पंचमे पिठया शुक्रे द्वय अंको मिले ॥ फलं ॥ सो
आप्य मर्थ लाभश्च स्त्रीनाशो रण भंगता ॥ ना
शश्च अर्थ लाभश्च फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ४

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे इस क्रम से स्थानों का फल कंधे पर ५ सौभाग्य पीठ पर १० अर्थ लाभ पूंछ पर स्त्रीनाश पैरों पर ४ रणभंग उदर पर ५ नाश मुख में अर्थ लाभ ऐसे फल जानिये ॥४॥

(हाथी लेने का मुहूर्त)

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभांतं च सूर्यभात् ॥ च
त्वारि शीर्षे विन्यस्य पुच्छे द्वयं तत्त्वं नयेत् ॥ शुंडायांतु
द्वयं वाज्यं वेदा पृष्ठोदरे तथा ॥ षट्कं चतुर्षु पादेषु सा
भिद्वयं च कपाल ॥ फलं ॥ शीर्षे चैव महालाभः
मस्तके लाभ एव च ॥ दंते चैव भवेल्लाभो पुच्छे हानि
र्भवेद्ध्रुवं ॥ शुंडायां तु सुखं प्रोक्तं पृष्ठे तु स्वर्ण संपदः
उदरे रोग सम्पत्तिस्तु तेषु मृत्यु र्भ्रुवं तथा ॥ पादे
ष्वभ्रमे कपाले भाग्यं चैव विनिर्दिशेत् ॥५॥ ५

टी० ॥ प्रथम सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक स्थापित करे इस क्रम

कविंध्याल मध्ये सप्त विनिर्दिशेत ॥ फलं ॥ मूले ।
तु सुख सौभाग्यं गात्रे प्रोक्तं भयं महत ॥ मध्ये सप्त
लाभाय आयुर्वृद्धि करं परम ॥१॥२॥ ३ ॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत मंचाल में नक्षत्र अंक स्थापन करे पहले मुख में ९६ सुख प्राप्ति मध्य गात्र पर ४ भय प्राप्ति आगे विध्या पर १ भय मध्य में ७ धन लाभ और आयु वृद्धि होय॥

(शर सहित धनुष चक्रम्)

सूर्य भाज्जन्म भांतंच धनुष्ये वंच योजयेत ।
चापाग्रे बाण संख्याकं शराग्रे पंच योजयेत
शर मूले तथा पंच पंच सन्धौ प्रकीर्तयेत ।
दंडे चैव तु स्याद्वै धनुष चक्र मुत्तमम् ॥ फलं
अग्रे हानिः शरे लाभो शर मूले जय स्तथा ॥
चाप संधौ च सौख्यं स्याद्दंड भंगः प्रजायते ।२।

टी०॥ सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यंत धनुष पर अंक स्थापन करने का क्रम प्रथम अग्र पर ५ हानि शर के अग्र पर ५ लाभ शर की मूल पर ५ जय फिर संधि पर ५ सुख तो बीच के दंड पर ५ राज्य भंग इन में से शुभ फल देख कर धनुष धारण करे ॥१॥२॥३॥४॥

(रथ चक्रं)

रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जन्मभं न्यसेत ॥ युगा
ग्रे त्रीणि नक्षत्राणि षट् चक्रे पुनस्तान्यसेत ॥ नक्षत्रयम्
दंडे रथाग्रे भत्रयं तथा ॥ युगे च भत्रयं देयं षड्भौ राये
तम प्राप्ति ॥ शेष मृक्षत्रयं योज्यं चक्रे तेः सर्वतो मुखे
फलं ॥ भंगो मृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्भैयाच दंड के ॥
रथाग्रे दंड अस्थान मध्ये चैव सुखं शुभम् ॥१॥२॥
बुधैरेवं फलं ज्ञेयं जन्म भांतं क्रमेणच ॥ गर्गेणोक्ता
नि चक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः ॥१॥२॥३॥ ४॥

टी०॥ रथ के आकार चक्र खींच कर उसके स्थानों पर सूर्य नक्षत्र

मौकन्यानृयुग्मेत्याख्यस्वम्याद्याराबुणा कौम्ने
षष्ठी॥ द्वादशी रिक्ता पर्वसु तथा कर्ये द्वितीया हलम् १

टी०॥ स्वाति रोहिणी उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पू
र्वाषाढ़ मघा उत्तरा फाल्गुनी श्रवण धनिष्ठा और हस्तमृग म
कृत्तिका ये नक्षत्र शुभ हैं मंगल शनि और षष्ठी सप्तमी नवमी चतुर्द
शीं पर्वनी अर्थात् मावस पूनो ३०।१५ और दोनों द्वितीया इनको
छोड़ि कें कृषि कर्म का आरंभ और बीज बोना ये करावे ॥१॥

(हलचक्रं)

त्रिकं त्रिकं त्रिकं पंच त्रिकं पंच त्रिकं त्रिकम्
सूर्यभाद्धलचक्रेषु अशुभं च शुभं क्रमात्॥ २

टी०॥ सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत गिने तिनके ८ भाग रखने
का क्रम प्रथम ३ अशुभ दूसरा ३ शुभ तीसरा तीन ३ अशुभ चौथा
५ शुभ पांचवां ३ अशुभ छठा ५ शुभ सातवां ३ अशुभ अठवां ३ शुभ
जिस नक्षत्र के भाग में दिवस नक्षत्र शुभ आवे उस दिन धारण करे

(नौकाचक्रम्)

पौष्णा॥ दितिस्वाश्वि वारुणा मित्र चित्र शीतोस्र रश्मि
वसुजीवकभान्य मुनि भवारे च जीवभृगुमंदनके प्र
शस्ते नौकादि संघटन चौहल मेदु कर्मात् ॥ ३॥

टीका॥ रेवती पुनर्वसु अश्विनी ज्येष्ठा शततारका अनुराधा चित्रा
मृगशिर हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार इनमें
नाव बनाना जल में उतारना शुभ है ॥३॥

(नौकाचक्रं)

रविभुक्तभं आरभ्य कुर्यान्नौरायुष्येन्दु षट् ॥
नाव्यां शीर्षे हानि शीर्षे पृष्ठे भूः पार्श्वे भयम् १
मुख्ये शेषे सौख्य षट् मध्ये नौका च क्षेमं संस्थितिः
उपरस्यन्त मध्ये स्ये षट् क्षेमं च पंचम सप्त ॥ ३॥

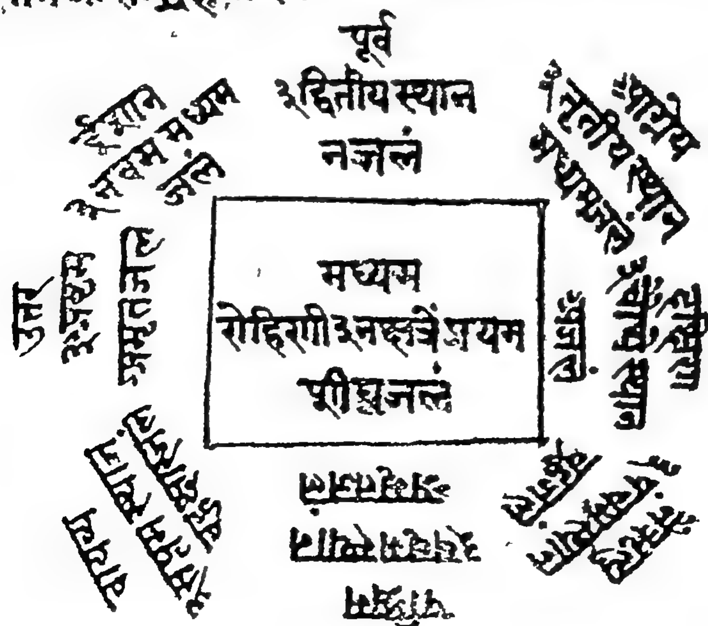
टी०॥ सूर्य नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्र लिखने का क्रम ऊपर के भाग में

पर ५ लाभ कंठ पर ९ धन प्राप्ति नयनमें ८ स्वामी मृत्यु दंड पर ५ राज्य प्राप्ति इस रीति से नक्षत्र क्रम जानिये ॥ २॥

(कूपचक्रं)

कूपे वाप्यां स्तक चक्रं वै विन्यस्य विबुधैः शुभं॥ रोहिणी गर्भमेतस्य त्रि त्रिक्रमाणि चंद्रभं॥ मध्ये पूर्वे तथाग्नेयोयाम्ये चैवतु नैर्ऋते॥ पश्चिमे चैव वायव्यां सौम्यशूद्रे त्रिक्रमात्॥ फलं॥ शीघ्रं जलं नजलं मध्यमजलं मजलं बहु जलंच॥ अमृतजलं बहु क्षारं सजलं मध्यजलं क्रमात् ज्ञेयम्॥ मत्स्ये कुलीरे मकरे बहु जलं लभेच वापीं कूपकं भयोस्त्र॥ अलौ चलौ लौ च जलं तालामृता ज्ञेवाश्च सर्वे जलदाः प्रकीर्तिताः॥ नवीन कूप अरु वापी खोदन॥

टी॰॥ रोहिणी से वर्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यंत का क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियों का चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले और वृष कुंभ इनका होय तो उसे आधा जल रहे वृश्चिक तुला इनका चंद्रमा होय तो अल्प जल रहे शेष राशियों का चंद्रमा होय तो नहीं निकले यह बात प्रसिद्ध है ॥ २॥

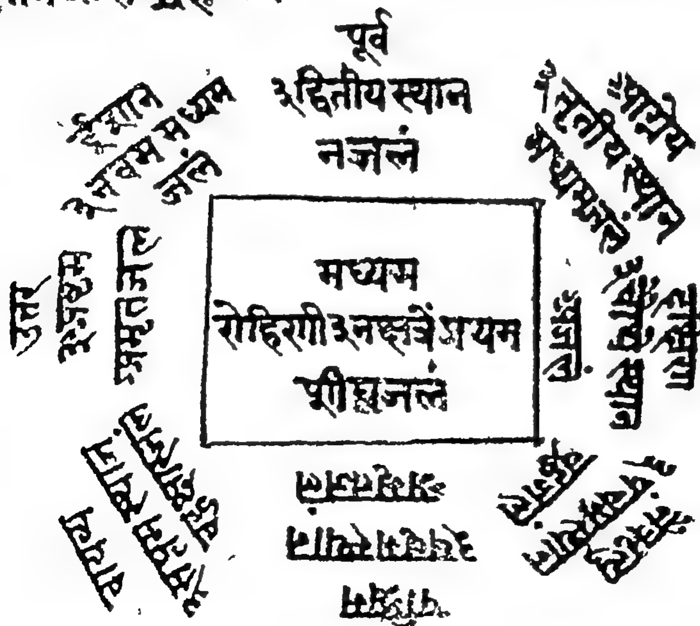


पर ५ लाभ कंठ पर ८ धन प्राप्ति मध्यमें ८ स्वामी मृत्यु दंड पर ५ राज्य प्राप्ति इस रीति से नक्षत्र क्रम जानिये ॥ १ ॥

(कूपचक्रं)

कूपे वाप्योस्तु चक्रं वै विन्यस्य विबुधैः शुभं ॥ रोहिणी गर्भमेतस्य त्रि त्रि ऋक्षाणि चंद्रभं ॥ मध्ये पूर्वे तथाग्नेयाया स्ये चैव तु नैर्ऋते ॥ पश्चिमे चैव वायव्यां सौम्ये शृंगे शिक्रमात् ॥ फलं ॥ पीयूषं जलं न जलं मध्यम जलं मजलं बहु जलं च ॥ अमृतजलं बहु क्षारं सजलं मध्यजलं क्रमात् ज्ञेयम् ॥ मत्स्ये कुलीरे मकरे बहु जलं तथैव चार्द्धं वृषकुंभयोश्च ॥ अल्पं च तौ लौ च जलं तात मना शेषाश्च सर्वे जलदाः प्रकीर्तिताः ॥ नवीन कूप अरु बावीर खोदन ॥

टी० ॥ रोहिणी से वर्त्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यंत का क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियों का चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले और वृष कुंभ इन का होय तो उसे आधा जल रहे वृश्चिक तुला इन का चंद्रमा होय तो अल्प जल रहे शेष राशियों का चंद्रमा होय तो नहीं निकले यह बात प्रसिद्ध है ॥ १ ॥



वसु भिश्च हरे द्भागं शेषं चैव शुभाशुभं ॥ फलं ॥
लाभश्चैके चिके सिद्धिर्हेद्धि: पंचम सप्तके ॥ द्
योर्हो निश्चलु: प्रोक्तं षष्ठाष्टे मरणं ध्रुवम् २ ॥

टी०॥ अपनी छायाको तिगुनी करे उसमें १३ मिलावे फिर ८ का भाग दे शेष बचे तिस का फल जानिये शेष १ लाभ द्वि० २ शेष हानि तीन ३ शेष सिद्धि चार ४ शेष पूर्णोक पांच ५ शेष वृद्धि छ: ६ शेष मरण सात ७ शेष हानि आठ ८ शेष मरण जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

(पंथा प्रश्न)

तिथि प्रहर संयुक्ता तारका वार मिश्रिता ॥ सप्तभि
स्तु हरे द्भागं शेषं फलमादिशेत् १ वर्तमानं च नक्ष
त्रं गणयेत्कृत्तिकादित: ॥ सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं ।
प्रश्नस्य लक्षणं २ प्रश्नाक्षरं रुद्रयुक्तं सप्तभि भाजि
तं तथा ॥ फलमेवं क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि शुभाशुभं १

टी०॥ तिथि वार नक्षत्र प्रहर इन सब को जोड के ७ का भाग दे शेष बचे तो फल जानिये दूसरा कृतिका से वर्तमान नक्षत्र तक गिने ७ का भाग दे शेष बचे सो फल जानिये तीसरा प्र० प्रश्न के अक्षरों में ११ मिला के ७ सात का भाग देने से शेष रहे सो फल जानिये ॥ २ ॥

(तत्फलं)

एक शेषे तथा स्थाने द्वितीये पथि वर्तते ॥
तृतीये त्वर्द्ध मार्गे तु चतुर्थे ग्राम मादिशेत् १
पंचमे पुनरावृत्ति: षष्ठे व्याधि युतं वदेत् ॥
शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चेतत्प्रश्नस्य लक्षणम् २

टी०॥ एक १ शेष रहे तो स्थान ही में जानिये २ दो शेष रहे तो मार्ग में ती न ३ बचे तो अर्द्ध मार्ग मे चार ४ बचे तो ग्राम में आया जानिये पांच ५ शेष रहें तो मार्ग से उलट गया कहिये छ: ६ शेष रहें तो रोगग्रस्त जानिये सात ७ बचें तो शून्य अर्था मरण जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

दूसरा प्रकार

वंधन नाप्रा सात ७ सें कार्य सिद्धि आठ ८ में मरण नौ ९ में रा
ज्य प्राप्ति यह गर्ग मुनि का वचन है ॥२॥

नव ग्रहात्मकं यंत्रं कृत्वा प्रश्न निरीक्षयेत्
फलं पूर्वोक्ति मे वात्र रसच्यं प्रश्न को विदे: १

टी०॥ नवग्रहात्मक यंत्र वनावे उस में अवलोकन कीजे जो अंक पै
उंगली रक्खे उस का फल पूर्व कहा उस प्रकार से जानना चाहिये।

(दूसरा मत)

सप्तत्रयांके कथयंतिवार्त्ता नवेक पंच त्वरितं वदंति
अष्टौ द्वितीये नहि कार्य सिद्धिरसाब्धि वेदा घटिका त्रयंच

टी०॥ पूर्व जो अंक कहे हैं तिन के प्रमाण से फल जानिये परंतु फ
ल भिन्न हैं शेष सात ७ वा तीन ३ रहें तो वार्त्ता करना जानना और ९
नव एक १ पांच ५ वचें तो शीघ्र कार्य सिद्धि होय दो २ आठ ८ वचें तो का
र्य नहीं होय छः ६ चार ४ वचें तो तीन दिन वा तीन घरी में कार्य होय॥

(वार नक्षत्र युक्त पंथा प्रश्न)

वुधे चंद्रे तथा मार्गे समीपे गुरु शुक्रयो: ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ चपं[illegible] पीड्यते १ ।
निर्जीव: [illegible] भवेत्
व्याधितो नव [illegible] सूर्य धिष्मात् चांद्रभं २

टी०॥ वुध सोम को पूछे तो मार्ग में जानिये-और गुरु शुक्र वार को पू
छे तो समीप आया जानिये-रवि भौम वार को पूछे तो दूर जानिये औ
र शनिवार को पूछे तो योग्य युक्त जानिये-और सूर्य नक्षत्र से चंद्रमा
के नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम सात नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो
निर्जीव दूसरे १२ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो जीता जानिये- तीसरे
नव ९ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो रोग की उत्पत्ति जानिये- इस भां
ति पंथा प्रश्न जानिये ॥१॥२॥

(नष्ट वस्तु प्रश्न)

तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं वन्हि वि मिश्रितं ॥

मेषेच द्विपदां चिंता वृषे चिंता चतुष्पदः ॥ मिथुने गर्भचिंता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥ सिंहे च जीव चिंता स्यात्कन्यायां च स्त्रियस्तथा ॥ तुलेच धन चिंता च व्याधि चिंता च वृश्चिके ॥ चापे च धन चिंता स्यान्म करे शत्रु चिंतनम् ॥ कुंभे स्थानस्य चिंता स्या मीने चिंता च दैव की ॥ ४ ॥

टी०॥ मेष लग्न में प्रश्न करे तो मनुष्यों की चिंता कहिये वृष में गाय भैंस की चिंता मिथुन में गर्भ चिंता कर्क में व्यापार की चिंता सिंह में जीव की चिंता कन्या में स्त्री की चिंता तुला में धन की वृश्चिक में रोग की धन में धन की चिंता मकर में शत्रु की कुंभ में स्थान की मीन में भूत पिशाच डाकिनी शाकिनी बाहरी बाधा की ॥ ४॥

धातु मूल जीव [illegible] वाख्य ॥
मेषादयः क्रमेण ज्ञातव्याः प्रश्न कोविदैः १।

टीका॥ मेष धातु वृष में मूल मिथुन में जीव इसी क्रम से चर स्थिर द्विस्वभाव इस प्रकार बारह १२ लग्नों की संज्ञा जानिये ॥ १॥

(अंकप्रश्न)

अष्टोत्तर सते चैव प्रश्न को न्यून माचरेत ॥ शेषं द्वादशाभिर्भक्तं शेषं चैव शुभाशुभं ॥ फलं ॥ एकं दुर्गा सप्तके वै विलंब श्चागे तुर्ये दिक्ष भूते विनाशः ॥ दे सिद्धि युगले वृद्धिरक्ता शीघ्रं कार्यं स्यात्रिषट् द्वादशेषु २

टी०॥ पृच्छक के कहे हुये एक से आठ अंको में से एक अंक का नाम लिखावे और उसमें १२ का भाग दे शेष बचे तो उससे फल कहिये १।७।८ बचें तो देर में काम होय और चार ४।५।८।१० बचें तो नाश होय ११ बचें तो सिद्धि २ वृद्धि हो ६ बचे तो शीघ्र कार्य होय ॥ २॥

(रोगीप्रश्न)

तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहर एक च ॥ अष्ट भिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फल मादिशेत् ॥ फलं ॥ हयाग्नौ देवता बाधा पंचौ वैले चंद्रसिंधु ॥१॥

टीका ॥ शंख कमल मोती रूपा स्त्री भोग भोजन गंडे के रस की
कृत्य वृक्ष जलादि भोग अलंकार यज्ञादि गोरस गाना पुष्प वस्त्र ये
सोमवार में कृत्य करना चाहिये ॥ २ ॥

भौमवार

भेदानृतस्तेयविषाग्नि शास्त्र वध्यासिघाता
द्रवशाठ्यदंभात् ॥ सेनानिवेशाकरधातुहेमप्र
वालरत्नानिकुजे विदध्यात् ॥ ३ ॥

टीका ॥ मंगल को भेद करना चोरी अनृत विष अग्नि शस्त्र वध
संग्राम सेनानि वेष खान धातु सोना मूंगा लाल वस्त्र रुधिर आ
व यह कृत्य मंगलवार को करना ॥ ३ ॥

बुधवार

नैपुन्यपण्याध्ययनकलाश्च शिल्पादिसेवा
लिपिलेखनानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तसंधि
व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ४ ॥

टीका ॥ बुधवार में चतुराई पुण्य पढ़ना चौसठ कला सीखनी चि
त्रकारी सेवा लिखना धातु क्रिया सोने की सीप के मित्र को कवा
द विवाद करना चाहिये ॥ ४ ॥

गुरुवार

धर्मक्रिया पौष्टिकयज्ञ विद्या मांगल्यहेमां
बरवेश्मयात्रा ॥ रथाश्वभैषज्यविभूषणादि
कार्यं विदध्यात् सुरमंत्रिवारे ॥ ५ ॥

टीका ॥ धर्म काम करना यज्ञ करना नवग्रह पूजा करना विद्या
भ्यास करना सौभाग्य वस्त्र गृह का कर्म यात्रा रथ अश्व औषधि
यह कृत्य गुरुवार में करना चाहिये ॥ ५ ॥

शुक्रवार

स्त्रीगीति शय्या मणि रत्न गंध वस्त्रोत्सवा
लंकरणादिकर्म ॥ भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च

(जल लग्नं)

कुंभः कर्के वृषौ मीन मकरौ वृश्चिक स्तुला जल लग्नानि चोक्तानि लग्ने ष्वेतेषु सूर्यभं ॥ लभते वसदा वृष्टि र्ज्ञात व्या गणकोत्तमैः ॥ १ ॥ ८५ ॥

टीका ॥ कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये जल लग्नं इनमें जो सूर्य नक्षत्र जा मिले तो वर्षा जानिये ॥ पर्जन्य नक्षत्र ॥ अश्विनी मृग पुष्ये षु पूव विष्णु मघासु च ॥ स्वात्यां प्रविष्टे भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ १ ॥ टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वांति इन नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक होय ॥ १ ॥

(स्त्री नपुंसक नक्षत्र जानना)

आर्द्रादि दशकं स्त्रीणां विशाखादि नपुंसकं मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ १ ॥ वायुर्नपुंसके भेच स्त्रीणां भेचाभ्र दर्शनम् ॥ स्त्रीणां पुरुष संयोगे वृष्टि र्भवति निश्चितम् ॥ २ ॥

टीका ॥ आर्द्रा से स्वांति पर्यंत १० स्त्री संज्ञक विशाखा से ज्येष्टा पर्यंत ३ नपुंसक मूल से मृगशिर पर्यंत १४ पुरुष संज्ञक नपुंसक नक्षत्र में स्त्री नक्षत्र आवे तो वायु चले और दोनों स्त्री २ आवें तो मेघ दर्शन शीतल छाया हो और जो स्त्री पुरुष नक्षत्रों का जोग होय तो वर्षा बहुत होय ॥

(सूर्य चंद्र नक्षत्र की संज्ञा)

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ॥ पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरा रेवती द्वयं ॥ उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यते सूर्यभान्यथ ॥ रोहिणी च मृग श्चैव पूर्वा फाल्गुनिका तथा ॥ सूर्ये सूर्य भवेद्वायु श्चंद्रे चंद्रे न वर्षति ॥ चांद्र सूर्ये भवेद्योग स्तदा वर्षति मेघराट् ॥ १ ॥ ३४ ॥

टीका ॥ अश्विनी भरणी कृतिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढ उत्तराषाढ श्रवण धनिष्टा उत्तरा रेवती ये चंद्र नक्षत्र और शेष सूर्य के नक्षत्र जानिये जल दिन नक्षत्र और सह नक्षत्र ये दोनों औ

जानिये और जो ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्ग में पशु जानिये - तिसने आगे ७ सात नक्षत्र आवें तो घर में आया जानिये - तिस पीछे दो २ नक्षत्रांत आवे तो आवन हार नहीं तिसके आगे ३ तीन नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा फल जानिये ॥ १ ॥

(राज्य भंगादि योग)

यदि भवति कदाचिच्चाश्विनी नष्टचंद्रा शनि रवि कुज वारे स्वाति रायुष्य योगे ॥ गगनचर पशूनां जंगमस्थावराणां नृपति जन विनाशो राज्य भंगस्तु चोक्तः ॥ १ ॥

टीका ॥ कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वार कर युक्त अमावस्या को अश्विनी किंवा स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग होय जो ऐसा योग परे तो पक्षी पशु जाति स्थावर राजा वा जन इनका नाश करे और राज्य भंग जानिये ॥ १ ॥

(सूर्य चंद्र के परिवेष मंडल का फल)

रवि शशि परिवेषे पूर्व यामेच पीडा रवि शशि परिवेषे मध्य यामेच वृष्टिः॥ रवि शशि परिवेषे धान्य नाशस्तृतीये रवि शशि परिवेषे राज्य भंगश्चतुर्थे ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ रवि का अथवा चंद्रमा का मंडल जो प्रथम पहर में होय तो पीडा जानिये - दूसरे पहर में होय तो मघ वर्षे - तीसरे प्रहर में होय तो धान्य का नाश - चौथे प्रहर में राज्य भंग होय ॥ १ ॥

(उत्पातों का फल)

रात्रौ धनु दिने उल्का तारा चैव दिने तथा ॥ रात्रौ तु धूमकेतुश्च भूकंपश्च तथैव हि ॥ १ ॥ एतानि दुष्ट चिन्हानि देश क्षय कराणि च ॥ १ ॥

टीका ॥ रात्रि में धनुष दिन में उल्का तथा नक्षत्र पात और रात्रि में धूम केतु का उदय तथा भूकंप ऐसे दुष्ट चिन्ह लक्षित होय तो देश क्षय कारक जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रह चक्र प्रकरणम्

जितने नक्षत्र आवें तितने फल जानिये इस चक्र से

स्थान	शिर	मुख	दा·हा·	पाय	वा·हा·	गुदा	नेत्रों	हृदय	भौम
नक्षत्र	६	३	३	६	३	१	२	३	०
फल	विजय	रोग	लक्ष्मी	मार्गच·	भय	मृत्यु	मृत्यु	सुख	चक्रं

जन्म नक्षत्र से बुध जिस नक्षत्र में पडे तिस पर्यंत गिने उसका फल जानिये ॥

स्थान	मस्त·	मुख	नेत्र	नाभि	पाय	वा·हा·	दा·हा	गुदा	बुध
नक्षत्र	३	१	२	५	६	४	४	२	०
फल	राज्य	धन·	प्राप्ति	लक्ष्मी	मवास	धनला	धनला	बंधन	चक्रं

गुरु जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने जिस स्थान में पड़ा हो उसका फल

स्थान	मस्त·	दा·हा·	कंठ	मुख	पांय	वा·हा·	नेत्रों	०	गुरु
नक्षत्र	४	४	१	५	६	४	३	०	०
फल	राज्य	लक्ष्मी	धन	पीड़ा	मृत्यु	सुख	सुख	०	चक्रं

शुक्र जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने जिस स्थान में पडा होय उसका फल जानना ॥ शुक्र में

स्थान	मुख	मस्त·	दा·हा·	वा·पांय	हृदय	हाथों	गुदा	०	शुक्र
नक्षत्र	३	५	३	३	२	८	३	०	०
फल	लाभ	शुभ	हानि	लोभ	धनसु	मित्रसु	स्त्रीला	०	चक्रं

शनि जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिनने से जिस स्थान में पड़ा हो उसका फल जानना

स्थान	मस्त·	मुख	दा·हा·	पायों	वा·हा·	हृदय	नेत्र	मस्तक	गुदा
नक्षत्र	१	१	४	६	४	५	४	१	१
फल	रोग	रोग	लाभ	मार्गच	बंधन	लाभ	प्रीति	पूजा	मृत्यु

जन्म नक्षत्र से राहु जिस स्थान नक्षत्र पर होय तिस पर्यंत गि-ने जिस स्थान में होय उसका फल जानिये ॥

पूर्णांकयुताः ॥ परिभाजित शून्यरसै र्घटि
का कर्कादि निशा मकरादि दिनम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अयन कहिये कर्क संक्राति से मकर संक्राति तक ६ महीने तैसेही मकर से कर्क तक ६ महीने होते हैं जिस दिन का दिन मान काढ़ना हो तिस पर्यंत कर्क संक्राति से दिन गिने उस को तीन ३ से गुणा करे जो अंक आवे १५३० ये अंक उनमें मिलावे और ६० का भाग दे जो बचे वह रात्रि मान जानिये और मकर से गुणा करे तो दिनमान आवे यह रीति जानिये ॥ १ ॥

(दिन कितना चढ़ा यह जानने की रीति)

पादप्रभा नगयुता रहिता च मेषात् षट् बिंदुना त्रियु
गबाणपूराब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजको दिनदलस्य न
गाहतस्य पूर्व्वे गतास्युरपरे दिन शेष नाड्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ अपनी छाया को पैरों से नापे जितने पांव आवें उनमें ७ सात और मिलावे और मेष संक्राति से कन्या की संक्राति पर्यंत इंदु कहिये एक घटावे तिसके आगे तुला से मीन पर्यंत जो संक्राति उसका क्षेपक उनमें घटावे ऐसे तुल ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इस प्रमाण से अंक घटावे और जुदे २ लिखे तिस पीछे दिन दल कहिये २५ इस को सात से गुणा किया तो १०५ हुए इनमें पीछे लिखे हुए अंकों का भाग दे जो भागांक आवे तो घटी जानिये परंतु पूर्वार्द्ध में दिवस की घटी आवे और उत्तरार्द्ध में दिन शेष आवे तो यह जानिये और रात्रि कितनी गई यह जानने की रीति नीचे लिखते हैं ॥ १ ॥

(रात्रि कितनी गई यह जानने की रीति)

सूर्यभान्मध्यनक्षत्र सप्तसंख्या विशोधितम विं
शति घ्नं नव हृतं गता रात्रिस्फुटा भवेत ॥ १ ॥

टीका ॥ रात्रि में जो नक्षत्र होय तिस पर्यंत सूर्य नक्षत्र से गिने उस में सात ७ घटादे शेष रहे उसको २० बीस गुणा करे और

टीका ॥ फाल्गुण शुदि पूर्णिमा में जो होली की लौ पूर्व को जाय तो प्रजा को और राजा को सुख जानिये और दक्षिण को जाती होय तो प्रजा भाग जाय और अकाल पड़े निश्चय करके जानना और जो पश्चिम को लौ जाती होय तो तृण बढ़े संपत्ति होय जो उत्तर को जाती होय तो अन्न बढ़े और जो आकाश को जाय तो राजा गढ़ में जाय बैठे और विग्रह होय ॥ इति हुतासनी धूल बर्षा फलम् ॥

(बर्षा फल)

क्षय कृत्यांसुवृष्टिश्च निर्हारश्च भयंकरः ॥ वि
द्युत्पातोऽग्निदाहश्च पविश्चश्च रोनकृत ॥ १ दि
ग्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः झंझा
वायुश्चंड शब्द श्चौर भीति प्रदायको ॥ २ ग्रह यु
द्धे राज युद्धे केतो दृष्टे तथैव च ॥ ग्रहाणांते महा
वृष्टि सर्वे दोष विनाशिनी ॥ ३ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

टीका ॥ जो धूल की बर्षा होय तो क्षय करे और जो कुहर पड़े तो भयंकर लोक में जानिये - जो बिजली पात होय तो अग्नि चारों ओर लगे और जो वज्र पात होय तो राज को भय जानिये - और जो झन झन शब्द करती प्रचंड पवन चले तो चोरन को भय जानिये और जो ग्रहों में युद्ध होय तो राजान में युद्ध जानिये - और जो केतु उदय दीखे तो युद्ध का भय जानना चाहिये - और जो ग्रह के अंत में वर्षा होय तो सब दोषों को दूर करे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

इति धूल बर्षा

इति श्री सुकदेव विरचिते ज्योतिषसार संवत्सरादि प्रकरण समाप्तम शुभम्

दिन रात्रि वली पोष ग्रह उदय भये पर अष्ट प्रहर वली है ॥ १ ॥

वार दोष

नवार दोषाः प्रभवंति रात्रौ दैवेज्य दैत्येज्य
दिवाकराणाम ॥ दिवा शशांकार्कजभूसु
तानां सर्व्वत्र निंद्यो वुधवार दोषः ॥ २१ ॥

टीका ॥ वृहस्पति शुक्र सूर्य इनको दिनमें दोष नहीं है रात्रि मे दोष है सोम मंगल इनको दिनमें दोष है रात्र में नहीं है और वधुवार को दिन रात्रिमें दोष है और शनि को दिनमें दोष है रात्रि में नहीं ॥ १ ॥

अथ वार कृत्यम्

सोम सौम्य गुरु शुक्र वासराः सर्व कर्म सुभ
वंति सिद्धिदाः ॥ भानु भौम शनि वासरेषु
च प्रोक्तमेव खलु कर्म्म सिद्ध्यति ॥ १ ॥

टीका ॥ चंद्रमा वुध वृहस्पति शुक्र ये सव कामों में सिद्धि के देने वाले हैं ॥ और शनि सूर्य मंगल ये कहे जो कर्म तिनमें सिद्धि देने वाले हैं ॥ १ ॥

॥ अथ वार परत्व तेल लगाने का शुभाशुभ फल ॥

रविस्तापं कांतिं शशि तरति शशी भूमितनयो
मृतिं लक्ष्मी सौम्यः सुरपति गुरु वित्त हरणम्
विपत्तिं दैत्यानां गुरुर खिल भोगानुगमने नृ
णां तैलाभ्यंगात्सपति कुरुते सूर्यतनयः ॥ ५

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे तो ताप होय — सोमवार को शोभा वढे मंगल को तेल लगावे तो मृत्य तुल्य कष्ट होय — वुधवार को तेल लगावे तो धन प्राप्त होय — वृहस्पति को लगावे तो हानि होय — शुक्र को लगावे तो दुःख होय — शनि को लगावे तो सुख पावे ॥ ५ ॥

रवौ दूर्वा गुरौ पुष्पं भौम वारे च मृत्तिका
भृगौ तु गोमये दद्यात तैल दोषा न विद्यते १

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे ता दूर्वा डाल ले — मंगल को तेल लगावे तो मृत्तिका डाल ले — वृहस्पति को तेल लगावे तो पुष्प डाल ले

टीका ॥ अश्विनी शुभ की देनेहारी - भरणी और कृत्तिका ना ये नाश करनेहारी - रोहिणी और मृगशिर यह शुभ को देती है - आर्द्रा मध्यम है - पुनर्वसु पुष्य ये शुभ को देते हैं - श्लेषा औ र मघा पूर्वाफाल्गुनी यह तीनों शोक हानि मृत्यु की करने वा ली हैं - उत्तरा हस्त चित्रा यह विद्या लक्ष्मी की करने वाली हैं - ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ ये क्रम से क्षय नाश अर्थ की हानि करने वाली हैं - उत्तराषाढ और अभिजित् श्रवण ये बुद्धि वृद्धि क रने हारे हैं - धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद ये क्रम से शुभ क ल्याण मृत्यु के देने हारे हैं - उत्तराभाद्रपद और रेवती ये श्री के और कामना के देने हारे हैं ॥ ५ ॥

नक्षत्रों के स्वामी

भेशा दास्त्रयमाग्निकेन्दु गिरिशाः प्रोक्ता अदि
त्यं गिरः सर्पाः कव्यभुजोभगोर्यम रवित्वष्टाह्
यामारुतः ॥ इन्द्राग्निस्त्वथ मित्र इंद्र निऋतिर्नी
रं च विश्वे विधिर्वैकुण्ठो वसुपाशयजैक चरणा
हि र्बुध्न्य पूषा भिधाः ॥ २ ॥ ६ ६ ६ ६ ॥

टीका ॥ दस्त्र कहिये अश्विनी यम कहिये भरनी अग्नि कहि ये कृत्तिका कर्क कहिये रोहिणी इंदु कहिये मृगशिर गिरिश कहिये आर्द्रा आदित्य कहिये पुनर्वसु अंगिरा कहिये पुष्य स र्प कहिये श्लेषा कव्यभुज कहिये मघा भग कहिये पूर्वा फा ल्गुनी अर्यम कहिये उत्तराफाल्गुनी रवि कहिये हस्त त्वष्टा क हिये चित्रा मारुत कहिये स्वाति इन्द्राग्नि कहिये विशाखा मि त्र कहिये अनुराधा इंद्र कहिये ज्येष्ठा निऋत कहिये मूल नीर कहिये पूर्वाषाढ विश्व कहिये उत्तराषाढ विधि कहिये अभिजित वैकुण्ठ कहिये श्रवण वसु कहिये धनिष्ठा पाशि कहिये शतभि षा अजक चरण कहिये पूर्वा भाद्रपद कहिये अहिर्बुध्न्य कहिये

षाढ उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में देवालय वनाना ध्वजा व नाना मंडप वनाना घर कोट भीति तोरण द्वार वाग राज्याभिषेक ये करना शुभ है ॥ ६ ॥

ध्रुव स्थिर नक्षत्र

रोहिणी सहित मुत्तरात्रयं कीर्तयंति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ वीज हर्म्य नगरा भिषेचना राम शांतिषु हितं स्थिरेषुच ॥ ८॥

टीका ॥ रोहिणी तीनों उत्तरा ये ध्रुव स्थिर कहे इन में वीज बोवना घर नगर इन में प्रवेश करना वाग वना ना शांति कर्म करना यह शुभ है ॥ ८ ॥

मृदु नक्षत्र

त्वाष्ट्र मित्र शशि पूषु देवतान्याममंति मुनयो मृदून्यथा ॥ मित्र कार्य रति भूषणां वरो गीत मंगल विधान मेषुतु ॥ १० ॥

टीका ॥ मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इन नक्षत्रों में मित्र कार्य स्त्री संग आभूषण वस्त्र धारण गाना नाना प्रकार के मंगल कार्य करना ॥ १० ॥

लघु संज्ञक

अश्विनी गुरु भमर्क दैवतं साभिजित लघु चतुष्टयं मतम् ॥ पण्य भूषण कला रतौ पध ज्ञान शिल्प गमनेषु सिद्धिदम् ॥ १

टीका ॥ आश्विनी पुष्य हस्त अभिजित इन नक्षत्रों में आभूषण पहरना दुकान करनी कला सीखनी क्रीडा करनी औषधि करनी गान विद्या सीखनी प्रस्थान करना ये शुभ हैं ॥ १ ॥

तीक्ष्ण नक्षत्र

मूल शक्र शिव सार्प्य दैवतान्युल्लपंत्यथ वतीक्ष्ण संज्ञया ॥ भूत यक्ष निधि मंत्र साधनं

लेद्रव्यं द्वयं चेद्भांड संस्थितं ॥ त्रतीये जल मध्य
स्थ अंतरिक्ष चतुर्थके ॥ तुषस्थं पंचमे तुस्यात्
षष्ठे गोमय मध्यगं ॥ सप्तमे भस्म मध्यस्थ मित्ये
तत्प्रश्ण लक्षणम् ॥ १ ॥

टीका ॥ तिथिवार नक्षत्र प्रहर इन को जोड़े दश गुणा करे और सात का भाग दे शेष वचें तो एक बचे तो पृथ्वी में द्रव्य है दो वचें तो बासन में धरी है तीन वचें तो जलमें बस्तु है चार वचें तो अंत रिक्ष में पांच वचें तो भुस के मध्य में छः वचें तो गोबर के वीच में ७ वचें तो राख के वीच में चीज जानना ॥ १ ॥

नक्षत्र परत्व प्रश्न

मघादि आर्य मातंच समीपे वस्त्क दृश्यते
हस्तादि वसु पर्य्यंत मन्य हस्तेच दृश्यते
शततारा द्यमांतं तु स्वगृहे वस्त्क दृश्य ते।
अग्न्यादि सार्प पर्यंतम दृष्टे दूर गंतथा २॥

टीका ॥ मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी पर्यंत इन नक्षत्रों में वस्तु जाय तो समीप दीखे हस्त नक्षत्र से धनिष्टा पर्यंत नक्षत्रों में जो बस्तु जाय तो दिखाई भी न दे शतभिषा से लेके भरणी पर्यंत जो चीज जाय तो कहना कि घर मे ही है कृत्तिका से ले के अश्लेषा पर्यंत जो चीज जाय तो दूर गई जानना ॥ २ ॥

अंधादि नक्षत्र संज्ञा

अंधकं तदनु मंद लोचनं मध्य लोचनम
तः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृतिभंचतु
ष्टयं सामि जिच्च गणयेत् पुनः पुनः ॥ १

टीका ॥ रोहिणी पुष्य उत्तराफाल्गुनी विशाखा पूर्वाषाढ धनिष्टा रेवती इन सात नक्षत्रों को अंधे जानिये । मृगशिर अश्लेषा हस्त अनुराधा उत्तराषाढ शतभिषा यह मंद लोचन जानिये — आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्टा अभिजित् पूर्वा

अनुराधा के ४ ज्येष्ठा के ३ मूल के ११ पूर्वाषाढ के ४ उत्तराषाढ के ३ अभिजित् १ श्रवण के ३ धनिष्ठा के ४ शतभिषा के १०० तारे पूर्वाभाद्रपद के २ उत्तराभाद्रपद के २ रेवती के ३२ हैं ॥

अथ नक्षत्र की आकृति स्वरूप

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैनस्योत्तमांगेन तुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्राभानि शालोपमंभं शयनसदृशमन्यच्चात्र पर्य्यंकरूपम् ॥ १ ॥ हस्ताकारमृतश्च मौक्तिकसमं चान्यत्प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवस्थितं वलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्या समानम्परं चान्यद्दंतिविलासवस्थितमतः शृंगाटनिभं व्यक्तिवत् ॥ २॥ त्रिविक्रमाभं च मृदंगरूपं वृत्तन्ततोन्यद्यमलं द्वयाभम् ॥ पर्य्यंकरूपं मुरजानुकारीह त्येवं क्रमाद्दिव चक्र रूपम् ॥ ३ ॥ ॥

टीका ॥ अश्विनी घोडा के आकार जानिये – भरणी योनि का आकार जानिये – कृत्तिका छुरा के आकार – रोहिणी छकडा के आकार जानिये – मृगशिर हिरन के आकार – आर्द्रा मणि का आकार जानिये – पुनर्वसु घर की समान – पुष्य बाण की समान जानिये – श्लेषा चक्र की समान – मघा घर की समान – पुर्वाफाल्गुनी मचान की समान – उत्तराफाल्गुनी शय्या की समान – हस्त हाथ की तुल्य – चित्रा मोती की तुल्य – स्वाति मूंगे की समान – विशाखा तोरण की समान – अनुराधा वलिन की समान – ज्येष्ठा कुंडल की समान – मूल सिंह की समान – पूर्वाषाढ हाथी के दांत की समान – उत्तराषाढ मचान की समान – अभिजित् त्रिकोणाकार – श्रवण त्रिकोणाकार – धनिष्ठा मृदंगाकार – शतभिषा वर्तुलाकार – पूर्वाभाद्र

२३	श्रवण	शुभ	विष्णु	ऊ·मु	चर	चल	सुर्ग	त्रिकोण	३
२४	धनिष्ठा	शुभ	वसु	ऊ·मु·	चर	चल	अंध	मृदंगा	४
२५	शत	कल्या·	वरुण	ऊ·मु·	चर	चल	मन्द	वृत्ताका	१
२६	पू·भा·	मृत्यु	अजेक	अ·मु·	उग्र	क्रूर	मध्यलो·	मंचाका	२
२७	उ·भा·	लक्ष्मी	अहिर्बु	ऊ·मु·	ध्रुव	स्थिर	सुलोच·	यमला	२
२८	रेवती	कामदा	सूर्यः	ति·मु·	मृदु	मैत्र	अं·लो	मृदंगा	३२

अथ नवीन वस्त्र धारणं

रोहिणीषु करपंचके श्विभे त्र्युत्तरे पिच पनुर्वसु द्वये ॥ रेवतीषु वसु देवते च भे न व्य वस्त्र परिधान मिष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा अश्विनी तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्टा इन में नवीन वस्त्र पहरना शुभ है ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

जीर्णं रवौ सतत मबुभिराय मंदो भौमे शुचे बुधदिने च भवेद्धनाय ॥ ज्ञानाय मं त्रिणि भृगौ प्रिय संगमाय मन्दे मलाय च नवांबरधारणं स्यात ॥ २ ॥

टीका ॥ रविवार को नया वस्त्र पहरे तो जीर्ण हो जाय —सोमवार को पानी से भीज जाय —मंगलवार को शोक होय —बुधवार को धन मिले —बृहस्पति को ज्ञान होय —शुक्र को नवीन वस्त्र पहरे तो प्रिया का संग होय —शनि को पहिरे तो मैला वस्त्र होय ॥ २ ॥

॥ मोती सोना मणि रत्न वस्त्र धारणं ॥

नासत्य पौष्ण वसु भ कर पंचके च मार्तंड भौम गुरु संज्ञि शशांक वारे ॥ मुक्ता सुवर्ण विद्रुम दंत शंख रक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिध्यै ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर ये नक्षत्र कर्णवेध में शुभ हैं ॥ १ ॥

अन्नप्राशन

रेवती श्रुत पुनर्वसु हस्त त्वाष्ट्रयतः पृथगपि
द्वितयेच ॥ स्थुत्तरेषु गदितं द्विनवान्नप्राश
नंतु कृतपिभिः पृथुका नाम् ॥ २ ॥

टीका ॥ रेवती श्रवण पुनर्वसु रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में अन्न प्राशन शुभ है ॥ १ ॥

षष्ठाष्टमे मास्यथच मृग दृशां पञ्चमादोजमासे ॥ ३ ४ ॥

(टीका)

बालक को छठे वा आठवें महीने में अन्न प्राशन कराना कन्या को पंचवें महीने से विषम मास में इस शुकर्म मुंडन कर्म करावे ॥

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्विन्दवे च शाक्रे हस्ताद्ये
त्रिके भष्ठ दित्यः ॥ क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्य त्रयेच
शुक्रा भौमादित्य यातं गिवारान् ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाति पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा - मंगल आदित्य शनि इन वारों को छोड़ के शुभ हैं ॥ १ ॥

भानुर्मासं क्षयं यति तथा सप्त मार्तंड सूनुर्भौ ।
मस्त्वाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान् ॥
षण्णेवेन्दुर्दश सुर गुरुः शुक्र एकादशेति प्राहुर्ग
र्गप्रभृति मुनयः क्षौरकार्ये पुनर्नम् ॥ ३ ६ ॥

टीका ॥ रविवार को हजामत बनवावे तो एक महीना आयु में घटै है - शनिवार को हजामत बनवावे तो सात महीना आयु में घटे है - मंगल को हजामत करावे तो आठ महीना घटे - बुध को पांच महीना बढ़ै - सोमवार को हजामत करावे तो ७ महीना बढ़ै - बृहस्पति को १० महीना बढ़ै - शुक्र को ११ महीना बढ़े है ॥ १ ॥

येषु येषु प्रसंशंति क्षौर कर्म महर्षयः
तेषु तेष्वेव शंसंति नख दंतादि लेखनं १

टीका ॥ जो वार नक्षत्र क्षौर कर्म मे कहे है ऋषियो ने सोई वार नक्षत्र दांत बांधने में और नख काटने में शुभ हैं ॥ १ ॥

मौंजी बंधन

सौम्य पौष्णो वैष्णवे वासवाख्ये हस्तत्वा
तीत्वाष्ट्र पुष्याश्विभेषु ॥ रक्षे दित्यां मेख
लावधं मासौ संस्मयैतेनूनमाचार्य वर्यैः ॥ १

टीका ॥ मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रों में मौंजी बंधन शुभ है ॥ १ ॥

विवाह नक्षत्र

मूलमैत्रमृग रोहिणी करैः पौष्णमारुत
मघोत्तरान्वितैः ॥ निर्विधाभिरुडुभिर्मृगी
दृशा पाणि पीडन विधिर्विधीयते ॥ १ ॥

टीका ॥ मूल अनुराधा मृगशिर राहिणी हस्त रेवती स्वाति मघा ये नक्षत्र वेध विना विवाह में शुभ है ॥ १ ॥

अग्नि होत्र ग्रहण करन

प्राजापत्ये पूषभे सद्दिदैवे पुष्ये ज्येष्ठा स्वैं
दवे कृत्तिकासु ॥ अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रये
पिश्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका तीनों उत्तरा इनमें अग्नि होत्र कर्म आचार्यों ने शुभ कहा है १

विद्यारंभः ॥ मृगादि पंच स्वपि भेषु मूले हस्तादिक चत्रितये श्विनीषु ॥ पूर्वात्रयेच श्रवणे च
तद्वद्विद्या समारंभमुशंति सिद्धोः ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मूल हस्त अश्विनी तीनों पूर्वा · चित्रा स्वाति श्रवण इन नक्षत्रों मे विद्यारंभ शुभ कहा है १

उत्पन्न होय तो मृत्य जानिये जो आकर रक्षा करे तो भी न जीवे ॥ ३ ॥

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णो समैन्द्रे प्राणत्राणं जाय
तेतस्यकष्टं ॥ वैश्वे सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मा
सार्द्धं शत्पः स्याद्वासराणां मघास्तु ॥ १ ॥ ६ ॥

टीका ॥ जो रोग रेवती अनुराधा में उत्पन्न होय तो प्राणांतक क
ष्ट होय उत्तराषाढ मृगशिर इनमें रोग होय तो एक महीना में अ
च्छा होय और मघा में रोग होय तो बीस दिनमें आराम होय इस
में संशय नहीं ॥ १ ॥

पक्षाद्धस्ते वासवे सद्विदैवे मूलाश्विन्यो रग्नि
धिष्णयेन वाह्नात ॥ याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारु
णे च नैरुज्यं स्यान्नून मेकाद शाह्नात ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त में रोग होय तो १५ दिन में अच्छा होय-धनिष्ठा वि
शाखा मूल अश्विनी कृतिका इनमें पीडा होय तो ९ दिन में अ
च्छा होय-भरणी चित्रा श्रवण शतभिषा इनमें रोग होय
तो ग्यारह ११ दिन में अच्छा होय ॥ १ ॥

अहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञे सभागे प्राजापत्यादित्य
योः सप्त रात्रात ॥ रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां
निःसंदिग्धं जल्पितं गर्ग मुख्यैः ॥ १ ॥ ८ ॥

टीका ॥ उत्तराभाद्रपद पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित पुनर्वसु इ
न में जो रोग होय तो सात दिन में निःसन्देह अच्छा होय ॥ ऐसा
गर्गादिक मुनि कहते हैं ॥ १ ॥

रोग मुक्ति स्नान

इंदीवरे भार्गवे च ध्रुवेषु सार्पादित्य स्वाति
युते शुभेषु ॥ पित्र्ये चांत्ये चैव कुर्यात्कदा
चिन्नैव स्नानं रोग मुक्तस्य जंतो ॥ १ ॥

टीका ॥ सोमवार शुक्रवार और ध्रुव नक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा
अश्लेषा पुनर्वसु स्वाति मघा रेवती इन में रोग मुक्त मनुष्य

तृण काष्ठादि संग्रह

वासवोत्तरदलादि पंचके याम्य दिग्गमन
गेहगोपनम् ॥ प्रेतदाह तृणकाष्ठ संग्रहः
शय्यका वितरणं च वर्जयेत ॥ १ ॥

टीका ॥ धनिष्ठा आधी पिछली से ले के पाँच नक्षत्र पंचक के हैं ध. श. पू. उ. रे. इनमें घर न छवावे छप्पर न बनावे प्रेत दाह न करे ईंधन काष्ट ग्रहण न करे खाट न बुनावे दक्षिण दिशा को न जावे ये बर्जित हैं ॥ १ ॥

हाथी लेना देना

हस्तेषु चित्रासु तथाश्विनीषु स्वातीच पुष्ये
च पुनर्वसौ च ॥ प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुंज
राणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त चित्रा अश्विनी स्वाति पुष्य पुनर्वसु इन नक्षत्रों में हाथी का सिंगार करना अलंकार पहराना ये गर्ग मुखिया ऋषि कहते हैं ॥ १ ॥

अश्व लेना देना

पुष्य श्रविष्टाश्विनि सौम्य भेषु पौष्णानि
लादित्य कराह्वयेषु ॥ सवारुणार्क्षेषु बुधैः
स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य धनिष्टा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाति पुनर्वसु हस्त शतभिषा इन नक्षत्रों में घोडे का सिंगार करना शुभ है ॥ १ ॥

गवादि पशुओं का लेना देना

चित्रोत्तरा वैश्रव रोहिणीषु चतुर्दशी दर्श
दिवाष्टमीषु ॥ ग्रामप्रवेशं गमनं प्रदध्या
द्धीमान्पशूनां न कदाचिदेव ॥ १ ॥

टीका ॥ चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी — चौदश अमावस सं. दिन अष्टमी इनमें पशु को गांव भेजना वा नगर में प्रवेश करना

जघन्य कहिये या में जो चंद्रोदय होय तो मास में महँगा कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु ये बृहत्संज्ञक होंय हैं इनमें चंद्रोदय होय तो समर्घ होय शेष नक्षत्रों में रहे तिनमें जो चन्द्रमा उदय होय तो सम संज्ञक कहिये तिनमें सम कहना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

राशि परत्व चंद्रोदय

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततन्दक्षिणोन्नतः
शेषोन्नताश्चोत्तरायां समतावृषकुंभयोः॥ १
विडवंतु समे चन्द्रे दुर्भिक्षन्दक्षिणोन्नते।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचंद्रमाः २

टीका॥ मेष मीन का चंद्रमा शुक्ल पक्ष की दूज को उदय होय तो दक्षिण को ऊँचा जानिये जिसमें महँगा दुर्भिक्ष की तुल्य कहना मिथुन से लेके मकर पर्यंत जो चंद्रमा दूज को उदय होय तो उत्तर को ऊँचा कहिये तो सुभिक्ष सुकाल कहना आरोग्य कहना और वृष कुंभ में जो चंद्रमा दूज को उदय होय तो समता जानिये वैश्यन को श्रेष्ठ राजान को कलह कारक कहिये शुदी दूज को चंद्रोदय फल जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

द्रव्य स्थापित करना

साधारणोग्रध्रवदारुणाख्यैर्धिष्णयैर्य
दत्तद्रविणंप्रयुक्तम्॥ हस्तेन विन्यस्त
वसुप्रनष्टंनलभ्यते तन्नियतं कदाचित् १

टीका ॥ साधारण संज्ञक उग्र· ध्रुव· दारुण इन नक्षत्रोंमेंजो द्रव्य अपने हाथ से गाढ के रक्खो सो कभी न मिले ॥ १ ॥

ऋण वर्जित

ऋणंभौमेनगृह्णीयान्नदेयंबुधवासरे॥ ऋ
णछेदंकुजेकुर्यात् संचयंसोमनंदने॥ संक्रांति
र्नार्कस्ने भरण्यांसूर्य्यस्य वारेन ऋणं शुभाय १

पुष्य नक्षत्र के गुण दोष

परकष्टं निखिलं निहंति पुष्यो न खलु निहंति
परंतु पुष्य दोषम् ॥ ध्रुवममृतकरोऽष्टमेपि पु
ष्ये विहितमुपैति सदैव कर्म्म सिद्धम् ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र दूसरे के दोष को और अष्टम स्थान स्थित जो चंद्रमा तिसके दोष को दूर करता है परंतु उसी नक्षत्र का दोष होय तो दूर नहीं होता है और पुष्य नक्षत्र में किया कार्य सिद्ध होता है ॥ १ ॥

सिंहो यथा सर्व चतुष्पदानां तथैव पुष्यो
बलवानुडूनाम् ॥ चंद्रे विरुद्धेप्यथ गोच
रेपि सिद्ध्यंति कार्य्याणि कृतानि पुष्ये १ ॥

टीका ॥ जैसे सब चौपायों में सिंह बलवान है तैसे सब नक्षत्रों में पुष्य बलवान है और पुष्य में किया कार्य और गोचर हात दोष और चौथा अष्टम वार हे चंद्रमा होय तो भी यह श्रेष्ट फल के देने वाला है ॥ १ ॥

ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारो
पि विलोमगोपि ॥ करोत्यवश्यं सकलार्थ
सिद्धिं विहाय पाणिग्रहणन्तु पुष्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ ग्रह करिके विद्धा भी होय और ग्रह करके युक्त भी होय तो भी शुभ है अथवा वार दुस से प्रतिकूल होय तो भी पुष्य नक्षत्र कार्य को सिद्ध करे है परंतु विवाह में शुभ नहीं है पुष्य नक्षत्र या में वर्जित है ॥ १ ॥

योग प्रकरणं

अथ प्रति दिन योग जानने की रीति

वाकपतेरर्कं नक्षत्रं श्रवणाच्चांद्रमेव च गणा
येत्तद्युतिं कुर्याद्योगस्स्याहृक्षशेषतः ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र से ले सूर्य के नक्षत्र ताईं गिनें और श्रवण

एकोनाः सप्तकृच्छेषाः करणं स्याद्भवादिकम्

टीका ॥ गई भई तिथि को शुक्ल पक्ष की परिवा से लेके दूनी करे एक घटा देना सात का भाग देना शेष रहे सो करण जानिये ॥

नाम करणों का

ववाह्वयं वालव कौलवाख्यं ततोभवेत्तैतल नामधेयम् ॥ गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥ अंते कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः ॥ गेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ॥

टीका ॥ वव १ वालव २ कौलव ३ तैतल ४ गरल ५ वणिज ६ विष्टी ७ ये सात करण चर संज्ञक जानिये और कृष्ण पक्षकी चौदश के पिछले दल में शकुनि करण जानिये और मावस को चतुष्पद नाग ये दोनों दल में जानिये और पड़वा के पहले दल में किस्तुघ्न करण जानिये ये चार कर्ण स्थिर संज्ञक जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

करणों के स्वामी

इंद्रो ब्रह्मा मित्र मामर्य माभूः श्रीः कीनाशश्चेति तिथ्यर्द्धनाथाः ॥ कल्पुसाख्यो सर्व वायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम ॥ १ ॥

टीका ॥ वव का इंद्र स्वामी - वालव का ब्रह्मा - कौलव का मित्र तैतल का सूर्य - गर का भूमी - वणिज की लक्ष्मी स्वा॰ विष्टी का यमराज - शकुनि का काल स्वा॰ - चतुष्पद का बैल स्वा॰ - नाग का सूर्य स्वामी - किस्तुघ्न का वायु स्वामी ये चार स्थिर स्वामी जानिये १

करणों की कृत्य

पौष्टिकस्थिर शुभानि ववाख्ये वालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवे प्रमद मित्र विधानं तैतिले शुभगताश्रय कर्म ॥ गरन्बे बीजाश्रय कर्षणानि वा राज्य के स्थैर्य वणिक् क्रियाश्च ॥

दिवा सर्प मुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ॥
सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् १

टी०॥ दिन में सर्प मुखी भद्रा जानिये - रात्रि में विच्छू संज्ञक भद्रा जानिये- दिन में भद्रा मुख त्याज्य है - रात्रि में पूंछ त्याज्य है ॥ १॥

रात्रि भद्रा यदान्हि स्याद्दिवा भद्रा यदा निशी ।
नतत्र भद्रा दोषः स्यात्सर्वे कार्याणि साधयेत् १

टीका॥ दिन की भद्रा रात्र में होय और रात्रि की भद्रा दिन में होय तो भद्रा का दोष नहीं ॥१॥

भद्रा का शरीर विभाग

नाड्यस्तु पंच वदने थ गले तथैका वक्षोद
रेक सहितं नियतं च तस्त्रः ॥ नाभ्यां कटौष
डथ पुच्छ लताच तिस्रो विष्टेर्बुधैरभिहितो
ङ्ग विभाग एषः ॥१॥ १॥ १॥ १॥ १॥

टीका॥ मुख की पांच घरी गले की एक घरी वक्षस्थल की ग्यारह घरी नाभ की ४ घरी कमर की ६ घरी पूंछ की तीन घरी यह घरी भद्रा के अंग की कही॥ १॥

भद्रा के अंग का फल

मुखे कार्य ध्वस्तिर्भवति मरणं चाय गलके
धनाढ्या निर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धि विलयः ॥
कलिर्नाभौ देशे विजय मथ पुच्छे च जगदुः
शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्व मुनयः १

टी०॥ मुख की घरी में कार्य नाश करे - गले की घडी मरण का फल दे - वक्षस्थल की घडी धन का नाश करे - कमर की घरी बुद्धि का नाश करे - नाभि की घडी कलह करे - पूंछ की घडी विजय करे - भद्रा के शरीर का यह फल पूर्व मुनि कहते हैं ॥ १ ॥

चंद्र जन्य भद्रा वास फल

मीने मेषालि कर्के शशिनि वसति स्वर्ग संस्था

ऐसी विष्टी नाम जिसकी सात भुजा हिरन की सी गरदन पतला सूकासा उदर जिसका प्रेतके ऊपर चढी भई दैत्यों को वध करने वाली देवताओं ने प्रसन्न होकर अपने कानों से लगाया इस से भद्रा नाम करण भया ॥ २॥

भद्रा का अंग				फल		चंद्रमा		वासा	
विजय	३	पूछ	११	वृक्ष स्थल	धन नाश	मेष मकर	वृष कर्क	स्वर्ग	कार्य शुभ
बुद्धि नाश	६	कमर की	१	गला	मरण	कन्या तुला	मिथुन धन	नागे	धन लाभ
कलह	४	नाभि	५	मुख	कार्य ध्वंस	कुंभ वृश्चिक	मीन सिंह	मृत्यु	कार्य नाश

भद्रा का फल

भद्रा नाम वार पर		शुक्लपक्ष		कृष्णपक्ष		शास्त्रार्थ
चंद्र·शु	कल्यानी	८ १५	पूर्वार्द्ध	३ १०	उत्तरा०	दिन की भद्रा रात्रि में शुभ है
शनि	वृश्चिकी	११ ४	उत्तरा०	७ १४	पूर्वार्द्ध	रात्रि की भद्रा दिन में शुभ है
सू·मं·वु	भद्रा	०	०	०	०	तहां भद्रा का दोष नहीं है

करणों के नाम तिथि स्वामी

सुक्लपक्षः				कृष्णपक्ष				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल		किंस्तुघ्न	वायु	० ० ० ०
१	स्थि·	०	०	०	०	०	०	किंस्तुघ्न	वायु	समस्त शुभ कार्य
५	८	२	२५	४	११	७	०	बव	इंद्र	अतः उत्साह देव कर्म
२	९ २२	५	२०	१	८	४	११	वालव	ब्रह्मा	ब्राह्म कर्म
[illegible]	[illegible]	२	८	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उत्साह मित्र का
[illegible]	[illegible]	६	१३	२	९	५	१२	तैतल	सूर्य	विवाहादि
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गरल	भूमि	बीज बोना
४	२१	७	२४	३	१०	६	२३	वणिज	लक्ष्मी	देव कर्म

को सुखदेय-राक्षसी चांडालों को सुख देती है ॥ १॥

कालफलं

पूर्वान्ह काले नृपति द्विजेन्द्रान्मध्यंदिने चा
थ विप्रोपरान्हे ॥ शूद्रान् खावसमिले प्रदो
षे पिशाचकान् रात्रिचरान्निशीथे ॥ २॥
नरादिकांश्चा पररात्रकाले प्रत्यूषकाले प
शुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्कस्य समस्त लि
ग प्रभात संध्या समये निहेति ॥ १ । २॥

टीका ॥ पूर्वान्ह काल में ब्राह्मण और राजाओं को सवाई-मध्या
न्ह में वैश्यों को-अपरान्ह में शूद्रों को-प्रदोष में पिशाचों
को-अर्द्ध रात्रि में राक्षसों को-अपर रात्रि में नरों को-प्रत्यू
ष काल में पशुपालकों को ॥ १॥ २॥

दिशा को सुख

अर्के शुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे।
शनौ चंद्रे मुखं पश्चाद्गुरौ चैवोत्तरा मुखी। १

टी०॥ सूर्य शुक्र को पूर्व मुख जानिये-बुध मंगल को दक्षिण मुख
जानिये-सोम शनि को पश्चिम मुख जानिये-बृहस्पति को
उत्तर मुखी संक्रांति जानिये ॥ १॥

वार नक्षत्रों के अनुसार संक्रांति का चक्र

वार	उग्र	नाम	काल	दिशा	फल	फल
रवि	क्षिप्र	घोरा	पूर्वान्ह	पूर्व को	शूद्र सुख	विप्र राजा
चंद्र	चर	ध्वांक्षी	मध्यान्ह	पश्चिम	वैश्यों को	वैश्यों को
मंगल	मैत्र	महोदरी	अपरान्ह	दक्षिण	चोरों को	शूद्रों को
बुध	ध्रुव	मंदाकिनी	प्रदोष	दक्षिण	राजाओं	पिशाचों
बृहस्प-	मिश्र	नन्दा	अर्द्धरात्रि	उत्तर को	द्विजगण	राक्षसों
शुक्र	दारुण	मिश्रा	अपररात्रि	पूर्व को	पशुओं को	नरों को
शनि	नक्षत्र	राक्षसी	प्रत्यूषका	पश्चिम	चांडालों	पशुपालों

फलं॥ गजेलक्ष्मी [illegible] स्थैर्यं घोटके वाहने तथा ॥
सिंहे व्याघ्रे भयंप्रोक्तं सुभिक्षं गर्दभे शुनो ॥
वाराहे महती पीडा जायते मेष वाहने ॥
माहिष्यांच भवेत्क्लेशः कुक्कुटे मृत्यु रेवच ५॥

टीका॥ वाराह में महती पीडा - मेष में पीडा - माहिष में क्लेश - कुक्कुट में मृत्यु के समान क्लेश जानना ॥ ५॥

संक्रांतिके वस्त्र

श्वेत पीत हरितंच पांडरं रक्त श्याममसितं
वह्नु वर्णम् ॥ कंवलो विवसनं घनवर्णान्यं
शुकानिचववादितः क्रमात् ॥ १॥ २॥

टी०॥ ववमें श्वेत वर्ण - वालव में पीत वर्ण - कौलव में हरित - तैतल में पांडुर - गरल में रक्त - वणिज में श्याम वर्ण - विष्टी में काला - शकुन मे चित्र विचित्र - चतुष्पद में कंवल - नाग में नग्न - किंस्तुघ्न में घन वर्ण जानो॥ २॥

आयुध

भुशुंडीच गदा खड्ग दंडु को दंड तोमरान् ॥
कुंत पाशांकुशास्त्रंच वाणाश्चेवायुधं ववात्

टी०॥ वव में तोप - वालव में गदा - कौलव में खड्ग - तैतल में दंड - गरल में धनुष - वणिज में तोमर - विष्टी में वरछी - शकुन में पाश - चतुष्पद में अंकुश - नाग में तलवार - किंस्तुघ्न में वाण ॥ २॥

भोजन का पात्र

सौ वर्णं रजतं ताम्रं कांस्यं लोहंच खर्परम्
पत्रं वस्त्रं करो भूमिः काष्ठ पात्रं च वादितः॥

टी०॥ ववमें सोने का - वालव में रूपा - कौलव में तांबा - तैतल में कांसा - गरल में लोहा - वणिज में ठीकरा - विष्टी में पत्र - शकुन में वस्त्र - चतुष्पद में कर - नाग में भूमि - किंस्तुघ्न में काष्ठ पात्र जानो॥

संक्रांति का भक्ष्य पदार्थ

अन्नंच पायसं भक्ष्यं पक्वान्नंच पयो दधि ॥

टी०॥ वव में नूपुर॰ वालव में कंकना॰ कोलव में मोती॰ नैतिल में मूं॰ गा॰ गरल में मुकुट॰ वणिज में मणि॰ विष्टी में गोगन्वी॰ शकुन में कोडीका॰ चतुष्पद में नीलक॰ नाग में पन्ना॰ किंस्तुघ्न में सोने का ॥ २॥

संक्रांति की कंचुकी

विचित्र वर्णा मुक भूर्ज पत्रिका सीता तथा पाट
ल नील वर्णा ॥ कृष्णाजिनं चर्म वल्क पांडुरा
ववादितश्चैव तु कंचुकी स्यात् ॥ १ ॥ ॥

टी०॥ वव में विचित्र॰ वालव में पजउ श्या॰ कोलव में हरित वर्ण नैतल में भोज पत्र॰ गरल में सेत॰ वणिज में पाढल॰ विष्टी में नीला॰ शकुन में काली॰ चतुष्पद में अंजनी॰ नाग में वल्कल॰ किंस्तुघ्न में पांडुर॥ २

संक्रांति की अवस्था

शिशुः कुमारी च गता लका युवा प्रौढा प्रगल्भा
पतनश्च वृद्धा ॥ वंध्या च वंध्याति सुतार्थिनी
च प्रव्राजका चैव फलं शुभं ववात् ॥ २॥

टी०॥ वव में बालक॰ वालव में कुमारी के मत्त में गताल का॰ नैति में युवा॰ गरल में प्रौढा॰ वणिज मे प्रगल्भा॰ विष्टी में वृद्धा॰ शकुन में वंध्या॰ चतुष्पद में अति वंध्या॰ नाग में सुतार्थिनी॰ किंस्तुघ्न में प्राव्राजि का सुवासनी ॥ २॥

फलश्रुति

वाहनादि वुधैर्ज्ञेयमथो संक्रांति शेषतः।
वाहनादिक वस्तूनां संक्रमात्तु विनाशतः॥ २

टीका॥ सक्रांति जिस वाहन पर स्थित हो और जो वस्तु धारण करती होय उस का नाश कहना ॥ २॥

संक्रांति कितने मुहूर्तों होती है

संक्रांतो भांति भेदा हर पवन यमे वारुणे सार्पेरौद्रे
ज्येष्ठा पत्येंदु संज्ञा गुरु कर पित्र भे चाग्नि दस्र च सौम्ये
त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूले श्रुति वसु नृपभा त्रीणि पूर्वा सु रामे

संक्रांतिकादूसराप्रकार

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रान्परसंक्रांतिऋक्षकम्
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता १

टीका॥गये मास की संक्रांति का दिन नक्षत्र और प्राप्त संक्रांति का दिन नक्षत्र इन दोनों का अंतर करने से जो तीन वा दो होंय तो सस्ता जानना और चार पांच जो अंतर आवे तो महंगा जानिये ॥१॥

धान्यविचारः

संक्रांतिनाड्यातिथि वार ऋक्षधान्याक्षरं वह्नि
हरेतु भागम्। अन्यच्च ।संक्रांतिनाडीनवमिश्रि
तांच सप्ताहता पाव कभाजितांच एके महर्घे
द्वितये [illegible] महर्घं मुनियो वदंति २

टीका॥संक्रांति की घरी और गत तिथि वार नक्षत्र धान्य के नामाक्षर इनको एकत्र कर तीन का भाग दे-दूसरा मतान्तर॥ संक्रांति की घडियों में ९ मिलावे सात गुना करे और तीन का भाग दे शेष बचे सो फल कहना-एक बचे तो सस्ता और दो बचें तो सम-तीन बचें तो महंगा कहना चाहिये ॥२॥

नक्षत्र के अनुसार संक्रांतिकीपीडा

संक्रान्त्यपरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ॥
त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं पुनःपुनः ।१।
पंथाभोगोव्यथावस्त्रंहानिश्च विपुलधनम्

टीका॥संक्रांति के पहले नक्षत्र से लेके अपने नक्षत्र ताईं गिने इस रीति से उस का विचार करे पहले तीन ३ में पंथा चलावे दूसरे ६ में भोग मिले तीसरे तीन में वस्त्र चौथे ६ में हानिजानिये पांच में ३ त्रिक में धन प्राप्ति जानिये इसी रीति से सब नक्षत्रन में मानना॥

जन्मनक्षत्रोंकाफल

यस्यजन्मर्क्षमासाद्य त्रिथोसंक्रमणोभवेत्
तन्मासाभ्यंतरे तस्य वैरंक्लेशंधनक्षयः १

टी०॥जैसा चंद्रमा भला वा बुरा होय तैसा संक्रांति फल की देने वाली होती है॥१॥

संक्रांति पुण्य काल

पूर्वतो हि परतो [illegible] संक्रमा[illegible] पुण्यकाल घटिका
स्तु षोडश॥ [illegible] [illegible]
परदिने हि पुण्यदम्॥१॥

टी०॥संक्रांति के समय ते दोनों ओर पुण्य काल की घरी सोलह सोलह होती हैं और आधी रात से पीछे वा पहले संक्रांति होय तो दोनो दिन पुण्य काल कहना आधी पीछे दूसरे दिन पुण्य काल आधी पहले पहले दिन पुण्य काल॥१॥

चंद्र[illegible] ग्रहण प्रकरण

भानोः [illegible] [illegible] चंद्रमा [illegible]॥
पौर्णिमास्या निशाशेषे चंद्रग्रहणमादिशेत्॥

टीका॥ सूर्य से १५ पंद्रह वें नक्षत्र में जो चंद्रमा होय तो पूनो के अंत में पडवा की संधि में चंद्र ग्रहण होय॥१॥

सूर्यग्रहण प्र०

भानोर्गतं ग्रस्त नक्षत्रा [illegible] हि सूर्यभात्
अमावास्या दिवा शेषे सूर्य ग्रहणमादिशेत्॥

टीका॥ सबेरे महीनों की मावस के दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशि के होते हैं परंतु अमावास्या के दिन सूर्य नक्षत्र और दिवस का नक्षत्र एक होय तो अमावास्या को पडवा की संधि में सूर्य ग्रहण होता है उस दिन सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र देखिये उस में से ११ काटि शेष १६ बचें और सूर्य नक्षत्र १६ सोलहवां होय तो वही सूर्य्य ग्रहण होता है॥१॥

राशि अनुसार ग्रहण शुभाशुभ फल॥

त्रिषट् दशायोपगतं नराणां शुभप्रदं स्याद्ग्रह
णं रवीन्द्वोः॥ द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्यात्।
शेषेष्वनिष्टं मुनयो वदंति॥ १॥ १॥ १

टीका॥ सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण अपनी राशि से जिस राशि पर होय

श्रावण में लक्ष्मी - भादों में दरिद्र - आश्विन में धनवान - कार्तिक में निर्धना - मार्गशिर में प्रजावती - पौष में व्यभिचारिणी - माघ में पुत्रवती - फाल्गुण में रजोदर्शन होय तो पुत्र संपन्न जानिये ॥३॥

तिथिफलं

मुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायांतु दुःखिनी ॥
तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् १
पंचम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्य विनाशिनी
सप्तम्यां सत्प्रजा नारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा २
नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्य भोगिनी
एकादश्यां मुचिर्नारी द्वादश्यां मरणं ध्रुवम् ३
त्रयोदश्यां शुभा प्रोक्ता चतुर्दश्यां परगामिनी ॥
पूर्णिमास्याममावस्यां :: भंचाशुभमेवच ७

टीका॥पडवा में रजोदर्शन होय तो मुचि शोक के ग्रस्त जानिये - द्वितीया में दुखिया तृतीया में पुत्रवती - चौथ में विधवा पाचें में सुहागन छठ में कार्य नाशिनी सातें में उत्तम संतान आठें में राक्षसी - नोमी में विधवा - दशमी में सुखभोगिनी - एकादशी में मुचि और द्वादशी में मरण - त्रयोदशी में शुभ - चौदश में व्यभिचारिणी - पूनों में शुभ और मावस में अशुभ जानिये ॥७॥

संक्रांत्या ग्रहणे चैव वैरिणी च गताल का।

टीका॥संक्रांति में प्रथम रजोदर्शन होय तो वैरिणी होय और ग्रहण में होय तो विधवा का योग जानना चाहिये॥

वारफलं

आदित्ये विधवा नारी सोमे चैव मृतप्रजा॥१॥
मंगले आत्मघातीस्याद् बुधे कन्या प्रसूस्मृता:
गुरौ चैव सुतः प्राप्तिः कन्या पुत्रयुता शुभे ॥२॥
मंदे च पुंश्चली नारी ज्ञेयं वार फलं शुभम्॥२

टीका॥रविवार में प्रथम रजोदर्शन होय तो विधवा होय-सोमवार

पुत्रयुक्तातु शोभने मंगलान्विता ॥ अतिगंडे तु
विधवा सुकर्मे रितु शोभना ॥ धृतौ संपत्तियुक्ताच
मूले रोगयुता भवेत् ॥ गंडे दुःखान्विता नारी वृद्धौ
पुत्रान्विता भवेत् ॥ ध्रुवेतु शोभना नारी व्याघाते
भर्तृघातकी ॥ हर्षणे हर्षयुक्तातु वज्रे वंध्यानपत्य
ना सिद्धे पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका ॥ मृ
तवत्साच वर्याणे परिघे चाल्पजीविनी ॥ शिवे पुत्रवती
नारी सिद्धे शीघ्र फलान्विता ॥ साध्ये धर्मपरा नारी शुभे
ऽशुभगुणान्विता ॥ शुक्ले शुभकरा नारी ब्रह्मणि स्वपती
रता ॥ ऐंद्रे देवररक्ताच वैधृत्यां वैधृतो स्मृतम् ॥ २

टीका ॥ विष्कुंभ में प्रथम रजोदर्शन होयतो विधवा जानिये -
प्रीति योग में पति को प्यारी - आयुष्मान में धन प्राप्ति - सौभाग्य
में पुत्रवती - शोभन में मंगल दायिनी - अतिगंड में विधवा - सुक
र्मा में सुभता - धृति मे संपति युक्त - मूल में रोग होय - गंड में दुःखा
न्वित - वृद्धि में पुत्र युक्त - ध्रुव में शुभ - व्याघात में पति घातनी - ह
र्षण में हर्ष युक्ता - वज्र में वंध्या - सिद्धि में पुत्र युक्ता - व्यतीपात
में पति रहिता - वर्याण में मृत पुत्रा - परिघ में अल्प जीविनी -
शिव में पुत्रवती - सिद्धि में शीघ्र फला - साध्य में अधम परा -
शुभ में शुभ गुण युक्ता - शुक्ल में शुभ कर्म परा - ब्रह्म में निज पति
रहिता - ऐंद्र में देवर रता - वैधृति में विधवा होय ॥ २ ॥

करण फलं

ववे प्रोक्तातु वंध्या स्त्री बालवे पुत्रसंपद ॥ कौलवे पुं
श्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी ॥ गरे च गुणसंपन्ना
वणिजे पुत्रिणी स्मृता ॥ [illegible]
कामपीडिता ॥ चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रवती भवेत्
किंस्तुघ्ने व्यभिचारी तु करणानां शुभं फलम् ॥ २ ॥

टीका ॥ बव करण में प्रथम रजोदर्शन होयतो स्त्री वंध्या होय - बालव

श्चिके दद्रु दुःखिनी ॥ धनलग्ने धने श्वर्यं मकरे कर्कशा भवेत् ॥ कुंभे वंश क्षयं ग्रोच मीने सर्व गुणान्विता ॥४॥

टी०॥ मेष लग्न में रजो धर्म होय तो दरिद्रणी-वृष में धनयुक्त मिथुन में कामिनी कर्क में पति नाशिनी सिंह में पुत्र प्रसूता कन्या में पतिव्रता तुला में अधना-वृश्चिक में दरिद्र का दुःख-धन में ऐश्वर्य मकर में कर्कशा कुंभ में दोनों वंश की नाश करता-मीन में गुणावती ॥४॥

ग्रहों के फल

लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचन्द्रो तथे वच ॥१॥
नदास्या विधवा नारी सर्वे सौभाग्य वर्जिता ॥२॥

टीका॥ जिस लग्न में प्रथम स्त्री रजस्वला हो तिस लग्न में राहु शनि रवि चंद्र ये चार वार ग्रह स्थित होंय तो वह स्त्री विधवा होय ॥२॥

रक्त दर्शन फलं

शोणितं विंदु मात्रेण स्वैरिणी चाल्प शोणिता।
रक्ते रक्ते भवेत पुत्रः कृष्णे चैव मृत प्रजा ॥१॥
पिच्छलीन्च भवेद्वन्ध्या काकवंध्या च पांडुरे॥
पीते दुःश्चारिणी ज्ञेया सुभगा गुंजसा दृशे ॥
सिंदूर वर्णे रक्ते तु कन्या संततिरेव च ॥२॥

टीका॥ प्रथम ऋतु दर्शन के समय रक्त विंदु मात्र और अल्प वर्ण वाले स्त्री व्यभिचारिणी होय और रक्त वर्ण रुधिर होतो पुत्रवती काला वर्ण रुधिर होयतो मृत प्रजा पिच्छला कहिये गाढा होय तो वंध्या पांडुर होय तो बांझ और पीला होय तो दुश्चारिणी और गुंजा की तुल्य होय तो शुभ सिंदूर वर्ण होय तो कन्या प्रसूता-इस प्रकार रक्त दर्शन का फल जानना चाहिये ॥२॥

काल फलं

पूर्वान्हे सुभगा ज्ञेया मध्यान्हे चैव निर्धना ॥
अपरान्हे शुभा चैव सायान्हे सर्व भोगिनी ॥
संध्ययो रुभयोर्वेश्या निशीथे विधवा भवेत्।

नद्योक्ताः शेषास्तु प्रशस्ता दशवासराः
तस्मा विशद्वं चांडाली पुष्पितां परिवर्जयेत्।

टीका॥ स्त्रियों के ऋतु धर्म से स्वाभाविक १६ सोलह रात्रि होती हैं उनमें से प्रथम तीन रात्रि पुष्पवती की चांडाल संज्ञा ब्रह्म घाती रजकी चौथी ग्यारहीं तेरहीं ये दिन वर्जित हैं और बाकी रही दश रात्रि सो शुभ हैं ॥२॥

रात्रौ चतुर्थ्यां पुत्रः स्यादल्पायुर्धन वर्जितः ॥
पंचम्यां पुत्रिणी नारी षष्ठ्यां पुत्रस्तु मध्यमाः
सप्तम्याम प्रजायो वीर ष्टम्यां मीश्वरः पुमान् ।
नवम्यां शुभगा नारी दशम्यां प्रवरः सुतः ॥
एकादश्याम धर्म्या स्त्री द्वादश्यां पुरुषोत्तमः ॥
त्रयोदश्यां स्तुता पापा वर्णसंकर कारिणी ॥
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च आत्मवेदी दृढ़ व्रतः ॥
प्रजायते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पति व्रता ॥
आश्रयः सर्व्व भूतानां षोडश्यां जायते पुमान्।

टीका॥ चौथी रात्रि में स्त्री संगम करे तो पुत्र अल्पायु धनवर्जित हो-पांचमी रात्रि में पुत्रवती हो-छठी रात्रि में मध्यमपुत्र-सातमी रात्रि में पुत्र होय- आठमी रात्रि में ईश्वर का भक्त होय-नवमी रात्रि में सौभाग्य वृद्धि होय दशमी मे गुणवान पुत्र-ग्यारहवीं में अधर्मी पुत्र-बारहवीं में उत्तम पुरुष-तेरवीं रात्रि में पाप कर्त्ता कन्या हो-चौदहवीं रात्रि में धर्मात्मा कृतज्ञ व्रत करने हारा पुत्र होय॥ पन्द्रहवीं रात्रि में पतिव्रता-षोडशी रात्रि में सब जीवों का आश्रय देने वाला पुत्र होय॥ ४॥

निषेक के तिथिवार का फल

षष्ठ्यष्टमी पंचदशी चतुर्थी चतुर्दशी मप्यु
भयत्र हित्वा॥ शेषाः शुभास्तु स्तिथयो नि
षेके वाराः शशी कार्य सितेन्दु जाश्च॥१॥

घने बुधस्य ॥ काकीच वंध्याभवतीह भु
क्रे स्त्री पुत्र लाभो रविजीव भोमे ॥२॥

टीका॥शनिवार को पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु-चंद्रवार को शरीर ना
श-बुध को पुत्र नाश-शुक्र को काक वंध्या-रवि जीव भौम इन
में पुत्र लाभ-परंतु चंद्रमा शेष होय शुभ योगादि वर्जनीय हे कहे
जो नक्षत्र तिन में अरु शुभ दिन में पुंसवन कहिये जिस मुहूर्त्त में
गर्भ की स्थिति वाही उसी में अनवलोमन कर्म भी युक्त है ॥२॥

अन्य मत से

चतुर्थ षष्ठष्ठम मास भाजि सोरेण गर्भे प्रथमं विधेयम्।
सीमंत कर्म द्विज भामिनीनां मासेष्टमे विष्णुवलिंचकुर्यात्

टीका॥प्रथम गर्भ धारण होने से चौथे छठे आठ में ऐसे सम सौ
र मासों में आठ मास पर्यंत स्त्रियों का सीमंत कर्म और
विष्णु बलि करना उचित है ॥२॥

सीमंते तिष्य हस्तादिति हरि शशि मृत्यो
त्तम विष्णु नरारख्या॥पक्षछिद्राच रिक्तापित्
तिथि मुपहाया पराःस्युः प्रशस्ताः॥२॥

टीका॥सीमंत कर्म में पुष्य हस्त पुनर्वसु श्रवण मृगशिर रेवती
रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्षछिद्र तथा रिक्ता
तिथि को छोडि के शेष तिथि शुभ जानिये ॥२॥

पक्षछिद्र तिथि

चतुर्दशी चतुर्थीच अष्टमीनवमी तथा ॥
षष्ठीच द्वादशी चैव पक्षछिद्राह्वयास्मृताः
क्रमादेतासु तिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः
भूताष्टमनु तत्वांक दश शेषास्तु शोभनाः२

टीका॥चतुर्दशी की प्रथम १४ चौदह घडी और चौथ की ८ घड़ी
अष्टमी की १४ घरी नवमी की २४ घड़ी षष्ठी की ९ घड़ी द्वादशी
की १० घड़ी ये वर्जनीय हैं शेष शुभ हैं ॥२॥२॥

अन्यलग्ने भवं स्तिस्त्र एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ।
यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खड्गाङ्गभंगता ।
रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ॥

टीका॥ मीन अथवा मेष मे प्रसव होय तो उस समय में स्त्री दो जानिये और वृष कुंभ में प्रसव होय तो चार स्त्री जानिये तुलाकन्या होय तो सात स्त्री जानिये धन कर्क होय तो पांच स्त्री जानिये शेष लग्नों में तीन स्त्री जानिये — जन्म कुंडली के ग्रहों की रीतिसे जिस दशा में राहु होय उस दशा में शय्या को जानना जो लग्न में मंगल होय तो खड्ग का अंग भंग कहना जिस दशा में सूर्य होय उसी दशा में दीपक जानिये जिस दशा में शनि होय उसी दशा में बालक का नाल जानिये वा लोहा जानिये ॥ ७ ॥

तिथि गंडांत

पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिनाडीद्वयं तथा ।
गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ १ ॥

टी०॥ पूर्णिमा के अंत में घटिका प्रतिपदा के आदि की घरी और ऐसे ही दोनों की संधि इस क्रम से पंचमी षष्ठी दशमी एकादशी इन की संधि की दोदो घरी शुभ कर्म में वर्जनीय हैं इन को गंडांत कहते हैं १

लग्न गंडांत

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ।
गंडांतमंतरालं स्याद् घटिकार्धं मृतिप्रदम् १

टीका॥ कर्क सिंह इन दोनों की आधी घरी धन मीन इनकी मेष इन की संधि में मृत्यु प्रद जानिये ॥ १ ॥

नक्षत्र गंडांत

पौषणाश्विन्योः सार्पपित्र्यर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठा
मूलयोरंतरालम् । तद्गंडांतं स्याच्चतुर्नाडिकं हि
यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥ १ ॥

टीका॥ रेवती अश्विनी इनकी मध्य दो दो घरी ...का मघा अश्लेषा मूल

इरले और अमावास्या में केवल जन्म होय तो वहुत से दोष लगें और जिस के इन में प्रसूति होय तो उस की आयु धन का नाश होय। और गंडांत में प्रसूति होय तो वहुत से दोष जानिये ॥ २॥

दिनक्षयादिफलं

दिन क्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टि वैधृतौ ॥ मूलगंडे ति गंडे च परिघे यमघंटके ॥ कालगंडे मृत्यु योगे। दग्ध योगे सुदारुणे ॥ तस्मिन गंडे दिने प्राप्ते प्रसूति र्यदि जायते ॥ अतिदोषकरी ज्ञेया तत्र पापयुता सती

टीका॥ दिनक्षय व्यतीपात व्याघात विष्टि वैधृति गंड मूल अति गंड परिघ यम घंट कालगंड मृत्यु योग दग्ध योग दारुण योग इनमें जन्म होय तो वड़ा पापी और प्रसूता स्त्री को भी पाप युक्त जानिये ॥ २॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के जन्म का फल

ज्येष्ठादौ जनने माता द्वितीये जनने पिता ॥ तृतीये जनने भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ॥ आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत ॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठ भ्रातर मष्टमे ॥ नव [illegible] सर्वं हंति रप्रणं शाकम १

टीका॥ ज्येष्ठा नक्षत्र में जिसका जन्म होय तो उस नक्षत्र की छः छः घड़ियों का भाग कर फल जानना पहली छः घरी में माता को अशुभ दूसरी छः घरी पिता को तीसरी छः घड़ी मामा को चौथी माता को पांचवीं वालक को छठी वंश गोत्र को सातवीं पिता को आठवीं वड़े भाई को नवीं सुसुर को दशमी सव को वुरी है ॥ १॥ २॥

मूल नक्षत्र जन्म फलं

मूलं स्तंभं त्वक्च शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा वेदाश्च मुनयश्चैव दिशाश्च वसव स्तथा ॥ नंदा वाण रसा रुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ मूले मूल विनाशाय स्तंभे हानि र्धनक्षयः ॥ त्वचि भ्रात विनाशाय शाखा मातु र्विनाश कृत। पत्रे सपरिवारः स्यात पुष्पे प नष्ट वल्लभः ॥ [illegible]

हृदय की तिस में आल्म घाती – आठवीं ६ घरी जानु की तिस में ... नवमी ६ घरी गुह्य की भोगी दशमी ५ घरी पांव की धन वान जानना जिस विभाग में जन्म होय तिस विभाग के अनुसार फल जानना॥

अथ जन्म काल में जैसे ग्रह परे होंय तिस का फल॥

तनुस्थान॥ लग्नस्थितो दिनकरः कुरुते ग पीडा पृथ्वीसुतं वितनुते रुधिरप्रकोपं॥ छायासुतः प्रकुरुते बहुते दुःखं ... जीवेंदु भार्गव बुधाः सुख कांति दास्युः १॥ धनस्थान॥ दुःखाव हा धन विनाश करा प्रदिष्टा वित्तेस्थिता रवि शनैः ... चंद्रो बुधः सुरगुरुर्भृगु नंदनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते ध- नस्थः २ सहज स्थान॥ भानुः करोति विरुजं रजनीकरोपि कीर्त्यायुतं क्षिति सुतः प्रचुर प्रकोपं॥ ऋद्धिं बुधः सुधिषणां सुवि नीत वेषं स्त्रीणां प्रियं गुरु कवीर विजस्तृतीये ३ सुहृत्स्थान॥ आ दित्य भौम शनयः सुख व[illegible]कुर्वंति जन्म निनरं सुखिं स्चतुर्थे सोमो बुधः सुरु गुरु र्भृगु नंदनो वा सौख्यान्वितं च नृप कर्म रत प्र धानं ४ सुतस्थान॥ पुत्रे रविः प्रचुर कोपयुतं बुधश्च स्वल्पात्म जं शनि धरा तनुजा वकुर्युः॥ शुक्रेंदु देव गुरु वः सुतधाम संस्थाः कुर्वंति पुत्र बहुलं सुखिनं सरूपम् ५ रिपुस्थान॥ मार्तंड भूमि तनुयो हत शत्रु पक्षं पंगुर्नरं रिपु गृहे ख्याति रजनीशः॥ काव्येंदु जौ मति विहीन मनल्प रोगं जीवः करोति विकलं मरणं शशांकः ६ जाया स्थान॥ नित्यं सुभौम रविजाः किल सप्तम स्था जायांकु कर्म निरतां तनु संततिं च॥ जीवेंदु भार्गव बुधा बहु पुत्र युक्तां रूपान्वितां जन मनोहर रूप शीलाम् ७ मृत्यु स्थान॥ सर्वे ग्रहा दिन कर प्रमुखा नितांतं मृत्यु स्थिता वितनुते किल दुष्ट बुद्धिम॥ श स्त्राभि घात परि पीडित गात्र यष्टि सौख्यै विहीन मति रोग गणैः रूपेतम्॥ ८॥ धर्म स्थान॥ धर्म स्थिता रवि शनैश्चर भूमि पु त्राः कुर्वंति धर्म रहितं विमतिं कुशीलम्॥ चन्द्रो बुधो भृ गुभ्रूनस्तुर राजमंत्री धर्म क्रिया कनिरतं कुरुते मनु-

संख्या	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श·रा·के
४ सुहृत	पीडा बहु कारक	सुखभोग	पीडा कारक	सुखभोग	सुखभोग	सुखभोग	पीडा कारक
५ पुत्र	रोगपुत्र चिंता	बहुपुत्र	संतान रहित	अल्प पुत्र	बहुपुत्र	बहुपुत्र कन्या	संतति विलंब
६ शत्रु	शत्रुनाश क	दुःखमर शातुल्य	शत्रु ना शः	बुद्धि हीन	शरीर विकल	बुद्धिहीन	शत्रुगृह पूज्य
७ जया	स्त्रीदुष्टा संतान	रूपवत्ती स्त्री	स्त्रीदुष्टा	स्त्रीरूपवा नबहुपुत्र	मनहरणा सुखभोग	सुख	दुष्ट स्त्री पुत्रयो·
८ मृत्यु	स्थान घाती	सब पीडा	गहों का सुख राह	फलएत रोगी	कसमभ ऐसा	दुष्टकुल जा·	धिष्ठान नासव·
९ धर्म	अधर्मी दुष्टपी·	धार्मिक होय	दुष्ट धर्म रहित	धर्म में प्रीति	धर्मनी र्य	धर्मे प्रीति	दुष्ट बुद्धी
१० कर्म	दुष्ट पुत्र	कीर्ति वान्	कुल दीपक	कीर्ति वान्	शुभ कर्मी	संपति वान्	दुष्ट स्वभाव
११ आप	राजसी कर्म	बहु लाभः	पृथ्वी लाभ·	विवेक युक्तः	आयु वृद्धिः	गुणवान् पुत्र	कीर्ति वान्
१२ व्यय	दुष्ट खर्चे	नेत्र पीडा	पापी रोग	धन हीन	कृशात शरीर	व्याधि युक्तः	सत खर्च में प्रीति

जन्म लग्न में स्त्री के मृत्यु कारक ग्रह ॥

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ।
अष्टमे च यदा सौरीस्तस्य भार्या न जीवति १

टीका॥जन्म लग्न से छठ मे स्थान भौम राहु और सातवें हो शनि आठवें स्थान पड़े तो उसकी भार्या न जीवे ॥ यह वचन पुरुष जातक में कहा है ॥ १॥

परात्क्रमी अपराक्रमीग्रह

मूर्तौ शुक्र बुधो यस्य केंद्रे चैव बृहस्पतिः ॥

पातालस्थे यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेपिच
पाप दृष्टोपि शेषरा सद्यः प्राणा हरः स्मृतः

टी०॥जन्मलग्न से सातवें राहु और छठे आठवें चंद्रमा हो अह पाप दृष्टिसे दे खेते होंय तो बालककी मृत्यु होय अथवा होनेही लग्न में राहु होय चंद्रमा छठे होंय पाप ग्रह की दृष्टि होय तो मृत्यु जानियें ॥१॥

जन्म लग्ने यदा भौमश्चाष्टमेच वृहस्पतिः
वर्षेच द्वादशे मृत्युर्य दि रक्षति शंकरः १

टी०॥जन्म लग्न में मंगल होय आठमें स्थान मेंवृहस्पति होय पाप ग्रहकी दृष्टि होय तो बारह वर्ष में मृत्यु जानियें॥१॥

शनि क्षेत्रे यदा सूर्यो भानु क्षेत्रे यदा शनिः
वर्षेच द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि।२

जो शनि के घर में सूर्य होय और सूर्य के घरमें शनि होय तो बारह वर्षे में मृत्यु जानियें ॥

षष्ठाष्टम स्तथा सूर्यो जन्म काले यदा बुधः
चतुर्थ वर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ३

टी० लग्न में छठे आठवें जो बुध हो तो चौथे वर्ष मृत्यु पावे जो शं० र० तोभी ३॥

भौम क्षे यदा जीवः षष्ठाष्टासुच चंद्रमाः
वर्षेष्ठ मेपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि १

टी० मंगल के घर में वृहस्पति हो और छठे आठवें चंद्रमा हो कोई ग्रह देखता नहो तो ईश्वर रक्षित बालक भी ८ वर्ष में मृत्यु होवे ॥१॥

दशमोपि यदा राहुर्जन्म लग्ने यदा भवेत
वर्षेतु षोडशे ज्ञेयो वृधे मृत्युर्नरस्यच ॥

टी० जन्म लग्न से दसवें राहु होंय अथवा लग्नमें हीहोतो १६ वर्षमें मृत्यु होय॥१॥

ग्रहों की दृष्टि

पादेक दृष्टिर्दशमे त्रतीये द्विपाद दृष्टिर्नव पंचमेवा
त्रिपाद दृष्टिश्चतुरष्ट केच संपूर्ण दृष्टिः सम सप्तकेच
शनिस्त्वेका दशे पूर्ण दृष्टि जीवस्य कोणके

र्विनष्टतनयां रविजो दरिद्रां। शुक्रः शशांकतनयश्च गुरु श्च साध्वी मायुः स्वयं च कुरुते च शर्वरीशः ॥१॥ धनस्थान कुर्वंति भास्कर शनैश्चर राहु भौमा दारिद्र्यदुःखमतुलं नि यतं द्वितीये। वित्तेश्वरी म विधवां गुरु शुक्र सौम्या नारीं प्र भूत तनयां कुरुते शशांकः ॥२॥ सहजस्थान सूर्येन्दु भौमगु रु शुक्र बुधास्तृतीये कुर्य स्त्रियं बहु सुतां धन भागिनीं च। सत्यं दिवाकरसुतः कुरुते धनाढ्यां लक्ष्मीं ददाति नियतं कि लसैंहिकेयः ३। सुहृत्स्थान। स्वल्पं पयो भवति सूर्य सुते चतुर्थे दौ र्भाग्य मुस्र किरणो कुरुते शशी च। राहुर्विनष्ट तनयां क्षितिजो ल्पवीर्जा सौख्यान्वितां भृगुसुतेज्य व धाश्च कुर्युः ॥४॥ सुतस्था न। नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ चंद्रात्मजो बहुसु तां गुरु भार्गवौ च। राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्या प्रसूति निरतां कुरुते शशांकः ॥५॥ रिपुस्थान षष्ठस्थिता शनि दिवाकर राहु भौमा जीवस्तथा बहु सुतां धन भागि नीं च। चंद्रः करोति विधवां मुशना दरिद्रां वेश्यां शशांकत नयः कलहप्रियां च ॥६॥ जायास्थान। सौरारजीवबुधराहु रवीं दु शुक्राः स्त्र्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः। वैधव्य बंधन भयं क्षय वित्त नाशं व्याधि प्रवास मरणं नियतं क्रमेण ॥७॥ मृत्युस्थान। स्थानेऽष्टमे गुरु बुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः। सूर्यः करोति विधवां धनिनीं कुज श्च सूर्यात्मजो बहु सुतां पति वल्लभां च ॥८॥ धर्म। धर्मस्थिता भृगु दिवाकर भूमिपुत्र जीवाः सुधर्म निरतां शशिजः सुभोगां। राहु श्च सूर्य तनयश्च करोति वंध्यां नारीं प्रसूततनयां कुरुते शशां कः ९। कर्म। राहुर्नभस्थ लभते विधवां करोति पापे परां दिन करश्च शनैश्चरश्च। मृत्युं कुजोऽर्थ रहितां कुटिलां च चंद्रः शेषाग्र हा धनवती बहु वल्लभां च ॥१०॥ आय। [illegible] सुतां [illegible] शशांकः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्यां आयुष्मतीं सु

स्यच।मंदस्यदशा १० वर्षाणि।गुरो श्चैकोणविंशति
राहो द्वादशा वर्षाणि शुक्रस्ये केच विंशति ॥१॥

(अष्टोत्तरी महादशा)

सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष ६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
आर्द्रा पु अपुन श्लेषा	मघा पूर्वा उत्तराफाल्गुनी	हस्तचित्रा स्वा विशाख	अनुराधा ज्येष्ठा मूल	पूर्वाषा उ सा अभि श्रवण	धनिष्ठा शतभि पूर्वाभाद्रपद	उत्तरा भा रेवती अ भरणी	कृतिका रोहिणी मृगशिर

(अंतर्दशा लाने का क्रम)

महादशाख्य स्वदशाब्दनिघ्ना भक्ताः स्ववाहु
शशिभिः समाद्याः॥ अंतर्दशास्युर्गगनेचरा
णां तदेक भावोहि महादशा स्यात् ॥ २ ॥

टी० दशा के वर्षों से दशा के वर्षों को गुणाके १०८का भाग देना जो मिले उसे वर्ष जानो फिर बारह गुणा करे १०८का भाग दे मिले सो महीना फिर तीस गुणा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले उसे दिन जानना फिर आठ गुणा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले सो घटी जानना फिर ६० गुणा करे एकसौ आठ का भाग दे जो मिले सो पल जानना फिर वर्ष मास दिन घटी पलों को सूर्य में संयुक्त करना अंतर्दशा इस रीति से सबको जानना चाहिये ॥ २॥

सूर्य की महादशा वर्ष ६ - आर्द्रा पुनर्वसो पुष्य श्लेषा इन नक्षत्रों में

सूर्यः	चंद्रः	भौमः	बुधः	शनिः	गुरुः	राहुः	शुक्रः
०	०	०	०	०	१	०	१
४	१०	५	११	६	१	८	२
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

गुरु की दशा के वर्ष १९ - धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद ये नक्षत्र							
गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
३	२	३	१	२	१	२	१
४	१	८	०	७	४	११	६
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	९
२०	०	०	०	०	५०	४०	२०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

राहु की दशा के वर्ष १२ - उत्तराभाद्रपद रेवती अश्विनी भरणी ये							
राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
१	२	०	१	२	१	१	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	[illegible]भ

शुक्र की दशा के वर्ष २१ - कृत्तिका रोहिणी मृगशिर ये नक्षत्र ॥							
शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
५	१	२	१	३	१	३	२
१	२	११	६	३	११	८	४
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

विंशोत्तरी दशा

जयनो नजनुर्भमंक हृत क्रमसोर्केन्दुकुजागुरूरयः
शनिचंद्रजकेतुभार्गवाः पारशेषा दशाधिपास्ततः

टी० अश्विनी से लेके जन्म नक्षत्र तक जो संख्या होय तामें २ घटाय देय फिर ९ का भाग दे शेष रहें जो सू·चं·मं·रा·वृ·श·बु·के·शु· ये दशापति जानो ॥

(दशा का भुक्त भोग्य)

ऋतुद्विगिरयो धृतिर्नृपति धृति मघह्यानखा
समाः क्रमतो हिमताऽश्यादिमाजनिभस्या घटिकाः स
माताः भभोगेन भक्ताः फलं भक्त पाकस्तत्कृना दशा

मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्रमा	योगिनी
० ४ २७	१ ० १८	० ११ ६	१ २ ६	० ११ २७	० ४ २७	१ ४ ०	० ४ ६०	० ७ ०	७ ० ०
रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
१ ४ १२	२ ४ २४	२ १० ६	२ ६ १८	१ ० १८	१ ० ०	० १० २४	१ ६ ०	१ ० १८	१८ ० ०
बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
२ १ १८	२ ८ १२	२ ३ ६	० ११ ६	२ ८ ०	० ६ १८	१ ४ ०	० ११ ६	२ ४ २४	१६ ० ०
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
३ ० ३	२ ८ ९	१ १ ६	३ २ ०	० ११ १२	१ ७ ०	१ १ ९	२ ११ ६	२ ६ १२	१९ ० ०
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
२ ४ २७	० ११ २७	२ १० ०	० १० ६	१ ५ ०	० ११ २७	२ ६ १८	२ १ ६	२ ८ ६	१७ ० ०
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
० ४ २७	१ २ ०	० ४ ६	० ७ ०	० ४ २७	१ ० १८	० ११ ६	१ १ ९	० ११ २७	७ ० ०
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
३ ० ०	१ ० ०	१ ८ ०	१ २ ०	३ ० ०	२ ८ ०	३ २ ०	२ १० ०	१ २ ०	२० ० ०

चनेषुच युद्ध बुद्धिः॥ सिद्धंच कार्यमपियत्र सदावि
नष्टं स्यात्तान्वे दृशानिदशागमने भवंति॥६॥

टी०॥ झूठा वाद विवाद दूसरे को मारना बांधना धन की हानि मित्र बंधु
से लड़ाई की बुद्धि सिद्ध कार्य का नाश यह शनि दशा का फल जानिये ६॥

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलास
मभिरामनोभिरामैः॥ हेमादिरत्नविभवागमको
प्यथानं स्यात्तदैव बुधदशागमने भवंति॥७॥

टी०॥ सुंदर स्त्री का सुख और सब प्रकार के भोग विलास सुवर्ण और रत्ना
दिक की प्राप्ति धन संग्रह ईश्वर स्मरण ये बुधकी दशा का फल जानना ७

भार्या वियोग जनितंच शरीर दुःखं द्रव्यस्य हानिश्च
लितश्च परं परांच॥ रोगाश्च बन्धु कलहश्च विदेशताच
केतोर्दशाजनन कालदशा भवंति॥८॥

टीका॥ स्त्री वियोग से शरीर पीड़ा द्रव्य की हानि बंधु कलह देशां
तर गमन करे यह केतु की दशा में फल जानिये॥८॥

आराम वृद्धि पति सर्व शरीर वृद्धिं श्वेतातपत्र धन
धान्य सभाकुलंच॥ आयुःशरीर सुत पौत्र सुखं
नराणां द्रव्यंच भार्गव दशा गमने भवंति॥९॥

टी०॥ बाग आदि स्थान की प्राप्ति शरीर पुष्टि श्वेत छत्र की प्राप्ति धन धा
न्य की वृद्धि आयु की पुत्र पौत्र की वृद्धि द्रव्य प्राप्ति ये शुक्र की दशा का फल

योगिनी दशा क्रम

स्वर्क्षः पिनाकिनयनैः संयोज्य वसुभिर्भजेत्॥
योगिन्यष्टौ समाख्याता शून्य घातेन संकटा १

टीका॥ अश्विनी से जन्म नक्षत्र की संख्या में तीन मिलावे आठ का भा
ग दे शेष अंक बचे सो योगिनी दशा जानिये जो शून्य बचे तो संकट
की दशा जानिये॥१॥ (योगिनी के नाम)

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका पिच॥
उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्यष्टौ दशा स्मृता॥२

उल्कायशा जन्म हरने वाली राज्य भय करने वाली सिद्ध कार्य की सिद्धि करने वाली संकटा व्याधि मरण क्लेश की देने हारी ॥ २ ॥

वर्ष दशा का फल

रवि दिन नख संख्या चंद्रमा व्योम बाणे क्षितितनय गज भुवी चंद्रजः षट् शराश्च ॥ शनिरस संख्या वाक्पतिर्ना-गवाणो नैयन युग कराद्यः सप्ततिः शुक्र संख्या ॥ ३ ॥ जन्म नाविंशतिः सूर्ये त्रीणिवेद चंद्रमा ॥ चतुर्थे चाष्ट भौमे च षष्ठे बुध चतुर्थकं ॥ सप्तमंदशा सौरिस्य न्नवमे चाष्टमे गुरोः ॥ दशमे राहु विख्याता त्तद्वेन्तु भृगोर्दशा ३ फलं ॥ पंथा भोगो रुजा पंच सौख्यं पीडा धनं क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्म सूर्य दशा फलम ४

टीका ॥ सूर्य की २० दिन की दशा जानिये - चंद्रमा की ५० दिन की दशा मंगल की २८ दिन की - वुध की ५६ दिन की - शनि की ३६ दिन की - बृहस्पति की ५८ दिन की दशा जानिये - राहु की ४२ दिन की दशा जानिये - शुक्र की ७० दिन की दशा जानिये - सूर्य की दशा में मार्ग चले चंद्रमा में भोग प्राप्ति होय - मंगल की दशा में रोग शोक झगड़ा वुध की दशा सुख कारक - शनि की दशा पीड़ा कारक - गुरु की दशा धन देने वाली राजा से मिलाप करावे - राहु की दशा में नाना प्रकार के शोच उपजें - शुक्र की दशा में शुभ होय ॥ ४ ॥

(ग्रहों की नित्य दशा का प्रकार)

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितं ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिन दशोच्यते ॥ रवि चंद्रो भौम राहु गुरु मंदश्च केतु सितो ॥ क्रमेणो का दशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि

टीका ॥ गई भई तिथि और वार और नक्षत्र अपने नाम के अक्षर इन सब को जोड़ के इकट्ठा करे और ९ का भाग दे शेष जो रहे सो सूर्यादि दशा पति जानिये इसी प्रकार नित्य दशा क्रम से जानिये और वर्ष दशा के तुल्य फल जानना चाहिये ॥ (दूसरा मुहूर्त्त)

गुरु १३ महीना एक राशि भोगता है तिसका फल मध्य में दो मास
जानिये-शुक्र एक मास एक राशि भोगता है और मध्य में सात दिन
फल देता है-शनि ३० मास एक राशि भोगता है सो अंत के छः
महीने फल देता है-राहु केतु १८ अठारह महीना एक राशि
भोगते हैं-अंत में दो मास फल देते हैं ॥१॥

(द्वादश भवनों के नाम फल)

लग्न धन सहज सुहृत पुत्र रिपु वधू जाया मृत्यु धर्म
कर्माय व्ययाख्यानि द्वादश भवनानि ॥ फलम् ॥
सूर्यः स्थान विनाशं भयं श्रियं मान हानिं भयं दैन्यम् ॥ वि
जयं मार्गपीडां सुकृतं हानिं सिद्धिं चायुर्भयं हानिम् ॥ १ ॥
चन्द्रो लग्ने च धनं सौख्यं रोगं कार्यं हानिं श्रियम् ॥ श्रियं मृ
त्युं नृपभयं सुखमायं व्ययं क्रमात् ॥ २ ॥ भौमो रिपुभीतिं
धननाशमर्थं भयं तथार्थं क्षतिमर्थलाभम् ॥ धनाल्पं
शत्रुभयं च पीडां शोकं धनं हानिमतः क्रमेण ॥ ३ ॥ बुधः
सुबंधं धनं मन्युभीतिं धनं स्वजनं स्थानमथो च पीडाम् ॥
अर्थं स्वं सौख्यमथात्मसौख्यं अर्थक्षतिं जन्मगतः हि
करोति ॥ ४ ॥ गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखं शुभम् ॥
मानरोगं सुखं दैन्यं लाभं पीडां च जन्मभात् ॥ ५ ॥ कविः
शत्रुनाशं धनं सौख्यमर्थं सुतान्श्रियो : साध्वसं शोकं
मथेन ॥ देह हृत्सु लाभं विपत्तिं धनाप्तिं धनाप्तिं तनो ॥
त्यात्मनो जन्मराशेः ॥ ६ ॥ सर्वनाशं प्राप्तिं वित्तना
शं प्रपत्ते धनं शत्रुवृद्धिं सुतात् : सुहृत्त्विम् ॥ श्रियं दो
षसंधिं रिपुर्व्ययं तथा दौर्मनस्यं धनं बहुनर्थम्
॥ ७ ॥ राहु हानिं तथा नैःस्व धनं वैरं मृत्युं श्रियम् ॥ कलि
वधुं च दुरितं वैरं सौख्यं स्वं च क्रमात् ॥ ८ ॥ केतुः कम
लं वैरं सुखं भीतिं सुखं धनम् ॥ ग्लानिं गदं दुष्कृतं च
शोकं कीर्तिं स्वं शत्रुनाशम् ॥ ९ ॥ इति द्वादश फलम् ॥

तैसेही कृस्न पक्ष में आठवां बारहवां चौथा और जानिये परंतु शुक्ल पक्ष में चंद्रमा का बल कृस्न पक्ष में तारा का बल जानिये ॥१॥

ये खेचरा गोचर तोष्ट वर्गो दशा क्रमाद्दाप्य शुभा भवंति
दानादि भाते सुतरांप्रसन्ना तेना धुना दान विधिं प्रवक्ष्ये २

टीका॥ जो ग्रह गोचर में अष्टक वर्ग में दशा क्रम में नेष्ट होय तिस के प्रसन्नता के लिये दान विधि कहते हैं ॥२॥

(वारों के अनुसार दान)

भानुस्तांबूल दानाद्वहरति न्रणां वेदना तथा सरोत्थं सोमः
श्रीखण्ड दानादवनिज सुतो भोजनात्पुण्य दानात्॥ सौ
म्यः शास्त्रस्य मंत्राद्गुरु हर भजनाद्भार्गवः शुभ्र वस्त्रात्
तैलस्नानात्प्रभाते दिनकर तनयो ब्रह्मनत्या परे च॥ ३॥

टीका॥ रविवार को तांबूल देना सोमवार को चंदन देना मंगल को भोजन गुड़ धानी बुध को शास्त्रोक्त मंत्र जप कराना गुरु को शिवजी की आराधना बेसन का लड्डू शुक्र को श्वेत वस्त्र खीर भोजन शनि को तेल लगाना और ब्राह्मण को प्रसन्न करना दंडौत करना ये सब अशुभ फल को दूरि करि शुभ फल देता है ॥२॥

(ग्रहों के दान और जप)

माणिक्य गोधूम सवत्स धेनुः कौसुंभ वस्त्रं गुड हेम ताम्रं
आरक्तकं चंदन मंबुजंच वदंति दानं हि विरोचनाय॥१॥
सद्वंशपात्र स्थित तंडुलांश्च कर्पूर मुक्ता फल शुभ्रवस्त्र
युगोप युक्तं वृषभंच रौप्यं चंद्राय दद्यात् घृत पूर्ण कुंभम्
प्रवाल गोधूम मसूरिकाश्च वृषां तरश्चापि गुडः सुवर्णम्
आरक्त वस्त्रं करवीर पुष्पं ताम्रं च भौमाय वदंति दानम् ३
वस्त्रंच नीलं कलधौत कांस्यं मुद्गाज्य गारुत्मत सर्व पुष्पं
दासीच दंतो द्विरदस्य नूनं वदंति दानं विधुनन्दनायम् ॥४
शर्कराच रजनी तुरंगमः पीत धान्य मपि पीत मम्बरम्।
पुष्परागलवणं सकांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयनाम् ५

नि कदाचिद्देवपुरुषस्यैवं ग्रहा पीडनम् ॥२॥

टीका॥देवता ब्राह्मण इनको आदर पूर्वक नमस्कार करना दिन दिन गुरु के साधु के वचन मानना कथा श्रवण करना होम यज्ञ के दर्शन करना और मन को शुद्ध रखना ग्रहों के निमित्त जपदान करना इन बातों से सब पीडा दूर होय और शुभ फल प्राप्ति होय ॥ २॥

जातकर्म

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नांदिश्राद्धं विधानतः
जातकर्मततः कुर्यादन्ये स्तनमनात्पुरा ॥ १॥

टी०॥ पुत्र के उत्पन्न होने पर पिता तत्काल नांदी श्राद्ध विधिपूर्वक करे तिस पीछे जब तक कोई अन्य जात बालक का स्पर्श न करे उसे प्रथम जात कर्म कहते हैं ॥१॥

नामकर्म

पुष्यार्क चित्रा पैत्र मैत्र मृग भे ज्येष्ठा धनिष्ठोत्तरा-
दित्याख्येषु च नाम कर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ
अह्नि द्वादशके तथान्य दिवसे शस्ते तथैकादशे गो
सिंहालि घटेषु शुक्र बुध योर्जीवे शशांके पि च ॥१॥

टीका॥पुष्य हस्त चित्रा स्वाति अनुराधा मृगशिर ज्येष्ठा धनिष्ठा तीनों उत्तरा पुनर्वसु ये नक्षत्र नाम कर्म में शुभ हैं और जन्म से ११ तथा १२ दिन अथवा १६।२०।२७।१०० ये दिवस नाम कर्म में शुभ हैं और वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये लग्न शुभ हैं और रवि बुध गुरु शुक्र सोम के वार शुभ हैं और रिक्ता विना तिथि और शुभ योग ये नाम कर्म में वर्णित हैं सो बुधजन इसको विचार के कहें ॥ १॥

(अवकहडचक्र नाम के लिये कहे हैं)

चू चे चो ला अश्विनी ली लू ले लो भरणी च ॥ आई
ऊ ए कृत्तिका स्याद्वो वा वी वू तु रोहिणी ॥१॥ वे वो का की
मृगशिरः कू घ ङ छ तथार्द्रका ॥ के को हा ही पुनर्वसुः
हू हे हो डा तु पुष्यभं ॥ डी डू डे डो तु आश्लेषा मा मी मू मे मघा स्म
मो टा टी टू पूर्वफल्गु टे टो पा पी मरं तथा ॥ पू षं णा ठा हस्त-

आंदोलशायनं पुंसो द्वादशे दिवसे शुभम् ॥
त्रयोदशे तु कन्यायां न नक्षत्र विचारणा ॥१
टी०॥ जन्म होने के उपरांत पुत्र को १२ दिन और कन्या को १३ दिन पा
लने में शायन करावे और नक्षत्रादि के विचार की कुछ आवश्यकता नहीं

(दुग्धपान का मुहूर्त वृहस्पति के मत से)

एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत् ॥
अन्नप्राशननक्षत्रे दिवसेोदयराशिषु ॥२
टी०॥ जन्म होने के पीछे ३१ वें दिन अन्नप्राशन के जो नक्षत्र उनमें
शंख में दूध भरि के बालक को पिलाना चाहिये ॥२॥

(तांबूल खाने का मु०)

सार्द्ध मासद्वये दद्यात्तांबूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरादिक
सम्मिश्रं विलासाय पहिलायत ॥ मूले चित्राकरतिष्य हरिद्व
न्द्वेषु पौष्णे तथा मृगशिरे दितिवासरेषु ॥ अर्केंदुजीवभृगु
बोधन वासरेषु तांबूलभक्षण विधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः ॥२॥
टी०॥ जन्म होने के पीछे ढाई महीने में कपूर आदि पदार्थ मिला क
र तांबूल बालक को मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशि
र पुनर्वसु धनिष्ठा और रविवार सोमवार गुरुवार शुक्रवार बुधवार इन
वारों और नक्षत्रों में तांबूल भक्षण शुभ जानना ॥२॥

(सूर्यावलोकन वा कुआ पूजन मुहूर्त)

हस्तः पुष्य पुनर्वसु हरियुगं मैत्रं त्रयं रोहिणी रेवत्यु
त्तरफाल्गुनी मृगयुता षाढोत्तरस्वातिभे ॥ मासे तु
र्ये तृतीयके शनिकुजौ त्यक्त्वा च रिक्तातिथिं सिंहा
दित्रयकुंभराशिसहितं निष्क्रामणं शस्यते ॥२॥
टी०॥ हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी
रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढ स्वाति चौथे वा तीसरे मास
में शनि भौम रिक्ता इन बिना सिंह कन्या तुला कुंभ इन शुभ दिनों में
पहले बालक को बाहर निकाल के सूर्यावलोकन कराना शुभ है ॥२॥

नन्दाथ चापकुंभ मकरं हित्वाच रिक्तां तिथिं षष्ठींच
वै नथाष्टमीमपि सिनीं वालांच चूडां शुभाम ॥ १ ॥
जन्मतस्तु तृतीयेब्दे श्रेष्ठमिच्छंति पंडिताः
पंन्चमे सप्तमे चापि जन्मतो मध्यमं भवेत् ॥ २ ॥

टी०॥ रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाति पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र सोम बुध ये वार शुक्ल पक्ष उत्तरायन मुंडन में ये शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन कुंभ मकर इन को छोड़ के और रिक्ता छठि आठें अमावस्या इन दुष्ट तिथों को छोड़ के जन्म से पांचवें वर्ष में मुंडन शुभ है और पांचवें सातवें वर्ष में मध्यम है ऐसा पंडितों ने कहा है ॥ १ ॥ २ ॥

(विद्यारंभ मुहूर्त)

रेवत्यां मृग पंच के हरि युगे पूर्वासु हस्तत्रये मूलेन्द्वे
अभिजिद्व भानु भृगुजे सौम्ये धनुर्जीवयोः ॥ १ ॥
अब्दे पंचम के विहाय निखिलान् आयंच षष्ठीयु
तान् रिक्तां सौम्य दिने तथैव विबुधैः प्रोक्तः मुहूर्तः शुभः २

टी०॥ रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा हस्त चित्रा स्वाति मूल अश्विनी अभिजित और रवि गुरु शुक्र बुध सोम ये वार शुभ तिथि शुक्ल पक्ष उत्तरायन जन्म से पांचवें वर्ष में प्रथम विद्याभ्यास करना शुभ है ॥ १ ॥

(यज्ञोपवीत का मुहूर्त)

पूर्वाषाढ हरि त्रयेश्वि मृग भे हस्त त्रये रेवती ॥ ज्येष्ठा
पुष्य भगेषु चोत्तर गते भानौच पक्षे सिते ॥ गो मीन
यमदा धनुर्वनं चरे शुक्रे ऽर्क जीवेतिथौ पंचम्यां दशा-
मीवये व्रतमहः प्रोक्ते द्विजन्मे द्वये ॥ १ ॥ ॥ २ ॥

टी०॥ पूर्वाषाढ श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त चित्रा स्वाति रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वा फाल्गुनी और शुक्ल पक्ष उत्तरायन वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्न रवि गुरु सोम शुक्र -

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितःस्यात् पश्चाद्दशा
हमिह पञ्चदिनानि वृद्धः ॥ प्राक् पक्षमेव गदितोऽस्त
मितस्तु पश्चे जीवस्तु पक्षमपि वृद्ध शिशुर्विवर्ज्यः ॥१॥

टी०॥ पूर्व में शुक्र का उदय होय तो तीन दिन बाल संज्ञा कहिये और अ
स्त होय तो १५ दिन वृद्धत्व के वर्जित हैं और पश्चिम में उदय होय तो पांच
दिन बाल संज्ञा और १० दिन वर्जित हैं और गुरु के उदय अस्त में पंद्र
ह २ दिन वर्जनीय हैं॥१॥

(अस्तोदय का लक्षण)

षष्टि घस्र शुक्र वासर वर्जिताः द्विशत दिवसान् ॥
सितोऽस्तमेति तथा ॥ गगन बाण पूर्वे दृश्यते ।
पश्चिमे नव दिनास्त मनं तु भृगो बुधैः ॥ १॥

टी०॥ २४२ वें दिवस शुक्र का अस्त पूर्व में होता है और उसका उदय
७२ वें दिवस पश्चिम में होता है और २५० वें दिवस पश्चिम में अस्त
होता है तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्व में होता है ॥ २॥

अस्त में वर्जनीय कर्म

वापी कूप तडाग यज्ञ गमनं क्षौरं प्रतिष्ठा व्रतं
विद्या मंदिर कर्ण वेधन महा दानं गुरोः सेवनम्
तीर्थस्नान विवाह काम्य हवनं मंत्रोपदेशं शुभम्
दूरे शोभन मिच्छता परिहरेत् अस्ते गुरौ भार्गवे १

टी०॥ वापी कूप तलाव यज्ञोपवीत यज्ञ यात्रा मुंडन देव प्रतिष्ठा
विद्यारंभ नवीन गृह प्रवेश बालक का कर्ण छेदन महा दान गुरु
सेवा करनी तीर्थ स्नान विवाह उत्तम कर्म होम मंत्रोपदेश यह
कर्म गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित हैं ॥१॥

(विवाहे वर्जनीयं)

नाषाढ प्रभृति चतुष्टये विवाहो नो पौषे नच मधुसंज्ञ
के विधेयः । नैवास्तं गतवति भार्गवे च जीवे वृद्धत्वे न खलु
तयोर्न बालभावे ॥ गीर्वाण मंत्रिणि मृगेन्द्रमधिष्ठि
तेन नासे धिके त्रिदिन संस्पृशि नाम भेच ॥ १॥ ॐ

गुरु वलम

नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला पुत्रान्विता हतध
वा सुभगा विपुत्रा । स्वामिप्रिया विगत पुत्र धवा धना
स्या वंध्या भवेत्सुरगुरौ क्रमशो भि जन्म ॥१॥ १॥

टीका ॥ कन्या के जन्म स्थान में जो बृहस्पति होय तो विवाह में मृत्यु दायक अत्यंत वालकों को है और दूसरी धनवती तीसरी में विध वा चौथी में व्यभिचारिणी पांचमी में पुत्रवती छठी में पति का नाश सातवी में सौभाग्यवती आठवी में पुत्रहानि नवी में पतिप्रिया दशमी में वालक का नाश ग्यारवी में धनाढ्या वारही में वंध्या जानिये ऐसे क्रम से फल जानिये ॥ २॥

(गुरु अनुकूल करने का विचार)

जन्म त्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः
विवाहेऽथ चतुर्थेष्ट द्वादशस्थो मृतिप्रदः १

टी॰ ॥ जन्म का तीसरा छठ दशमा गुरु नेष्ट है परंतु पूजा करने से शुभ फल देता है और चौथा आठवां वारहवां गुरु मृत्यु दायक है विवाह में २

(अथ मैत्री ज्ञानं)

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिग्रह गणो तथा।
भकूटं नाडि मैत्री च तुल्येना चाष्ट मैत्रिका १

टी॰ ॥ वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह मैत्री गण मैत्री भकूट नाडी इनकी मैत्री जानिये ॥ १॥

मिलाप में वर्णादि कों का ज्ञान

मीनालि कर्कया विप्रा नृपाः सिंहाज धन्विनः ॥ कन्या नक्र वृषा वैश्या मृद्रा युग्म तुला घटाः १ द्वंद चाप घट कन्यका तुला मानवा अज वृषो चतुष्पदो ॥ कर्क मीन मकरा जलो द्भवाः केसरी वनचरो लि कीटको ॥ २॥ कन्या सिंह भयाव नकन्याभं वर आदपि ॥ गणयेन्नवभिः शेषे त्रिघ्न द्विभम सत्स्वतम ॥ ३॥ अश्वो गज अजा नाग सर्पो सर्प श्वान विडाल कः ॥ मेषो विडाल कश्चैव मूष को मूषकश्च गो ॥ ४॥

कुंभ ये दो दो राशि द्विर्द्वादश हैं सो वर्जित हैं – चतुर्थ दशम एकाद श उभय सप्तम ॥

चतुर्थे दशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः
उभयः सप्तमः साम्य मेकर्हे शुभ मुच्यते

टीका॥ वधू वर की परस्पर राशि चौथे दशवें तृतीये एकादश और सप्तम अथवा एक राशि होय तो शुभ जानिये॥ (ग्रह मैत्री)

नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं· मं· गु·	सू· बु·	चं· सू· गु·	सू· शु	सू· चं· मं·	बु· श	बु· शु·
सम	बु	मं· बृ· शु· श·	शु· श·	मं· बृ· श·	श· ०	मं· बृ·	बृ· ०
शत्रु	शु· श·	०	बु	चं·	बु· शु·	र· चं·	र· चं· मं·

मार्तंड के मत से गुणों का मिलाना

वर्णों का गुण – दोनों का एक वर्ण अथवा वर का ऊंचा होय तो शुभ जा०

वैरभक्ष्यो गुणाभावो द्वयोः साम्ये गुणद्वयं
वश्य वैरे गुणश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्द्धकम्

वर्णों के गुण | वश्य के गुण

नाम	ब्रा·	क्ष·	वै·	शू·	२	·।·	१	०	२	चतुष्पद
ब्राह्मण	१	०	०	०	·।·	२	०	०	०	मानव
क्षत्री	१	०	०	०	१	०	२	२	२	जलचर
वैश्य	१	१	१	०	०	०	२	२	०	वानर
शूद्र	१	१	१	१	२	०	१	०	२	कीट

एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुभान्यतः॥
तदा सार्द्धो गुणश्चैक तारा शुद्धो मियस्त्रयः॥
उभयोनै शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत्

टीका॥ एक की शुभ तारा और एक की अशुभ तारा होय तो डेढ १॥

गौ.	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	०
भैस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	१	२
मृग	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
बानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नौला	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	३	४

ग्रहों के गुण दोनों का स्वामी १ मैत्री के गुण २ सम शत्रु का गुण ०० मित्रत्व के गुण ४ शत्रु मित्र का गुण १ सम का गुण ०० शत्रु का गुण शून्य ०० इस प्रकार ग्रह मैत्री के गुण जानिये – गणों के गुण – दोनों का गुण एक होय तिसके गुण ६ वर देवतागण – वधू मनुष्य गण तिसके गुण ६ इस विपरीत होय तो ५ गुण और वर राक्षस वधू देवता तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

ग्रहों के गुण

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रह
सू.	५	५	५	३	५	०	०	सू
चं.	५	५	४	१	४	·।।।	·।।·	चं.
मं.	५	४	५	·।।·	५	२	·।।·	मं.
बु.	३	१	·।।·	५	·।।·	५	४	बु.
बृ.	५	४	५	·।।·	५	·।।·	३	बृ.
शु.	५	।।।·	३	५	·।।·	५	५	शु.
श.	०	·।।·	·।।·	४	३	५	५	श.

गणों के गुण

गण	देवता	मनुष्य	राक्षस
देवता	६	६	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

भिन्न नाड़ी के गुण ८ एक नाड़ी शून्य

नाड़ी गुण	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	७	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	०	०

सत्कूट के गुण ७ अथवा असत्कूट के

एक राशि भिन्न चरण भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एकादश इनके गुण ७ भिन्न राशि नक्षत्र एक इसके गुण ५ प्रीति षड़ाष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नवम पंचम इनमें वर दूरता हो योनि शत्रुता होने पर भी भूकूट के गुण ६ होते हैं असत्कूट के लक्षण वर योनि मैत्र

मध्यम जानिये–राक्षस मनुष्य गण में मृत्यु जानिये ॥ १ ॥ + ॥ +

कूट फलं

षडाष्टके यमृत्युः पंचमे नवमेन पत्यताज्ञेया ॥
द्विर्द्वादशे निधनता शेषेषु मध्यमता ज्ञेया ॥ १ ॥

टीका ॥ दोनों का षडाष्टक होय तो मृत्य कारक नव पंचम अनपत्य कारक दूसरा बारहवां निर्धनता कारक शेष रहा सो मध्यम जानना ॥ १ ॥

नाड़ी फलं ॥ अग्र नाड़ी व्यधे द्भर्त्ता मध्य नाड़ी व्यधे द्वयं ॥ पृष्टनाड़ी व्यधेत्कन्या म्रियते नात्र संशयः १

टी० ॥ दोनों की आदि नाड़ी होय तो भर्त्ता को बुरी– मध्य नाड़ी दोनों को हों तो अशुभ अंत्य नाड़ी दोनों को होय तो कन्या को अशुभ है ॥ १ ॥

मध्य नाड़ी ॥ जठरे निधनत्वंच गर्भे मरण मेवच्च पृष्टे दौर्भाग्य माप्नोति तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ १ ॥

टी० ॥ दोनों की मध्य नाड़ी निर्धनता कारक और गर्भ नाश का और अंत्य नाड़ी दुर्भाग कारक जानिये ॥ ज्योतिःप्रकाशे पार्श्वनाड़ी

निधनं मध्य नाड्यांतु दंपत्यो नैव पापूर्वयोः
करग्र पृष्ट नाड्योन विद्यते इतितद्वच ॥ १

टी० ॥ दोनों की मध्य नाड़ी मृत्य प्रद जैसे ही पार्श्व नाड़ी परंतु विवाह में पार्श्व नाड़ी मना नहीं है और के मत से क्षत्रियादि को मना कही है ॥

(असत्कूट विचारः)

स्त्री के नक्षत्र से वर को नक्षत्र निकट हो तो अशुभ और वर के नक्षत्र से स्त्री को नक्षत्र दूर हो तो शुभ जो नक्षत्र १ वा स्वामी १ हो तो शुभ जानिये ॥

राजमार्त्तंड के मत से
दुष्ट कूटों का दान कहते हैं ॥

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदद्यात्कांस्यं सरूपं
नव पंचमेच ॥ नाड्यां सुधेन्वन्न सुवर्णव
स्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मण तर्प्पणञ्च ॥ १ ॥

टीका ॥ अति आवश्यक में दुष्ट कूटादिक के दान वर और वधू को

कर्त्तरी दोष लक्षणं

लग्ना च्चं द्रा द्व्यय द्विस्थो पाप खेटो यदा तदा
कर्त्तरी वर्जनीया सा विवाहो पनयादिषु ॥ १
न हि कर्त्तरिजों दोषः सौम्य योर्यदि जायते ॥
शुभग्रह युतं लग्नं क्रूर योर्नास्ति कर्त्तरी ॥ २

टीका ॥ लग्न अथवा चन्द्रमा से १२ वें दूसरे स्थान में जो पापग्रह पड़े तो कर्त्तरी दोष होता है इसमें विवाह यज्ञोपवीत वर्जित है इन हीं स्थानों मे जो शुभग्रह होय तो कर्त्तरी दोष नहीं है और जो लग्न शुभ ग्रह युक्त हो तो शुभ जानिये और क्रूर ग्रह युक्त होय तो शुभ जानिये॥२

(वर बधू की राशि से अष्टम राशि का दोष)

वर वध्वो र्वेटो श्चापि जन्म राशे श्च लग्नतः
त्याज्य मष्टम लग्नं स्या द्विवाह व्रत वंधयोः १

टीका ॥ वर वधू और वट इनकी राशि से वा जन्म लग्न से वर वधू की ब्रह्म चारी की से अष्टम लग्न विवाह यज्ञोपवीत की होय तो अशुभ है ॥ १ ॥

(दुष्ट मुहूर्त्त कथन)

तिथ्यं श्प्रोदिन मानस्य रात्रि मानस्य चैव हि
महूर्त्तः कथितः स्तेषु दुर्मुहूर्त्त शुभे त्यजेत १

टीका ॥ दिनमान और रात्रिमान इनका पन्द्रहवां अंश दुर्महूर्त्त होता है सो शुभ कार्य में वर्जित है ॥ १ ॥

(यामार्द्धादिक कथनं)

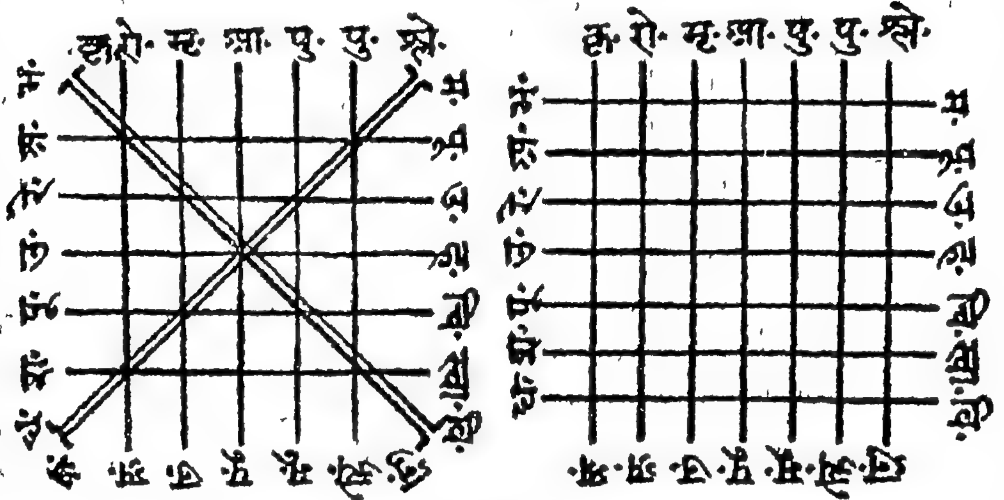
सूर्याद्या मदलं दिवैव निगमाद्य पूर्वी षनाग त्रिषट
संख्या कं कुलिकं दिवेंद्र रविदिङ् नागर्तु वेद द्विकम्
व्येकं तं निशि षोडषांश मपरे तिथ्यंश मुरू तितेः। का
लं कटकमे नि घंट ममरे ज्यज्ञा स्फुजि ज्ञाः क्रमात

टीका ॥ दिनमान का सोलहवां भाग कुलि रविवार से होता है सो शुभ कार्य में वर्जित है और रात्रि में एक एक घटाइये किसी के मत से पंच दशांश वर्जित है शुभ कार्य में इस रीति से जानना ॥ १ ॥

श्रुत्यग्निभे भिजिद्वाहये वैश्वे दस्त्रेतु रुद्रभे ॥८॥
मूलादित्येव पुष्येंद्रे मैत्राश्लेषे मघांतके। हस्तभा
ग्ययमांत्ये च हस्ताहिर्बुध्न्यभे तथा। चित्राजचरणे
स्वाती वारुणे च परस्परं। वासवेंद्राग्निभेतद्वेधः सप्त
सलाकजः। त्याज्यः पापोद्भवो यत्नाद्व्रतबंधादिकर्मसु

(नक्षत्र चरण वेधः)

टीका ॥ पंच सप्त शलाका चक्र में जिस रेखा पर जो नक्षत्र होय और उसी में पापग्रह होय तो वह नक्षत्र विद्ध होय व्याह में अशुभ जानिये ॥



(श्लोकः)

सप्त पंच सलाकाभ्यां विद्धमेकार्गलेनयत्
लत्तोपग्रह गंधिष्णं पादमात्रं शुभेत्यजेत्। १
वेधमाद्यंतयोरेवमन्योन्यं हि तृतीययाः॥
क्रूरैरपि त्यजेत्पादं केचिद्दृचुमेहर्षयः ॥ २

टीका ॥ विद्ध नक्षत्र और एकार्गल लत्ता उत्पात नक्षत्र इन के चरण में शुभग्रह का योग होवा पापग्रह का वह चरण शुभकर्म में वर्जित है पहिले चरण में चौथे से और दूसरे चरण से तीसरे चरण से परस्पर वेध होता है किसी के मत से पापग्रह का वेध चरण वर्जित है सो एकार्गल दोषमार्त्तंडके मत से विष्कंभादि दुष्ट योग रहित दिन नक्षत्र से अभिजित सहित गुणना से विषम नक्षत्र में सूर्य होय तो

अधिक वा न्यून होय तो या मित्र दोष नहीं — दूसरा पक्ष लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह वा पापग्रह समअंश होय तो जामित्रदोष होय गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियों के मत के अनुसार जामित्रदोष विवाह में वर्जित जो लग्न से एकादश षष्ट तीसरे इन स्थानों में सूर्य होय तो जामित्र दोष सुखदायक जानिये ॥ १ ॥

चरत्रयदोष

कर्के लग्नेथ वा मेषे घटांशो यदि दीयते
तुलायां मकरे चंद्रे वैधव्यं जायते ध्रुवं १

टीका ॥ कर्क और मेष लग्न में तुला का अंश और मकर तुला का चंद्रमा ऐसे योगों का दोष वैधव्य कारक होता है सो वर्जित है विवाह में ॥ १ ॥

तिथि के अनुसार वर्जित लग्न

प्रतिपदि तुला मकरौ सिंह मकरौ तृतीयायां क
न्या मिथुने पंचम्यां सप्तम्यां चैव धनु कर्कौ नवम्यां
कर्क सिंहौ एकादश्यां धनुमीनौ त्रयोदश्यां वृषभ
मीनौ शून्य लग्नानि तिथियो गात् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रतिपदा को तुला और मकर तृतीया को सिंह मकर पंचमी को कन्या मिथुन सप्तमी को कर्क धनु नवमी को कर्क सिंह एकादशी को धन मीन त्रयोदशी को वृष मीन इन तिथि में ये शून्य लग्न जानो शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

दोष निवारण

द्यूनं विना केंद्र गतो मरेज्यस्त्री कोणगो वापि हि लक्षमेकं
न हंति दोषास्त्रि शतं भृगुश्च शतं वुधो वापि हि दृश्य मूर्तिः

टीका ॥ गुरु शुक्र वा वुध ये इन स्थानों में १।४।६।१०।५ होय तो एक लक्ष तीनसौ दोषों को क्रम से दूर करते हैं गुरु तो १०००० शुक्र ३०० बुध १००० ऐसे लग्न शुद्ध जानना ॥ १ ॥

(बारह राशियों का उदय प्रमाण)

गजाग्निदस्रा २३८ गिरिषट्कदस्रा २६७ व्योमेंदुरामा ३१० रसरामरामा ३३६ कुरामरामा ३३१ गजचंद्ररामा ३१८ नागेंदु

शको वेदाब्धि वेदोन: षष्टिभक्तायनांशका:
देयास्ते तुरवौ स्पष्टे चरलग्नादि सिद्धये ॥ १॥

टीका॥ वर्त्तमान शाके में ४४४ घटाने से जो शेष बचे उसमें ६० का भाग दे चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नों को सिद्ध के लिये अयनांश को स्पष्ट सूर्य के अंश और घटिकाओं में मिलाने से सायन सूर्य के होवे ॥ १ ॥

उदाहरण

मा॰ ६०)१२२५ (२२ अंश ७।१।१७।१५ स्पष्ट रवि
  १२०   २२।५ अयनांश मिलावे
  १२५
  १२०
  ५
  ६० गुणाक   यह सायन जानिये
  ६०) ३०० (५ कला
   ३००
   ००

लग्न से इष्ट काल लाना

स्फुटसायन भार्गक भोग्यांश फल संमति:। सायनं शतनोश्वापि भुक्तांश फल संयुता। मध्यलग्नोदये युक्ताषष्ट्या प्रानाडिकास्तनो

टीका॥ सायनसूर्य से भोग्य और सायन लग्न से भुक्त बनाने की रीति दोनों का योग करके और सूर्य लग्न के मध्य का उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देने से लग्न पर से सूर्य का भोग्य काल स्पष्ट हो जाता है ॥

उदाहरण ॥ शाके १७६८ कार्तिक शुदि ९ भोम वार को स्पष्ट सूर्य की राशि आदि ७।१।१७।१५ और अयनांश: २२।५ को सूर्य के अंश और घडियों में मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादिक होता है ७।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशि का सूर्य २३ अंश २२ घटी १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ये हुआ ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक का है वृश्चिक का उदय कहिये ३३१ इन से भोग्यांश को गुणने से ये अंक हुए २१९४ इन में ३० का भाग देने से आये ७३।८ इसको सूर्य का भोग्य काल जानिये ॥

रवि के भोग्य काल लाने का क्रम

अंश घटी

भाग ३०) २१९४ १५।७३।८ ये सूर्य भोग्य काल जानिये

२१०

९४

९०

४

६० गुण

२४०

१५ शेष

भाग ३०) २५५ (८ शेष

२४०

१५ शेष

लग्न से भुक्त काल लाने का क्रम

राशि अंश कला

९ १३ २० मकर लग्न

२३ ५ यह अयनांश मिलावे

१० ५ २५ सायन लग्न भुक्त

२६७ लग्न का उदय

१३३५ १७५

१३३५ १७५

१११ १५०

१४४६ १५० अंश

६०) ६६७५ (१११

६०

६७

६०

७५

६७

१५

भाग ३०) अं. शक्तांश

१४४६ (१४८.१२

१२०

२४६

२४०

६

६

६० गुणाक

भा. ३०) ३६०

३६०

इष्ट का भाग	१२४
६०) ७८२ (१३।२	१२०
६२	४
१८२	७ १ १७ १५ प्रातःकाल का सूर्य
१८	१३ २ गम्य घटी
६० गुणक	७ १ ३० ३५
भाग २०) १२०	३२ ५ अयनांशाः
१२०	७ ३ ३५ १७ सा० ता० सूर्य

(इष्ट घटी से लग्न लाने का क्रम)

तत्कालार्कः सायनो स्वोदयघ्ना: भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः॥ एवंयातांशैर्भवेद्यात कालो भोग्यः शोध्यो भीष्ट नाडी पलेभ्यः ॥ १ ॥ तदनु जहीहि ग्राह्योदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यं ॥ सहित मजादिगृहैरशुद्ध पूर्वैर्भवति विलग्नमदोयनांशहीनम् ॥ २ ॥ २ ॥

टीका ॥ सायन सूर्य जिस राशि में होय उसका उदय लेना और सायन सूर्य का ३० अंश में हीन करे शेष बचे सो भोग्यांश जानिये उदय राशि को भोग्य से गुणिये ३० का भाग दीजे तो सूर्य का भोग्यकाल निकल आवे सूर्य का गतकाल लाने का क्रम - सायन सूर्य के उदय में उसी के अंशादि को गुणा के ३० का भाग दे तो भुक्तकाल आ जायगा इष्ट घटियों के पल करके उस में भोग्य काल को हीन करे शेष जिस राशि में सूर्य का उदय होय वह राशि और आगे जितनी राशि उदय में कम हो उनको घटादे जो उदय न घटै तो अशुद्ध जानिये शेष अंको का ३० गुणाकर अशुद्ध राशि का भाग दे तो अंशादिक आवेंगे उससे शेष राशि से अशुद्ध राशि को पूर्व राशि तक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट हो जाय ॥

(उदाहरण) पीछे जो सायन सूर्य आया है वह ७।२३।३५।१७ उसका उदय ३३१ सूर्य के अंश २३। ३५।१७ ये ३० में हीन करे शेष बचे वह भोग्यांश ६। २४।४३ इनको उदय से गुणै वे अंक

राशि का उदय नहीं घट सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं ॥ शेष रहे ५८।१६ इनको ३० से गुण किया तो वे अंक १६।५८ हुए इसका अशुद्ध उदय से भाग दे जितने भाग आवें वे अंश और शेष अंक ५६ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर उन के उदय में भाग दिया तो घटी १२ शेष १५६ को ६० से गुणा तो हुए ९३६० फिर उन के उदय में भाग दिया तो प० ३५ मेष राशि से अशुद्ध की पूर्व राशि तक राशि १० और ओर स्पष्ट की अंशादिक ६।१२।३५ तिनके और राशि के अंकों के लिखे से स्पष्ट सायन लग्न १०।६।१२।३५ अयनांश १२।५ सायन लग्न के अंश घटियों में घटाने से स्पष्ट लग्न ८।१४।७।३५ मकर लग्न अंश ७ घ० ३५ पल जा०

शेषांक १५ १६
१६५० ३० गुणक
२६७) १६५८ (६ अंश
१६०२
५६

५६
६० गुणक
२६७) ३३६० (१२ घ०
२६७
६६०
५३४
१५६

१५६
६० गुणक
२६७) ९३६० (३५ प
८०१
१३५०
१३३५
१५

राशि	अंश	घटी	पल
१०	६	१२	३५
	१२	५	अयनांश घटावे
	१४	७	३५

इस प्रकार मकर लग्न का प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥

सूर्य और लग्न एक राशि के होंय तो इष्ट घटी लाने का क्रम

यदि तनु दिननाथावेक राशौ तदंशांतर हृत उदयः स्यात्खाग्नि ह्यत्विष्टकालः

टीका ॥ सूर्य और लग्न एक राशि के होंय तो दोनों का अंतर निकाले और तिसको राशि के उदय से गुणे ३० का भाग दे जो लब्धि हो

लग्नात्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः।
द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः॥

टीका॥ लग्न के ३० अंश होते हैं तिनका आधा १५ अंश होरा कहाता है और लग्नही का तीसरा भाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और लग्न का नवम भाग ३।२० ऐसे नवमांश कहाता है और लग्न के सातवें भाग ४।१७ ऐसे सातवां भाग सप्तांश कहाता है और लग्न का १२ वां भाग २।३० ऐसे द्वादशांश कहाता है और लग्न का ३० वां भाग का त्रिंशांश कहते हैं इस रीति से १ लग्न के ३० अंश होते हैं उन्हीं अंशों के ६ वर्ग होते हैं॥

आदौ ग्रहस्थानं

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते

टीका॥ जिस ग्रह का जो राशि होय सो ग्रह उसी का कहाता है॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
ग्रह	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	ग्र.

होरा कथनं॥ श्लो.॥ सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्ने होरा चंद्रार्कयोः समे

टीका॥ विषम लग्न में १५ अंश तक सूर्य की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा सम राशि में १५ अंश तक चंद्रमा की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा शुभ सूर्य की होरा अशुभ जानिये॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	०
अंश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	०१५
अंश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	

द्रेष्काणकथनं

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च॥
द्रेष्काणश्च तृतीयस्तु लग्नान्नवमराशियः १

टीका॥ प्रथम द्रेष्काण लग्न के ३० अंश तिनमें ३ द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काण का स्वामी लग्न का दूसरे द्रेष्काण का स्वामी पंचम का तीसरे द्रेष्काण का स्वामी नवम का होता है श.मं.सू. इनका द्रेष्काण अशुभ और शुभ जानिये १

लग्नात्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः।
द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः

टीका ॥ लग्न के ३० अंश होते हैं तिनका आधा १५ अंश होरा कहाता है और लग्न ही का तीसरा भाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और लग्न का नवम भाग ३।२० ऐसे नवमांश कहाता है और लग्न के सातवें भाग ४।१७ ऐसे सातवां भाग सप्तांश कहाता है और लग्न का १२वां भाग २।३० ऐसे द्वादशांश कहाता है और लग्न का ३०वां भाग का त्रिंशांश कहते हैं इस रीति से १ लग्न के ३० अंश होते हैं उन्ही अंशों के ६ वर्ग होते हैं ॥

अथादौ ग्रहस्थानं

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते

टीका ॥ जिस ग्रह का जो राशि होय सो ग्रह उसीका कहाता है ॥

राशि	मे॰	वृ॰	मि॰	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	रा॰
ग्रह	मं॰	शु॰	बु॰	चं॰	सू॰	बु॰	शु॰	मं॰	बृ॰	श॰	श॰	बृ॰	ग्र॰

होरा कथनं ॥ श्लो॰ ॥ सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्ने होरा चन्द्रार्कयोः समे

टीका ॥ विषम लग्न में १५ अंश तक सूर्य की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा सम राशि में १५ अंश तक चंद्रमा की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा शुभ सूर्य की होरा अशुभ जानिये ॥

लग्न	मे॰	वृ॰	मि॰	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	०
अंश	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	०॥
अंश	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	

द्रेष्काणकथनं

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च॥
द्रेष्काणश्चान्त्यस्तृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः१

टीका ॥ प्रथम द्रेष्काण लग्न के ३० अंश तिनमें ३ द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काण का स्वामी लग्न का दूसरे द्रेष्काण का स्वामी पंचम का तीसरे द्रेष्काण का स्वामी नवम का होता है श॰मं॰सू॰ इनका द्रेष्काण अशुभ और शुभ जानिये १

नक्ष·	मे·	वृ·	मि·	कै·	सिं·	कं	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·
३।२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६।४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०।०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३।२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६।४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०।०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३।२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६।४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०।०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

द्वादशांशसाधनं ॥ श्लो० ॥ लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेव कीर्तिता ॥

टीका ॥ लग्न के तीस अंश तिसके २। ३० वारह भाग होतेहैं सो द्वादशांश अपनी अपनी राशि से लेके जानिये तिनमें सूर्य मंगल शनि यह अशुभ जानिये और सब शुभ जानिये ॥

मे·	वृ·	मि·	के·	सिं	कं	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	द्वा·
२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३०
२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ५
२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	२ ॥	७।३०
२ ॥	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१२॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१५
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१७॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२२॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२५
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२७॥
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

कहते हैं कोई तीनवर्ग भी शुभ कहते हैं और दो वर्ग एकवर्ग हो यतो वली नहीं शुभ नहीं हैं इससे शुभकार्य में वर्जित हैं ॥१॥

लग्नांश फलमाह

लग्नेन्तुर्दशे भागे वृषस्य मकरस्य च
कन्या कर्कट मीनानां मष्टद्वादशे लिनः

टीका॥ वृष मकर इन के १४ अंश कन्या कर्क मीन इनके ८ अंश वृश्चिक के १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ॥१॥

कुंभस्यांशे च षड्विंशे चतुर्विंशे च तो लिनः
नयुक्कार्मुकयो लग्नं शुभं सप्तदशांशके १

टीका॥ कुंभ के २६ अंश तुला के २४ अंश मिथुन के और धन के १७ अंश ये शुभ फल को देते हैं ॥१॥

एक विंशति मे भागे मेषस्याष्टादशे हरे
संपूर्ण फलदं त्वादौ मध्ये मध्य फलप्रदं

टीका॥ मेष के २१ अंश सिंह के १८ अंश यह लग्नो के शुभ फल के देने वाले हैं और मध्य में होय तो मध्य फल को देते हैं ॥

वर्गोत्तम लग्न के लक्षण॥ अंते तुच्छ फलं लग्नं यदि वर्गोत्तमं न चेत्॥ लग्नस्य स्व नवांशोमः स वर्गोत्तम उच्यते १

टीका॥ लग्न के अंत भाग में वर्गोत्तम न होय तो लग्न अभिष्ट फल देता है और लग्न अपने नवांशक में होय तो वर्गोत्तमी कहिये ॥१

(गोधूलिलग्न कथन)

गोधूलं परजाति के शुभ करं पंचांग शुद्धौ रवेर धास्ता स्त पूर्वतो र्ध घटिका त्वेंदु मष्टारिगम॥ सौम्यांगंकु जम स्मे गुरुपमाह: पातमर्क कमंज स्यात् हिमसु रेवातिसंकरट इदं सद्यो वनाद्ये क्कचित्॥१॥६॥१॥

टीका॥ शूद्रादि को को पंचांग शुद्ध देख कर के सूर्य के अर्द्धास्त समय प्रथम और पश्चात् पंद्रह पल गोधूल काल शुभ है और गोधूल लग्न से षष्ठम और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पाप ग्रह भौम-

कथित है ऐसे दिवस में नूतन पीत वस्त्र करिकें स्त्रियों को प्रथम पल्लव धारण करावे ॥१॥

गांधर्व विवाह मुहूर्त कथनं

शूद्रांत्यसु पुनर्भवा परिणय । प्रोक्तो विवाहोक्तभे नालोक्यं तिथि मास वेध भृगु जेज्यास्तादि तन्नार्कभात् ॥ त्रिश्चार्थे शुभमृतिर्धनं मृतिमृति पुत्रो मृति दुर्भगं श्रीरोन्नत्यपयो धृतिप्राकृत तत्त्वथैत्यय: साभिजित् ॥१॥

टीका ॥ शूद्र आदि और रजक आदि और अन्य जाति जिनकी स्त्रियों का पुनर्विवाह होजाता है उन के धरेजे का मुहूर्त विवाह नक्षत्र अवश्य देखे मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्त को कुछ न देखे इन का दोष नहीं है और सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत नक्षत्र गिने क्रमसे पहले तीन मरण दूसरे तीन धनद तीसरे तीन मरण चौथे तीन मरण पांच वें तीन पुत्र लाभ छठे तीन मरण सातवें तीसरे में दुर्भग आठवें तीसरे में लक्ष्मी नवें तीसरे औन्नत्यता दूसरीति से गांधर्व नक्षत्र जानिये सूर्य के नक्षत्र से चौथा ग्यारहां पच्चीसवां इन स्थानों के नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र अशुभ जानना ॥१॥

(दूसरे मत के अनुसार)

इंद्रादि तिथि वा श्लेषा आग्नेयं वारुणं तथा ॥
अश्विनी वसु, दैवत्यं पट्ट काले शुभं स्मृतम् १

टीका ॥ ज्येष्ठा श्लेषा आर्द्रा कृतिका शतभिषा धनिष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करने में शुभ जानिये ॥१॥

दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त

हस्तादि पंचक भिषक् वसु पुष्य भेषु सूर्यक्षमाज गुरु भार्गव वासरेषु ॥ रिक्ता विवर्जित तिथीष्वलि कुंभ लग्न सिंहे वृषे भवति दत्त परिग्रहोयम् ॥१॥

टीका ॥ हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और मंगल गुरु शुक्र ये वार और चौथ नौमी चौदश - वृश्चिक कुंभ ये लग्न वर्जित हैं और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं ॥१॥

ग्राम शुभ जानिये अन्यथा अशुभ जानिये ॥ २॥

एकभे सप्तमे षष्ठे मग्रह हानिस्त्रिषष्ठगे ॥
तुर्ये वा द्वादशे रोगाः शेष स्थाने भवेत्सुखं

टीका ॥ एक राशि अथवा सप्तम होय तो मृत्यु तीसरी अथवा सातवीं होय तो ग्रह की हानि और चोथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्म की होय तो रोग कारक जानिये शेष शुभ जानना ॥ २॥

(जातक वर्ग जानने का क्रम)

अकचटतपयशा वर्गा रष्टौ क्रमतः स्मृताः
एकोनखेषु वर्णानां स्वरशास्त्र विशारदैः १
अवर्गे षोड शोज्ञेयाः स्वराः कादिषु पञ्चसु ॥
पंच पंचैव वर्णाः स्युर्य शोतु चतुरक्षरो ॥ २॥

टी० ॥ अवर्ग शवर्ग पर्यंत ४९ अक्षर हैं जिसमें अवर्ग के १६ स्वर और कवर्ग से पवर्ग पर्यंत ५।५ तिनके २५ अक्षर हैं और यश इन दोनों वर्गों के ४ स्वर होते हैं यह स्वर शास्त्र के ज्ञाता कहते हैं ॥ १॥ २॥

वर्गों के स्वामी

तार्क्ष्य मार्जार सिंह श्वसर्पाखुगज सूकराः
वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमो रिपुः १

टीका ॥ अवर्ग का स्वामी गरुड कवर्ग का मार्जार चवर्ग का सिंह ३ टवर्ग का स्वान ४ तवर्ग का सर्प ५ पवर्ग का मूषक ६ यवर्ग का गज ७ सवर्ग का मेढा वा मृग सूकर ८ और जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का होय उससे पांच में वर्ग का स्वामी वैरी जानिये और चौथा मित्र और तीसरा उदासीन जानना चाहिये ॥ १॥

काकिणी

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ॥
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्

टीका ॥ अपने नाम के वर्ग को द्विगुणा करे उसमें ग्रामादिक का वर्ग मिलावे और आठ का भाग दे और ग्रामादिक का वर्ग द्विगुणा

और सबवर्गों को गज आय शुभ कही है ॥२॥

मतांतर से आयों के फल

ध्वजे कृतार्थो मरणं च धूमे सिंहे जयश्चाय
शुनि प्रकोपः॥ वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं
ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ॥१॥

टी०॥ ध्वज का फल कृतार्थ जानिये धूम का फल मरण जानिये सिंह का फल जय जानिये स्वान आय का फल कोप- वृष आय का फल राज्य खर आय का फल दुःख जानिये- ध्वांक्ष आय का फल मृत्यु गज आय का फल सुख जानिये ॥२॥

(अथ नक्षत्र के अनुसार व्यय साधन)

पूर्वद्वारे वृषेः श्रेयान् गजः प्राग्यमदिङ्मुखः
क्षेत्र मध्याहते धिष्ण्ये विभक्ते स्यादृहस्यभम्
भेष्वभक्ते व्ययः शेषमायादल्पो व्ययः शुभः।

टीका॥ पूर्वाभिमुख गृहों का गज और बैल ये शुभ कारक होते हैं और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहों का गजायु कहा है और पूर्व में के क्षेत्र फल को आठ से गुणा करे २७ का भाग दे शेष बचे सो घर के नक्षत्र जाने उन नक्षत्रों में आठ का भाग दे शेष रहे सो उस घर का व्यय जानिये और आय की अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ जानिये ॥२॥

(गृहों की राशि विचार)

अश्विन्यादित्रये मेषो मघादित्रितये हरिः॥
मूलादित्रितये धन्वी भद्वयं शेष राशिषु ॥२

टीका॥ गृहों के नक्षत्र अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रों की राशि मेष रोहिणी आधे मृगशिर की वृष आधा मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु की मिथुन पुष्य श्लेषा की कर्क मघा पूर्वा उत्तरा की सिंह हस्त चित्रा की कन्या स्वाति विशाखा की तुला अनुराधा ज्येष्ठा की वृश्चिक मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ की धन श्रवण धनिष्ठा की मकर शतभिषा पूर्वाभाद्रपद की कुंभ उत्तराभाद्रपद की और रेवती की मीन १२

गृहों के स्थानों की योजना

स्थानागारं दिशि प्राच्यां माग्नेय्यां पंच नालयम्
याम्यायां शयनागारं नैऋत्यां शास्त्र मंदिरम् १
प्रतीच्यां भोजनागारं व्यायव्यां पशु मन्दिरम्
भांड कोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देव मन्दिरम् २

टी०॥ पूर्व में स्थान घर १ अग्नि कोण में रसोई का स्थान २ दक्षिण में सोने का स्थान ३ नैऋत्य में शास्त्र का स्थान ४ पश्चिम में भोजन का स्थान ५ वायव्य में शुभ मंदिर ६ उत्तर में भंडार कोश का स्थान ७ ईशान में देव मंदिर ८ इस प्रकार घर बनाना चाहिये ॥ १॥

अल्प दोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय न भवेद् गृहम् ॥
आयव्ययो प्रयत्नेन विरुद्धं च वर्जयेत् ॥ १॥

टी०॥ जिस घर में दोष थोड़े होंय परन्तु बहुत गुणों करके श्रेष्ठ होय तो दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तो यत्न करके वर्जित है ॥ १॥

गृहारंभ चक्रम

आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयं तु कूर्मकम्
प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तु चक्रं बुधैः शुभम्

टी०॥ गृहारंभ से वृषभ चक्र और स्थंभ स्थापन में कूर्म चक्र और गृह प्रवेश में कलश चक्र ये वास्तु चक्र में देख लीजे ॥ १॥

गृहारंभ के मास॥ सौम्य फाल्गुन वैशाख
भाद्र श्रावण कार्तिकाः॥ मासाः स्युर्गृह नि
र्माणे पुत्रारोग्य धनप्रदा॥ १॥

टी०॥ पोष फाल्गुन वैशाख भादों श्रावण कार्तिक इन महीनों में गृहारंभ शिलान्यास स्तंभ प्रतिष्ठा यह शुभ जानिये ॥ पुनि आरोग्य आयु वृद्धि धन की प्राप्ति इन बातों को शुभ करे है ॥ १॥

मासों का फल

शोको धान्यं पंचतानिः पशुत्वं स्वाप्तिर्नैस्तं
संगरं भृत्यनाशम्॥ सच्छ्री प्राप्तिं वह्निभी

सातवां हानि आठवां मृत्यु कारक इस क्रमसे शुभाशुभ फलदायक होतेहैं ॥

शिलान्यास

दक्षिणा पूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमां
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तंभांश्चैवं अति स्थाप्या ॥१॥

टी०॥ पूजन करके आग्नेय कोण में प्रथम शिला स्थापन करे शेष शिला प्रदक्षिण स्थापित करावे इसी प्रकार स्तंभ स्थापित करे १

शिलान्यास नक्षत्र

शिलान्यासः प्रकर्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे
पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्याश्व्युत्तरात्रये २

टी०॥ श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा यह नक्षत्र शुभहैं ॥२॥

सूर्यके नक्षत्र से द्वारचक्रं

शिर ४	कोण ८	शाखा ८	देहल्यं ३	मध्य में ४
लक्ष्मी	उद्वसनं	सौख्यं	गृहपतिमरणं	सौख्यं

शेषनाग के मुख

सिंहे कन्या तुलायां भुजगपतिमुखं शंभुकोणेग्नि
खातं वायव्ये स्यात्तदा स्यात्त्वलि धन मकरे ईशखा
तं वदंति ॥ कुंभे मीने च मेषे रवे निऋति दिशि मु
खं खातं वायव्य कोणे चाग्नि कोणे मुखं वै वृष
मिथुन गते कर्कटे रक्षखातम् ॥१॥ ६॥ ६ ॥

टी०॥ सिंह कन्या तुला इन राशिन के सूर्य में ईशान में मुखजानिये तब अग्नि कोण में खात करावे वृश्चिक धन मकर इनके सूर्य में वायु कोण में मुख जानिये तब ईशान कोण में खात करावे - कुंभ मीन मेष इन के सूर्य में नैऋति में मुख जानिये तब वायव्य में खात करावे वृष मिथुन कर्क इनके सूर्य में अग्नि कोण में मुखजानिये

पश्चाद्देयं त्रिकं नगृहपाते सुखदं भाग्यपुत्रार्थ देयं सूर्यक्षात्क्षुद्रकरक्षं प्रतिदिनगणयेत्सोभचक्रं विलोक्य ॥१॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक संख्या और फल ऐसे क्रम से जानिये प्रथम ३ नक्षत्र में स्तंभारोपण करे तो मृत्यु - दूसरे ५ गर्भ के नक्षत्र में गर्भ सुख करे तीसरे ८ नक्षत्र मध्य के धन सुख पुत्र सुख करे चौथे ८ नक्षत्र पुच्छ के मित्र हानिकारक पांचवें ३ नक्षत्र अग्र भाग के सुख सौभाग्य पुत्र लाभ कारक ऐसे देहली करना शुभ जानिये ॥१॥ (द्वारचक्रं)

अर्काच्चत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ॥ द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्दे शाखा पांचचलुश्चतुः ॥ अधश्चत्वारि दे यानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेन लभते राज्यमुद्वासे कोणकेषु च । शाखायां लभते लक्ष्मी मध्ये राज्यप्रदं तथा ॥ अधःस्थले मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥१

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस के नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्द्ध के तिसका फल राज्य प्राप्ति दूसरे कोण के ८ नक्षत्र तिसका फल उद्वासन तीसरे बाजू के नक्षत्र ८ तिसका फल लक्ष्मी प्राप्ति चौथे ४ भीचे के नक्षत्र तिसका फल राज्य प्राप्ति पांच में मध्य के ३ नक्षत्र तिसका फल मरण ॥१॥ (शांतिकर्म का अग्निचक्रं)

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुरौभ्रे भुवि वन्हिवासः सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशो दिवि भूतलेन

टीका ॥ जिस तिथि में शांति करनी होय तिस तिथि में एक और मिलावे और जो वार होय सो मिलावे और ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल जानना तीन और शून्य बचे तो पृथ्वी में अग्नि का वास जानियो तिसका फल सुख रहे एक बचे तो अग्नि का वास स्वर्ग में जानिये । तिसका फल प्राणनाशक और दो बचे तो अर्थनाशक जानना ॥२॥

(ग्रह के मुख में आहुति का विचार)

तरणि विधुरुभास्करी चंद्रमः कुजसुरेज्य विधेनुदकेतवः ॥ रविभतो दिनभंगणयेत्क्रमात् प्रतिखगे त्रितयं त्रितयन्यसेत् १

लग्नका शुभाशुभविचार ॥ त्रिकोणकेंद्रगैः शुभैः त्रिषष्ठ स्याभसंस्थितैः ॥ असद्भिः स्थिरराशौ च गृहे विशेद्दलेत्रिधौ १

टी० ॥ त्रिकोण केंद्रमें शुभग्रह होय और तीसरे ग्यारहवें पापग्रह होय ऐसी स्थिर लग्नमें गृहप्रवेश शुभ जानिये ॥ १ ॥

गृहप्रवेशलग्न ॥ त्रिषडायगतैः पापैः रंध्रांत्ये तरगैः शुभैः ॥ चंद्रे लग्नारिरंध्रांत्यवर्जिते स्यात्सुमंगलम् १

टी० ॥ तीसरे छठे ग्यारहवें ३।६।११ पापग्रह शुभ और आठवें बारहवें ८।१२ शुभग्रह होंय तो शुभ परंतु चंद्रमा लग्नमें छठे बारहवें आठवें नवें १।६।८।१२।९ होंय तो शुभ है ॥ २ ॥

अशुभ योग लग्नके ॥

धनकेंद्रत्रिकोणस्थः क्षीणचंद्रो न शोभनः ॥ शुभो नैधनगः क्रूरः खलास्तसंस्थोपि नो शुभः १

टी० ॥ लग्नके विषे २।११।४।७।१०।५।९ इन स्थानोंमें स्थित कृष्णपक्षका चंद्रमा तो अशुभ जानना और शुभ ग्रह और नवांशमें तथा १०।७ स्थित होय तो अशुभ जानना ॥

आयुष योग ॥

लग्ने जीवः सुखे शुक्रो बुधः कर्मणि शत्रौ रविः ॥ रविजः सहजे न्यूनशतायुः स्यान्नरागृहम् ॥ १

टी० ॥ लग्नमें बृहस्पति मित्र स्थानी दशमें बुध चौथे शुक्र तीसरे शनि छठे सूर्य ऐसी लग्नमें घरका आरंभ करे तो १०० वर्ष की आयु होय ॥

दूसरा प्रकार

भृगुर्लग्ने बुधे ख्योऽपि लाभेर्कः केंद्रगो गुरुः ॥ यस्यारंभे च तस्या स्युर्वत्सराणां शतद्वयम् ॥ १ ॥

टी० ॥ शुक्र बुध ये दशमें १० स्थानमें हो ११ वें रवि हो केंद्रमें बृहस्पति होय ऐसी लग्नमें गृहारंभ करे तो दो सौ २०० वर्षकी आयु होय ॥ २ ॥

तीसरा ॥ जीवो बुधो भृगुर्योदि लाभगो भानुभूमिजौ ॥ प्रारंभे यस्य तस्यायुः समाशीतिः सह श्रियाः

टी० ॥ बुध बृहस्पति शुक्र ये दशमें स्थानमें हो सूर्य मंगल ये ११वें स्थानमें होय तो लक्ष्मी युत घरकी आयु ८० वर्षकी जानिये ॥ १ ॥

उदीच्यां दिशि प:प्रश्ने विप्रशल्यं कराद्धः ॥ तस्मिन्धनं निर्धन
त्वायकुबेरसदृशस्यहि ॥ ७ ॥ ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल
ल्यं सार्द्धहस्ततः ॥ तच्छो धनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥
॥ ८ ॥ हपया कोष्टमध्ये च वक्षोमात्रं भवेदधः ॥ नृकपाल
मथो भस्म लोहं तत्कुलनाशकृत ॥ ९ ॥ ॰ ॰ ॰ ॰ ॥

टीका ॥ पृच्छक के मुख से आदि अक्षर अ वर्ग का निकले तो पूर्व को डे
ढ हाथ गहरा खोदे तो मनुष्य की हड्डी निकले वह मृत्यु कारक जानिये
१ और कः निकले तो दो हाथ गहरा अग्नि कोण में खोदे तामें गधे की ह
ड्डी निकले उस्से राजदंड का भय कभी निवृत्त न होय २ च अक्षर उच्चार
ण होय तो दक्षिण की ओर कमर की बराबर गहरा खोदे तो नर के हाड
निकले तिसका फल चिरकाल के रोग से मरण होय ३ ट का उच्चारण
हो तो नऋत्य दिशा में डेढ हाथ गहरा खोदने से कुत्ते के हाड निकले ति
स का फल कनजीवे ४ त का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशा में डेढ हाथ
गहरे पर बालक के हाड जानिये तिसका फल घर का मालिक सदा घर
में न रहे ५ प का उच्चारण होय तो वायव्य दिशा में चार हाथ गहरे में ज
ली हुई धान की भूसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्र का नाश खो
टे सुपने दिखाई दें ६ य का उच्चारण होय तो एक हाथ गहरा उत्तर में खो
दे तो ब्राह्मण के हाड निकले तिसका फल कुबेर की बराबर धन का ना
श करे दरिद्र होय ७ श का उच्चारण होय तो ईशान दिशा में डेढ हाथ पर
गौ के हाड जा० तिसका फल गोधन का नाश करे ॥ ८ ॥ ह प य इनका
उच्चारण हो तो मध्य में छाती की बराबर औंडे में मनुष्य कपाल वा भ
स्म वा लोह निकले तिस्का फल कुल नाश इस प्रकार जिस वर्ग का
नामाक्षर प्रश्न कर्त्ता के मुख से उच्चारित हो उसी दिशा में देखे ॥ ९ ॥

भुक्त का विचार

एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्र विप्लवे ॥ विवा
हे तीर्थयात्रायां प्रति भुक्तो न विद्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ गांव के गांव में शहर के शहर में दुर्भिक्ष में काल में देश के उपद्रव

टीका सुगम घा॰दि चक्र ॥												
राशि	मे॰	वृ॰	मि॰	क	सिं॰	कं	तु	वृ॰	ध॰	म॰	कुं	मी॰
सू॰	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं॰	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं॰	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु॰	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
बृ॰	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	६
शु॰	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
श	७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	ऽनुरा	मूल॰	श्रव॰	शत॰	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	श्लेषा
वार	सूर्य	शनि	चंद्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	भौम	भौम	शुक्र	शुक्र
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
गुण	रजो॰	रजो	तमो॰	सतो॰	तमो॰	रजो॰	रजो॰	सतो॰	तमो॰	तमो॰	तमो॰	सतो

(तिथि परत्व लग्न वर्जित)

नंदायामलिहर्योस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायां मीनधनुषोः कालतिष्ठति सर्वदा १ जयायां स्त्री मिथुनयो रिक्तायां मेष कर्कयोः ॥ पूर्णान्नां कुंभ वृषयोर्मनुष्यमरणं ध्रुवम् ॥ २ ॥

टीका ॥ नंदा तिथि को सिंह तुला वृश्चिक मकर और भद्रा तिथि को मीन धन जया तिथि को कन्या मिथुन रिक्ता तिथि में मेष कर्क पूर्णा तिथि में कुंभ वृष इन तिथियों में लग्न वर्जित है ॥ १ ॥

मेषे वेदा वृषे ष्टौ च मिथुने च तृतीयकः ॥ दशा कर्के रविः सिंहे कन्या ऽंक प्रकीर्तितः । षट् तुले वृश्चिके खेंदु धने रुद्रा प्रकीर्तिताः । मकरे ऋषयः प्रोक्ताः कुंभे वाणाः नदाहृताः । मीने सांध्रकाल चंद्रः शौनकश्चेदमब्रवीत् २

टीका ॥ मेष राशि को चौथा वृष को आठवां मिथुन को ३ कर्क को १० सिंह को १२ कन्या को ६ तुला को ६ वृ॰ को १० धन को ११ मकर को ७ कुंभ को ५ मीन को ४ इस प्रकार लाल चंद राशि के अनुसार शौनक मत से वर्जनीय है ॥

टीका ॥ रवि की होरा में गमन करे तो आगे जो शकुन होय तिस को कहते हैं। रजकी वस्त्र युक्त कन्या ४ ब्राह्मण ३ काक २ नौला २ चाष १ बैलगाय ये शकुन मिले ॥ १ ॥

चंद्रस्य होरे द्विज युग्म काक भेरी मृदंगा नकुलः खरोष्ट्रौ
हय श्वागो मेष शुनस्तथैव पुष्पाणि नारी द्वयमेव मार्गे ॥ १

टीका ॥ चंद्रमा की होरा में गमन करे तो मार्ग में दो ब्राह्मण काक नगरि मृदंग और नौला गधा ऊँट घोड़ा गाय वा मेढ़ा कुत्ता और पुष्प दो स्त्री ये शकुन जानिये ॥ १ ॥ (मंगल की होरा)

मर्जार युद्धं कलहः कुटुंबे रजस्वला स्त्री भवनस्य दाहः।
नपुंसकः श्वानितयं द्विजश्च नग्नो विमुक्तो धरणी सुतस्य

टी०॥ मंगल की होरा में गमन करे तो मार्जार युद्ध अथवा स्त्री पुरुष की लड़ाई वा रजस्वला स्त्री वा जलता हुआ घर के नपुंसक ३ कुत्ता नग्न ब्राह्मण ये मिलें ॥ १ ॥ (बुध की होरा)

बुधस्य होरे शकुनश्च सर्वः स्त्री पुत्र युक्ता कलशस्तु पूर्णः
सुचातकश्चाष गजो कुमारः पुष्पाणि नारी खलु दर्पणश्च १

टीका ॥ बुध की होरा में सर्व शकुन स्त्री पुत्र युक्त पानी भरे कलश सातक पक्षी वा चाष पक्षी हाथी वा बालक स्त्री दर्पण ये मार्ग में मिलें ॥ १

(गुरु की होरा)

गुरो द्विजातिर्गणिका च धेनुः स्त्री बालयुक्ता सजलो घटस्तु
ऊर्णा च काको नकुलो बकश्च हंसस्य राजा वह दस्तु वैश्यः १

टी०॥ गुरु की होरा में ब्राह्मण गणिका वा गाय पुत्र सहित स्त्री जल का भरा घड़ा शाल ऊनवस्त्र काक नौला बगुला हंस राजा वैश्य मिलें ॥ १ ॥

शुक्रस्य होरे गणिका द्विजेन्द्रः काकत्रिकं चाथ नपुंसको वा
मद्यं हि मांसं गणिका च धेनुर्धान्यं च शूद्रं त्रितयं च वैश्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ शुक्र की होरा में ब्राह्मण गणिका ३ तीन काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलें ॥ १ ॥

पतंग शूनो यवनश्च नग्नो रजस्वला स्त्री मृतकस्तथैव

कृतिका एक विंशत्या भरण्यः सप्तनाडिकाः
एकादश मघा याश्च त्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ १
विशाखा सार्प चित्रा च स्वाती रौद्र चतुर्दशी ॥
आद्यास्तु घटिका स्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभं २

टीका ॥ तीनों पूर्वा की १६ घटी मघा की ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणी की ७ घटी कृतिका २१ घटी जन्म नक्षत्र संपूर्ण श्लेषा विशाखा चित्रा स्वांति आर्द्रा इन नक्षत्रों की आदि की १४ घटी यात्रा में वर्जित है ॥ १ ॥ २ ॥

(शुभाशुभ वार यात्रा समय)

अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे च बन्धुस्प्रियं
चांगारे नलतस्कर ज्वरभयं प्राप्नोति चार्थं बुधे ॥
क्षेमा रोग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रे शुभो
मंदे बंधन हानि रोग मरणा न्युक्ता निगर्गादिभिः १

टीका ॥ रवि वार को गमन करे तो मार्ग में क्लेश होय अर्थ की हानि सोम वार को गमन करे तो बंधु प्रिय दर्शन होय मंगल को गमन करे तो अग्नि चौर भय ज्वरभय - बुध को गमन करे तो द्रव्य और सुख की प्राप्ति - गुरु को गमन करे तो आरोग्य - शुक्र को गमन करे तो शुभ फल प्राप्ति और लाभ होय शनि को गमन करे तो बंधन रोग होय मरण होय ॥ १ ॥

तिथि वार नक्षत्र अनुसार दिक्शूल वर्ज्या दिशा पर त्व जानना

मूल श्रवण शाक्रेषु प्रति पन्नवमीषु च ॥ शनौ सो
मे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥ ः ः ॥

टीका ॥ पूर्व दिशा को मूल श्रवण ज्येष्ठा परवा नवमी शनि सोम ये वार इन में गमन नही करे वर्जित है ॥ १ ॥

पूर्वा भाद्रपदा श्विनी पंचमी च त्रयोदशी
गुरुर्धनिष्टा द्रौ चैव याम्ये सप्त विवर्जयेत् १

टीका ॥ दक्षिण दिशा को पूर्वा भाद्रपद अश्विनी पंचमी तरश गुरु वार धनिष्टा इनमें गमन नहीं करे ॥ १ ॥

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी

रवि राहु इन के दोषों को सन्मुख चंद्रमा दूरि करता है ॥ १ ॥

दिशा के ऽनुसार सन्मुख चंद्रमा ॥

मेषे च सिंहे धन पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये । तुले च कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्का लिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥

सन्मुखो चार्थ लाभाय दक्षिणे सुख संपदा ॥ पृष्टतः प्राण नाशाय वामे चंद्र धन क्षयः ॥ २ ॥ ३ ॥

टीका ॥ मेष सिंह धन ये पूर्वभागी चंद्रमा वृष कन्या मकर इन का दक्षिण भागी चंद्रमा तुल कुंभ मिथुन इनका पश्चिम में चंद्रमा कर्क वृश्चिक मीन इन का उत्तर में चंद्रमा वास करता है ॥ फल ॥ दिशानुसार सन्मुख चंद्र होय तो गमन करे अर्थ लाभ होय दाहना होय तो धन संपति की लाभ पीछे चंद्र होय तो प्राण नाश करे और बायां चंद्रमा होय तो धन नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

कालवेला विचार ॥ पूर्वाह्णे चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्न के तथा ॥ दक्षिणे अपराह्णे तु पश्चिमे अर्द्ध रात्रके ॥ १ ॥

टीका ॥ दिवस के पहले पहर में उत्तर को और दूसरे पहर में तथा मध्यान में पूर्व को और तीसरे पहर चौथे में दक्षिण को और अर्द्ध रात्रि में पश्चिम को गमन न करना शुभ है ॥ १ ॥ (योगिनी बासः)

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्तरे ॥ तृतीये कादशी वन्हौ चतुर्द्वादिशि नैऋते ॥ १ ॥ पंच त्रयोदशी याम्ये षष्टी भूतंच पश्चिमे ॥ षष्टेच शिवदाः प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ॥ सप्तमी पूर्व वायव्ये अमावास्या षष्टमी शिवे ॥ योगिनी साभवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में योगिनी जानिये – द्वितीया और दशमी को उत्तर में – तीज एकादशी को अग्नि कोण में – चौथ द्वादशी को नैऋत्य में – पंचमी त्रयोदशी को दक्षिण में – षष्टी चौदश को पश्चिम में – सप्तमी पूर्णिमा को वायव्य में – अमावस अष्टमी को ईशान में इस प्रमाण से योगिनी का वास जानिये ॥ १ ॥ फल ॥ ये पीछे और बायें होय तो शुभ जानो – दाहिने होय तो धन हानि करे और सन्मुख मरण के तुल्य फल जानिये ॥ १ ॥

४ लोह प्रात ५ वडवानल ६ खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे आठ नाम तिनके नीचे अंक लिखे हैं २०।२४।६।१०।११।१८।४।३ उनमें गमन काल की तिथि है उनको एक एक अंक में मिलावे ८ का भाग दे शेष जो अंक रहै उसी दिशा को काल जानिये इस प्रकार पूर्वादि ८ दिशा क्रम से जानिये पृष्ठ भागी काल शुभ सन्मुख फल शुभ — पृष्ठ भाग में पातक लोह और वडवानल ये तीनों शुभ — अग्र भाग में खड्ग शुभ — वाम भाग में कवच शुभ — दक्षिण भाग में कांति शुभ — ऐसे दिशानुसार शुभ विचार के उस दिशा को युद्ध में वा यात्रा में गमन करे तो कार्य सिद्ध होय ॥ १ ॥

पंथा राहु चक्रं ॥ स्युर्धर्मे दस्र पुष्योरग वसु जल पद्मी शमेत्रा प्यथार्थे याम्याजां घ्रींद कर्णादिति पित्र्य प वनो ऽन्यथो भानि कामे ॥ ब्रह्माद्र्वा वुध्न्य चित्रा निऋति विधि भगोरव्यानि मोक्ष्योथ रोहिण्यर्यमणाप्पेंदु वि श्वांतिम मदिन करक्षाणि पथ्यादि राहौ ॥ १ ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	श्लेषा	विशा	ऽनुरा	धनिष्टा	शत
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाति	ज्येष्टा	श्रवण	पू·भाद्र·
काम	कृतिका	आद्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	ऽभि·	उ·भा·
मोक्ष	रोहिणी	मृगशिर	उत्तरा	हस्त	पूर्वा·षा	उ·षा·	रेवती

टीका ॥ धर्म मार्ग के नक्षत्र ७ प्रथम दूसरे अर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तीसरे काम मार्ग के नक्षत्र ७ चौथे मोक्ष मार्ग के नक्षत्र ७ या प्रकार चार मार्गों के नक्षत्र में होय सूर्य तो चंद्रमा चारि मार्ग के नक्षत्र में फिरता है तिसका फल सुनो ॥

धर्म मार्ग का फल

धर्म मार्गे गते सूर्ये अर्थोंशो चंद्रमा यदि ॥ तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयंतु विबुधैः शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और अर्थ मार्गी नक्षत्रों में चन्द्रमा होय तो गमन करने वाले को मार्ग में शत्रु भय होय ॥ १ ॥

धर्म मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ॥ संहारश्च भवेत्तत्र मृगौ हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्य का नाश होय

काम मार्गी गते सूर्ये चंद्र मोक्ष गते पिवा ॥ राज्ञो
लाभो भवेत्तस्य स्वर्थ लाभं विनिर्दिशेत् ॥ १०

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और मोक्ष मार्गी चंद्रमा होय तो राजा से लाभ हो
य और अर्थ सिद्ध होय ॥ १० ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे धर्म स्थिते यदि ॥
हेम लाभो भवेत्तस्य सर्व कार्य्यं प्रसिध्यति

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य वा धर्म मार्गी चंद्रमा होय तो हेम लाभ होय
और सर्व सिद्धि होय ॥ ११ ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये अर्थाशे चंद्रमा यदि ॥ विफ
लं यस्य कार्ये च चौर राज रिपुर्भयम् ॥ १२ ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य और अर्थ मार्गी चंद्रमा होय तो राजा चोर
और वैरी से भय होय ॥ १२ ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे काम स्थिते यदि ॥ सर्व
सिद्धि मवाप्नोति कार्ये च जय मेवच ॥ १३ ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य और काम मार्गी चंद्रमा होय तो सर्व कार्य सि
द्ध होय ॥ मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे तत्र व संस्थिते ॥

विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य चंद्रमा दोनों होय तो विघ्न और लड़ाई होय ॥ १४

यात्रा युद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ॥ व्या
पारेष च सर्वेषु यथा राहुः प्रशस्यते ॥ ॥

टीका ॥ यात्रा में युद्ध में विवाह में नगरादिक के प्रवेश में तैसेही सर्व
व्यापारों में प्रवेश करने में यथा राहु शुभ होता है ॥ १५ ॥

गर्गादि का मत ॥ उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्प
तिः ॥ अंगिरा मन उत्साहो विप्र वाक्य जनार्दनः ॥ ॥

टीका ॥ गर्गादिक के मत से रात्रि पिछली घड़ी ऊषा काल होती है उस में

सूर्यभाद्गणये च्चांद्रं सप्तभिर्भागमाचरेत् ॥ त्रिषट्कभ्रमणं चैव द्वि सप्तमहृदाडलं ॥ प्रथमपंचचत्वारि आडलो नास्ति निश्चितम् ॥ आडले ताडनं प्रोक्तं भ्रमणे कार्य नाशनम् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने और सात का भाग दे शेष ३।७ बचें तो उस दिन भ्रमण और कार्य नाश करें अथवा ७ ही बचें तो आडल जानिये उस दिन ताडन करने में शुभ है और १। ४। ५ बचें तो आडल नहीं होता गमन में उक्त है ॥ १ ॥ (हैवर मुहूर्त्त)

सूर्यभाद्गणये च्चांद्रं पक्षादि तिथि वार युक् ॥ नवभिस्तु हरे द्भागं सप्त शेषं तु हैवरम् ॥ १ ॥ ॱ ॱ ॱ ॥

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र की संख्या में पक्ष तिथि वार मिलावे ९ का भाग दे शेष ७ रहें तो हैवर मुहूर्त्त जानो सो गमन में शुभ है ॥ १

(घवाड मुहूर्त्त) ॥ सूर्यभाद्गणये च्चांद्रं त्रिगुणं तिथि मिश्रितम् ॥ नवभिस्तु हरे द्भागं त्रीणि शेषं घवाडकम् १

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने तिसको तिगुणा करे चलती तिथि उसमें मिलावे ९ का भाग दे शेष ३ बचें तो घवाड जानिये १

वारानुसारस्वर ॥ गुरौ शनौ रवौ भौमे शुभो वै दक्षिण स्वरः ॥ अन्य वारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥ १ निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥ यस्स्वरः सेव नाशाग्रे योगीनां मतमीदृशम् ॥ २ ॥ ॱ ॱ ॱ ॥

टीका ॥ गुरु शनि रवि भोम इन चार वारों में दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करने में शुभ है और बुध चंद्र शुक्र इन वारों में बायां स्वर चले तो निर्गम को शुभ है ये योगियों के मत से स्वर विचार है ॥ (वारानुसार शकुन)

अष्टौ पादा बुधे स्युर्नव धरणिसुते सप्त जीवे पदानि ज्ञेयं चैकादशार्के शनि शशि भृगुषु प्रोक्तमर्थे चतुष्कं ॥ तस्मिन काले मुहूर्त्ते सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः शुभो ज्ञाना स्मिं पंचांगशुद्धिर्न खलु शशि बलं भाषितं गर्गमुख्यैः ॥ ॱ ॱ ॱ ॥

टीका ॥ बुध को ८ पद अपनी छाया हो तो गमन करे मंगल को ९ तो गमन

ई शान्यां च शुभं ज्ञेयं मात्म छिक्का महद्भयम॥ ऊर्द्धे चैव शुभं ज्ञे य मध्ये चैव महद्भयम॥ आसने शयने चैव दाने चैव तु भोज ने॥ वा भुंगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्काश्च शुभावहः॥१॥२॥

टी०॥ पूर्व की छींक अशुभ आग्नेय की शोक कारक दक्षिण की दुःख कारक नैऋत की अरिष्ट कारक पश्चिम की शुभ वायव्य की भक्ष शाक नी उत्तर की धन दायक ईशान की शुभ अपनी छींक अत्यंत दुःखदा यक ऊपर की होय तो शुभ दायक और मध्य में होय तो बडा भय कारक और वाङ्गे शुभ दायक आसन १ शय्या २ दान ३ भोजन ४ वायें ५ पृष्ठ में ६ ये शुभ जानिये॥२॥ पल्ली शब्द शकुन॥

वित्तं ब्रह्म शि कार्य सिद्धिमतुलां शक्रे हुताशे भयं याम्ये मित्र वधः क्षयश्च निऋते लाभः समुद्रालये॥ वाय व्यां वर मिष्ट मन्न मशनं सौम्यार्थ लाभस्तथा ईशा ने गृह्णोधि कार्य मतुलं सर्वत्र भूमौ भयम्॥१॥

टी०॥ पल्ली शब्द के अनुसार दिशा का फल ऊर्द्ध दिशा को लक्ष्मी प्रा प्त पूर्व को कार्य सिद्धि आग्नेय को भय दक्षिण को मित्र वध नैऋत को क्ष य पश्चिम को लाभ वायव्य को मिष्ट भोजन उत्तर को लाभ ईशान को का र्य सिद्धि भूमी में सर्वत्र भय जानिये॥ (पल्ली पतन शरट का चढ़ना॥

राज्यं तु सिरसि ज्ञेयं ललाटे वंधु दर्शनं॥ भ्रूमध्ये राज्य सन्मा नं तु नरोष्ठे धन सक्षयं १ अधरोष्ठे धनैश्वर्यं नासांते व्याधि पी ड़नं॥ आयुष्यं दक्षिणे कर्णे वहु लाभस्तु वामके २ चक्षुषो स्तु वंधनं ज्ञेयं भुजे भूपति तुल्यता॥ राज क्षोभ तथा वामे कंठे शत्रु विनाशनं॥ स्तन द्वये च दुर्भाग्यं उदरे मंडनं शुभं भजाना शः पृष्ठदेशे जानु जंघे शुभावहं ४ कर द्वये वस्त्र ला भः स्कंधयो विजयी भवेत्॥ नाभौ वहु धनं प्रोक्तं पृष्ठौ श्वैव ह यादिकं ५ दक्षिणे मणि वंधे च मनस्तापो धन क्षयः॥ मणि वंधे तथा वामे कीर्त्ति र्वृद्धि धन प्रदं ६ नरवेषु धान्य लाभं च व क्रे मिष्टान्न भोजनं॥ गुल्फयो वंधनं ज्ञेयं केशांते मरणं ध्रुवं ७

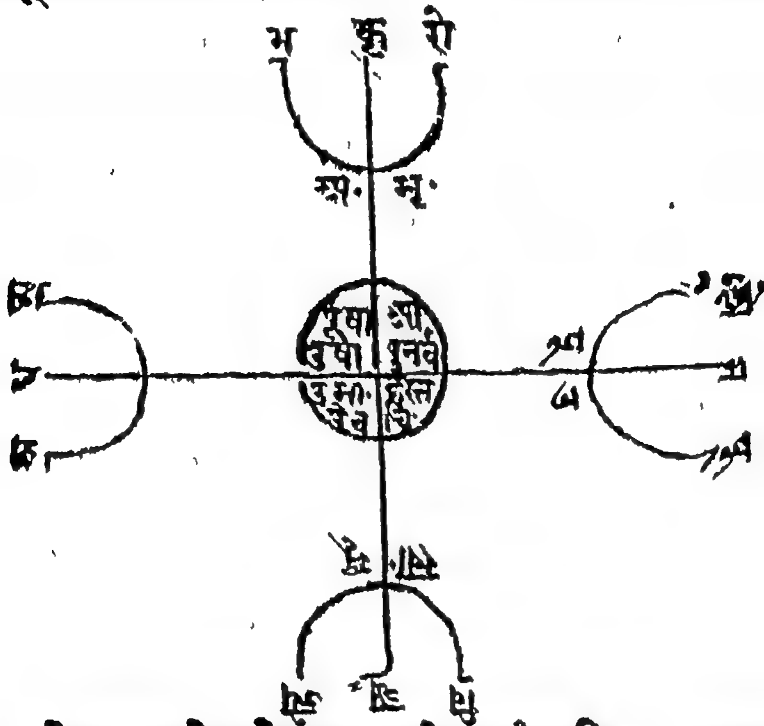
टीका॥ अंग का फरकना दहिना भाग शुभ है और बामां भाग हृदय पीठ ये अशुभ जानना चाहिये॥ २॥

अंगानां स्पंदनं चैव शुभाशुभ विचेष्टितं। तन्मे विस्तरतो ब्रूहि येन स्यान्निर्द्धिधो भुवि। मत्स्य उवाच॥ पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनंदनः॥ स्थानं च वृद्धिमायाति भ्रून सोः प्रियसंगमः॥ भृत्यलब्धीश्चाक्षिदेशे दृगुपाते धनागमः उत्कंठोपगमो मध्ये दृष्टेः राजन्विचक्षणोः॥ ४॥ दृग्वंधने संगरे च जयं शीघ्रमवाप्नुयात्॥ योषिल्लाभोऽपांगदेशे श्रवणांते प्रियश्रुतिः॥ नासिकायां प्रीतिसौख्यं प्रियप्राप्तिरधोष्ठयोः॥ कंठे तु भोग लाभस्याद्भोग वृद्धिरथांसयोः॥ सुहृत स्नेहश्च बाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः॥ पृष्ठे पराजयोत्सेधो जयो वृक्षस्थले भवेत्॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजनने भगे॥ स्थानभ्रंशो नाभिदेशे आंत्रे चैव धनागमः जानुसंधौ परैः संधिर्वलवृद्धिर्भवे नृप॥ एकदेशो भवेत्स्वामी जंघाभ्यां रविनंदनः॥ ८॥ उत्तम स्थान मान्येति पद्भ्यां प्रस्फुरणे नृप॥ अलाभं चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृप॥ १०॥

टी०॥ मनु प्रश्न करते हैं अंग के स्थान स्फुरण का विचार शुभाशुभ फल विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये॥

१ मस्तक स्फुरण	पृथ्वीलाभ होइ	१० नासिका में	प्रीती सुख
२ ललाट स्फुरण	स्थान वृद्धि	११ अधरोष्ठ	प्रियवस्तु प्राप्ति
३ भृकुटी मध्य में	प्रियदर्शन	१२ कंठ में	ऐश्वर्य प्राप्ति
४ नेत्रों में फु०	भृत्य मिले	१३ कंधों में	भोग वृद्धि
५ नेत्रों की कोरों में	धन प्राप्ति	१४ दोनों बाहु	महत्की भेट
६ कंठमध्य	राज्य प्रीति	१५ दोनों हाथ	धन प्राप्ति
७ दृग्वंधन	युद्ध में जीत	१६ पृष्ठ में	दूसरे से जय होय
८ अपांग देश	स्त्री लाभ	१७ उरू में	जय प्राप्ति
९ कर्णांत में	प्रिय मित्र की सु०	१८ कुक्षि में	प्रीति प्राप्ति
		१९ [illegible]	स्त्री प्राप्ति

नक्षत्र तक गिने और गमन करना हो तो कृत्तिका से दिवसनक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंको सूर्य नक्षत्र से सोम नक्षत्र तक गिने इस क्रमसे १



त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमं वह्निचक्रक ।
लाभक्षेमंजयारोग्यं चंद्रगर्भेतु संमतम् ॥ २ ॥

टी०॥ त्रिशूल के अग्रभाग में दिवस नक्षत्र होय तो मृत्यु और वह्नि चक्र में हो तो मध्यम मध्यके चक्र में होतो क्षेम लाभजय आरोग्य ये सब संमत जानिये ॥२॥

गमन की लग्न

चर लग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ॥
लग्ने स्थिरे नगंतव्यं यात्रायां क्षेम मीप्सुभिः

टी०॥मेष कर्क तुला मकर ये चर और मिथुन कन्या धन मीन ये द्विस्वभाव आठ लग्नों में गमन करने से सब कार्य सुफल होय शेष लग्न स्थिर सो वर्जित है यात्रा में ॥२॥

दूसरा प्रकार लग्न का

लग्ने कार्मुकमेषतौलिगमने कार्यं ध्रुवं वा [illegible]णां
पंचत्वं मकरे तथैव च घटे तद्वत्फलं वृश्चिके ॥ सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत् कन्या मीन गतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नवस्त्र ॥ १ ॥

टी०॥जो क्रूरग्रह चतुर्थस्थानमें होउसेवर्जिकें शेषग्रह होयवे शुभपर्से तो ऐसेयोगकरिकें १मासमें वा१ दिवसके अंतमें कार्यसिद्धहोय॥१

गुरुर्भृगुश्चंद्र बुधोयदा स्यात शुभेचलग्नेतुसुतेचयुक्ताः॥ कुर्वंति कार्यस्यच सिद्धिमेव मासद्वयेनापिवदंतिसत्यम्॥२

टी०॥गुरु शुक्र चंद्रमा बुध ये चारों ग्रह पंचम स्थानमें होय तो शुभ होय और १मासमें कार्य सिद्धि होय ॥२॥

जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्ठ करोतियात्रां फलंविल ग्नात्। पक्षद्वयेनापिवदंतिसत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः चलश्चचंद्र

टी०॥गुरु शुक्र वा बुध ये छठे स्थानमें हों और मृग शिर नक्षत्रका चंद्रमा उसी स्थान में हो तो सर्व कार्य एक मास में सिद्धि होय ॥३॥

चेत्सप्तमस्था गुरुसौम्य सोमाः कुर्वंति यात्रा विजयंनृपाणां सर्वेनृपाला भवंति वश्या मासद्वयेनापिच पंचभिर्दिनैः

टी०॥चंद्र बुध गुरु ये सप्तमस्थानमें होय तो यात्रा में विजय होय सबराजा दो मास में वा पांच दिन में वशी भूत होय ॥३॥

क्रूराश्च सर्वे यदि लग्न काले मृत्युस्थिता मत्यु करा भवंति सौम्याः क्रूर्वा भृगु नंदनश्च ददी पायुषां मृत्यु करश्च चन्द्रः॥४

टी०॥ शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें हों तो मृत्युकारक औ रयेनहों तो शुभ होय आयुकी वृद्धि करे परंतु चंद्रमा कारक जानना॥४

धर्मस्थिता यदि भवंति हि पाप खेटाः प्रयाण कालेचतथैव चंद्रमाः नरुजयंवैसबलेच चंद्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ५

टी०॥ नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्रमा होय तो तीन मास में वा चार दिवस सें कार्य सिद्धि होय ॥५॥

धर्मास्थितो वा यदि जीव शुक्रो सोमस्य सूनुर्यदि लग्नकाले। लग्नेचरे वा यदि वा स्थिरे वा कार्यस्य सिद्धिश्च भवेच्च लाभः

टी०॥ धर्मस्थान में गुरु बुध शुक्र चंद्रमा ये चरलग्न में वा स्थिर लग्न में स्थित होय तो कार्य सिद्धि करे लाभ करे ॥६॥

कर्मस्थिता पाप खगास्त सौम्या। कुर्वंति कार्य हानि वर्जिताश्च

प्रस्थाने पि कृते नो यान्महादोषान्विते दिने १

टी०॥ गर्गजी के मत से दूसरे के घर में प्रस्थान रखना और भृगुजी के मत से सीमा से वाहर रखना और भारद्वाज के मत से वाण मात्र पै रक्खे अर्थात् जितना तीर जाता हो उतने पर और वसिष्ठ के मत से नगर के वाहर रक्खे परंतु महादोषयुक्त दिवस में यात्रा न करे परंतु परस्थान रोज रोज चलाता रहे ॥ प्रस्थान दिवस में वर्जनीय पदार्थ

क्रोध क्षौर रतिश्च मामिषगुड धूताश्च दुग्धासवक्षा राभ्यंगगया सितां वर वमी तैलं कटु ह्याक्रमे ॥ क्षीरक्षौ र रती: क्रमात्री शरसप्ताह परंत ह्निने रोगं स्त्वार्तवकं सितान्य तिलकं प्रस्थान के पीतिच ॥२॥ ॥ ॥

टी०। कोप करना और क्षौर स्त्री संग परिश्रम करना भांग गुड धूत रोटल दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्य विषयक भयश्वेत वस्त्र वमन तेल कटु पदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थान दिन वर्जित हैं तिन में दूध क्षौर स्त्री संग ये क्रम से ३।५।७ दिन प्रस्थान दिन से पहले वर्जित है शेष और कही हुई वस्तु केवल प्रस्थान दिन में वर्जित है और श्वेत से भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि तिलक और रोग विषयक चिंता भी प्रस्थान के दिन वर्जित है ॥२॥

मत्स्योक्त शकुन ॥ औषध्यान्न नियुक्तो हि धान्यं कृष्णं तु यद्भवेत् ॥ कार्पासश्च तृणं शुष्कं ... ष्कं गोमय मेवच ।१।

टी०॥ औषधयुक्त मनुष्य काला धान्य कपास सूखा तृण भूमी इत्यादि वस्तु और उपला ये प्रस्थान समय आगे से आवे तो अशुभ जानिये ।१।

इंधनंच तथांगारं गुडं सर्पिस्तथा शुभम् ॥ ॥

अभ्यक्तो मलिनो मंदः स्तथा नग्नश्च मानवः १

टी०॥ ईंधन भस्म गुड घी दुष्ट पदार्थ तेल लगाने से मलिन मंद नग्न मनुष्य ये प्रस्थान समय में अशुभ जानिये ॥२॥

मुक्त केशो रुग्णातश्च काषायां वर धारणः ॥

उन्मत्तः कथितो सत्वो दीनो वाद्य नपुंसकः २

टी०॥ खुले भये केश युक्त मनुष्य रोगी गेरुआ वस्त्र पहिने मनुष्य उन्मत्त

टी०॥ दूसरी वारभी अशुभ शकुन दीखे तो पोडश प्राण स्वांस पीछे जाय तीसरे जो अशुभ शकुन दीखे तो न जाय घर में प्रवेश करे इसके पीछे मग शकुन कहते हैं ॥२॥ गमन कालके उत्तम शकुन ॥

आत्तोवाद्य शब्द भिन्न भेरीर वालया ॥
पुरतः शब्द एहीति शस्य तेन च पृष्ठतः ॥ ग
च्छेति चैव पश्चाद्वा पुरस्तादभविगर्हितः १

टी०॥ यात्राकालके शुभ शकुन कहते हैं वाजों का शब्द भेरी का शब्द नक्कारों का शब्द और आओ यह आगे से होय तो शुभ जानिये और जाओ ये शब्द पीछे से होय तो शुभ आगे होय तो अशुभ जानना ॥२

श्वेताः सुमनसः पुष्पाः पूर्णकुंभस्तथैव च ॥
जलजाः पक्षिणश्चैव मांसमत्स्यस्य पार्थिव १

टी०॥ श्वेत फूल भरा पानी का कलश जलके पक्षी मत्स्य का मांस ये शुभ हैं॥ गावस्तुरंगमो नागो वृद्ध एकः पशुस्त्वजः ॥
त्रिदशाः सुहृदो विप्रा ज्वलितश्च हुताशनः १

टीका॥ गो घोड़ा हाथी वृद्ध एक पशु बकरी देवता मित्र ब्राह्मण जलती अग्नी यह शुभ जानिये ॥२॥

गणिका च महाभाग दूर्वाश्चार्द्रश्च गोमयम्
रुक्मं रूप्यं च ताम्रं च सर्व रत्नानि चाप्यथ ॥१

टी०॥ वेश्या हरी दूब गोवर सोना रूपा तांवा और सव रत्न ये शुभ हैं ॥२॥

औषधानि च सर्वज्ञा यवाः सर्वौषधास्तथा
खड्ग पात्रं पात्रं पताका च मृत्तिकायुधपीठकम् १

टी०॥ औषध सर्वज्ञ पुरुष जो श्वेत सरसों खड्ग पात्र पताका मृत्तिका आयुध आसन यह शुभ जानिये ॥२॥

राजलिंगानि सर्वाणि शवं रुदित वर्जितम्
घृतं दधि पयश्चैव फलानि विविधानि च १

टी०॥ सव राजा के चिन्ह रोदन रहित मृतक दही दूध घी और नाना प्रकार के फल ये शुभ जानिये ॥२॥

सूर्याश्विभानुहिमरोचिपिचंद्रधि॰ ।योत्सार्पाच्चभूमित
नयेषवुधेचहस्तात् ।मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवेश्वदे
वाच्छ्वायासुतेवरुणभात्क्रमशः स्युरेव ॥आनंदः का
लदंडश्च धूम्राख्योथ प्रजापतिः ।सौम्ये ध्वांक्षो ध्वजोना
माश्रीवत्सो वज्रमुद्गरः॥छत्रं मैत्रो मानसश्च पद्माख्योलं
वकस्तथा॥उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सिद्धिश्चैव शुभोमृतः
मुसलोगथगदाख्यश्च मातंगोराक्षसश्चरः॥स्थिरः प्रवर्द्धमा
नश्चयोगोष्टाविंशतिक्रमात् ॥फलेस्वनामसदृशाः योगः
प्रोक्ता महाबुधैः॥फलं॥आनंदोलभतेसिद्धिं कालदंडे
मृतिंतथा॥धूम्राख्येन सुखं प्रोक्तं सौभाग्यंच प्रजापतौ॥
सौम्ये चैव महत्सौख्यं ध्वांक्षे चैव धनक्षयं। ध्वजनाम्नी
च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यसंपदः॥वज्रे क्षयो मुद्गरश्च श्रीना
शस्तथैवच॥छत्रे च राजसन्मानो मैत्रे पुष्टिर्न संशयः॥
मानसे चैव सौभाग्यं पद्माख्ये च धनागम॥लंबके धनहा
निश्च उत्पाते प्राणनाशनं॥मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणे
क्लेशमादिशेत्॥सिद्धियोगे भवेत्सिद्धिः शुभे कल्याणमे
वच॥अमृते राजसन्मानो मुसले च धनक्षयः॥गदाख्ये च
भया विद्या मातंगे कुलवर्द्धनं। राक्षसेनु महत्कष्टं चरेका
र्यंच सिध्यति। स्थिरयोगे गृहारंभः प्रवर्द्धे पाणिपीडनम्

टीका

आनंदादियोग २८ हैं तिनमें एक २ योग के सात वार और सात नक्ष
त्र तिनका क्रम ऐसे जानिये रविवार को आश्विनी से आनंदादि योग
होते हैं सोमवार को मृगशिर से आनंदादि-मंगल को अश्लेषा से आ
नंदादि-बुध को हस्त से आनंदादि-वृहस्पति को अनुराधा से आनं
दादि-शुक्र को उत्तराषाढ से आनंदादि-शनिवार को शतभिषा से
आनंदादि-इस प्रकार से २८ योगों का क्रम जानना॥

॥आगे चक्र लिखा है॥

२७	स्थिर	उ·भा	कृति	पुन·	पू·फा	स्वा·	मू·	श्रव	गृहारंभः
२८	पवर्द्धमान	रेवती	रोहि·	पुष्य	उ·फा	वि·	पू·षा	धान	विवाह

चरयोग

रवौ पूषा गुरौ पुष्यः शनौ मूलं भृगौ मघा ॥ सौम्ये ब्राह्मं विशुण भौमे चंद्रे द्वौ चरयोगकः ॥ १ ॥ क्रकचयोगः ॥ रवौ तु द्वादशी प्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ॥ चंद्रे चैकादशी नवमी बुधवासरे ॥ २ ॥ शुक्रे च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव तु षष्ठिका ॥ गुरौ चाष्टमिका ज्ञेयो योगस्तु क्रकचो बुधैः ॥ ३ ॥ दग्धयोग ॥ बुधे तृतीया कुज पंचमी च षष्ठ्यां गुरौ रवष्टमि शुक्र वारे ॥ एकादशी सोम शनिर्नवम्यां द्वादश्य मर्कामिति दग्धयोगः ॥ ४ ॥ मृत्युदा योग ॥ रवौ भौमे भवन्नंदा भद्रा जीव शशांकयो ॥ जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ५ ॥ सिद्धियोगः ॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिताः ॥ शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धि योग उदाहृताः ॥ ५ ॥ उत्पातादियो· ॥ विशाखादिचतुष्कं च भास्करादिक्रमेण तु ॥ उत्पात मृत्यु काल श्च सिद्धि योगाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ यमदंष्ट्र योगः ॥ मघा धनिष्ठा सूर्ये तु चंद्रे मूल विशाख केकृ त्तिका भरणी भौमे सौम्ये पूषा पुनर्वसुः ॥ ७ ॥ गुरौ पूर्वा श्विनी शुक्रे रोहिणी चानुराधिके ॥ शनौ विशाः श तभिषक यमदंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥ यम घंट योगः ॥ रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव च कृत्तिका ॥ भौमे चाद्रा शनौ हस्तः शुक्रे चैव तु रोहिणी ॥ चंद्रे विशाखा योगो यं यमघंटः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥ मुसल वज्र योगः ॥ चंद्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा शनौ चैव तु रेवती ॥ चांद्रे ज्ञे तु धनिष्ठा का रवौ तु भरणी तथा ॥ उत्तराषाढा भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ॥ अयं मुसल वज्राख्य योगो वर्ज्यः शुभे बुधैः ॥ ९ ॥ १०

नाभौ वेदा शुभावहम्॥ गुह्ये द्वे भयपीडा च हस्ते
हस्ते कर्मयें कम्॥ एकं वामे नाश करं भृत्य
भान्स्वामिभंलकम्॥४॥

टी०॥ नराकार चक्र के अव यव स्थानों में स्थापित करे शिरपै ३ ती
नक्षत्र धरे तिसका फल अर्थलाभ मुखमें ३ तीन नाशका हृदयमें
५ पांच धन धान्यवृद्धि पैरों पर ६ छः दरिद्र हस्तपर ५ मृत्यु नाभि
में ४ शुभ गुदा पर २ भय पीड़ा वायें हाथ पर ५ अर्थ अर्थप्राप्ति दाह
ने पर २ नाश करे॥ दासागमन

दासी चक्रं भवस्था मिदासीभात्स्वामिभंलकं॥ शीर्षे
त्रीणि मुखे त्रीणि स्कंधे द्वे त्रीण्यृक्षं हृदये पंच भू
त्रीणि नाभौ पंच भगे कं भम्॥ जान्वोर्द्वयं द्वयं ज्ञेयं पादयोश्च
त्रयं क्रमात्॥१॥ फलं॥ शिरस्थाने भवेल्लाभो मुखे हानिः
प्रजायते॥ स्कंधे च स्वामिनो मृत्यु हृदये पुष्टि वर्द्धनम्
॥३॥ नाभौ हानि प्रदं प्रोक्तं भगे चैव पलायनम्॥ जा
न्वोः सेवां लभेन्नित्यं पादयोश्च धनक्षय॥४॥ ५

टी० दासी के जन्म नक्षत्र से स्वामी के जन्म नक्षत्र तक गिने तिसका
क्रम सीस पर ३ लाभ मुखमें ३ हानि कंधा पर २ स्वामी की मृत्यु हृद
यमें ५ पुष्टि नाभि में ५ हानि भग पर १ पलायन जानु पर २ सेवा करे
पद पर ६ धनक्षय द्रुतमें शुभ फल देख कर रक्खे॥४॥

(गवादि पशु लेने का मुहूर्त)

शीर्षे त्रयं मुखे द्वे च पादे च्चत्वारि निर्दिशेत्॥ हृदये पंच
श्चत्वारि हानि पृष्ठे भगे चैकम्॥१॥ फलं॥ शिरस्थाने
भवेल्लाभो मुखे हानिप्रजायते॥ पादयोरर्थलाभः स्या
त् हृदये सौख्य वर्द्धनम्॥ [illegible] महल्लाभो गुह्य
स्थाने महद्भयम्॥ [illegible]
[illegible] पक्षः [illegible]॥२॥

टी०॥ गाय वा वृष लेना होय तो उत्तरा फाल्गुनी से लेके दिवस नक्ष

ये प्रथम कानों पर ३ लाभ मस्तक पर ३ लाभ दांतों पर ३ लाभ पूंछ पर ३ हानि सूंड पर ३ शुभ पीठ पर ४ सुख संपदा पेट पर ४ रोग मुख पर ५ मध्यम पायों पर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥२॥

(पालकी चढ़ने का मुहूर्त)

सूर्यभाद्दिनभं यावत्पंच पंच चतुर्दिशि॥ मध्ये तु सप्त देयानि चक्रे ज्ञेयं सुखावहम्॥ फलं॥ पूर्वभागेतु चारोग्यं दक्षिणे काष्ठकारकं॥ पश्चिमे तु कपालं चैव उत्तरे व्याधि संभवः॥ मध्यस्थं च शुभं प्रोक्तं मायुर्वृद्धिकरं परम् पल्यं कारोपरां चैव द्वालकस्य तु धेहितम्॥१॥२॥३॥

टी०॥ सूर्य नक्षत्र दिवस नक्षत्र पर्यंत पालकी पालना इनमें चढना चाहे उस के चारों ओर ओर मध्य में लिखने का क्रम पूर्वभाग में ५ आरोग्य दक्षिण में ५ काष्ठ करना पश्चिम में ५ कृपाल उत्तर में ५ व्याधिना भ मध्य में ७ आयुवृद्धि कारक जानिये ॥१॥२॥३॥

(छत्रचक्रं

उत्तरा रोहिणी रौद्रे पुष्य श्र शततारका॥ धनिष्ठा श्रवणा श्चैव शुभानि छत्र धारणे॥ फलं॥ मूलेत्रिणि सदंडे कंठे चैव तु पंचकं॥ मध्ये वसुप्रदातव्यं शिखरे वेद एव च॥ मूले च जायते नाशो दंडे हानिर्धनक्षयः॥ २॥ कंठे च राजसन्मानो मध्ये छत्र पतिर्भवेत्॥ शिखरे कीर्तिर्वृद्धिश्च जन्मआर्क्षं भान्तकम् ॥ ५ ॥ ३॥

टीका॥ तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शततारका धनिष्ठा श्रवण यह नक्षत्र छत्र धारण में शुभहै परंतु अपने जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम मूल पर ३ जीवनाश दंड पर ७ हानि धनक्षय कंठ पर ५ राज सन्मान मध्य में ८ छत्रपति शिखर पर ४ कीर्ति वृद्धि जानिये ॥१॥२॥३॥४॥

संचकचक्रम्

सूर्य भाद्गणयेत्सांद्रं मंत्र मूले चतुष्टयं तु॥ गात्रेष्वले-

से जन्म नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम खूंटों पर ३ मृत्यु देवें पै
६ अर्थ मध्य के दंड पर ३ सिद्धि रथ के अग्र पर ३ धन लाभ कहा है।
३ भंग अंत के मार्ग पर ६ शुभ और सर्वत्र ३ कलह जानिये ॥ १॥

(तिलों की घानी करने का मु०)

कोल्हू चक्र।

घाणचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चन्द्रभे क्रम ॥ त्रित्री
त्रित्र्यं वेदवेदौ त्रि त्रि त्रि त्रिश्च तथा ॥ त्री त्रि वीरिन्दुभान्
न्यसेज्जये घाणके सुभे ॥ फलं ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं वित्त
शोकक्षयं मे वत्स ॥ स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् १

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा नक्षत्र तक घानी चक्र के भाग ९ नौ
जिस का क्रम प्रथम भाग में ३ हानि दूसरे ३ भाग ऐश्वर्य तीसरे भाग ३
आरोग्य चौथे भाग ३ नाश पांचवें भाग ३ क्षय छठे भाग ३ स्वामी
घात सातवें भाग ३ निर्धनता आठवें भाग ३ मृत्यु नवें भाग ३ सु
ख इन में जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन करे ॥२॥

(ऊख के रस काढने का मुहूर्त)

वेद द्विनेत्र भू ४ वाणा रसाः क्रमात् ॥ फलं ॥ प्र
थमे च लभेल्लक्ष्मीं द्वितीये हानिमेव च ॥ तृतीये सर्वला
भं च चतुर्थे च क्षयं तथा ॥ पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने
शुभं स्मृतम् ॥ ४ ॥ सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदं
सूर्यभात्क्रमशो चांद्रं भिक्षुयंत्रे नियोजयेत् ॥ ३ ॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र के इस क्रम से भाग ८ लिखे प्रथम
भाग ४ लक्ष्मी दूसरे २ हानि तीसरे ४ सर्वलाभ चौथे २ क्षय पांचवें
४ मृत्यु छठे ६ शुभ सात में २ पीडा आठ में ६ धन धान्य इन में जिस
दिन शुभ आवे उस दिन रस काढने का आरंभ करे ॥३॥

(खेती करने का मुहूर्त)

स्वातीब्राह्म ध्रुवोत्तर दितिपुष्य राधा मृदुक्षे सवारे
वस्तक्र विष्णुभं कृषिविधौ हस्तादिनामे विभौ ५८

६ नीली में १ हृदय पर ३ पीठ पर ३ पार्श्व में शुक्काण में ३ नाव के मध्य में ६ दीजिये तिन में ऊपर के मध्य के शुभ और स्थानों के अशुभ जानिये।

(लग्न और ग्रह बल)

त्रिषडाय गतः सूर्यश्चंद्रो द्विव्ययगः शुभः॥
कुजार्की त्रिषडायस्थौ त्रिषट् खेलगो गुरुः॥
द्विसप्तास्ताष्टरिःफाय रिपु संस्थो बुधः स्मृतः
सप्तलास्तारी त्रिनाथ नौयाने शुभदः सितः २।

टी०॥ नौका के चलाने और माल भरने की लग्न का ग्रहबल स्थान तीसरे ३ छठे ६ ग्यारहवें ११ सूर्य शुभ और चंद्र मंगल शनि यह भी इन में शुभ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में गुरु शुभ २।५।७।८ १२।६ इन स्थानों में बुध होय तो शुभ ७।१२।६ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभ जानना ॥२॥

(नौका स्थान के ग्रह)

नाभ्यां पाप खगाः सौम्याः शुक्काणे शुभ कारकाः
व्यस्ता मृत्युकराः क्रूरः पृष्ठे कूर्पेच भीतिकृत ॥।
अंते वाह्ये स्थितास्तेचह्यलाभाय स्मृता बुधैः ।
एवं विचार्य दैवज्ञो नौयात्त समयं वदेत् ॥ २ ॥

टी०॥ लग्न समय में जो जो ग्रह जिस जिस स्थान में पड़ा होय तिस्का तैसा फल नाडी में पाप ग्रह शुभ शुक्काण पर शुभग्रह शुभ है और यह विपरीत होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर वा कूर्प पर आवे तो भय दायक और इन ग्रहों में से वाहर आवे तो लाभ होय यह विचारि करि के ज्योतिषी नाव बनवावे॥१॥२॥

दीपक चक्रम

दीपिकाया मुखे पंच राज सन्मान लाभदाः॥
कंठे नव धन प्राप्तिर्मध्ये षट् स्वामि मृत्युदाः २
दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्रिकस्तात्र दीपिकाम ।

टी०॥ कृत्तिका नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम-मुख

६ नीली में ३ हृदय पर ३ पीठ पर ३ पार्श्व में शुक्काण में ३ नाव के मध्य में ६ दीजिये तिन में ऊपर के मध्य के शुभ और स्थानों के अशुभ जानिये।

(लग्न और ग्रह बल)

त्रिषडाय गतः सूर्यश्चंद्रो द्विद्यायगः शुभः॥
कुजार्की त्रिषडायस्थौ त्रिषट् खेल रगो गुरुः॥
द्विसप्ता स्ताधरिः फाय रिपुसंस्थो बुधः स्मृतः
सप्तस्तास्तारी न्विनाधच नौयाने शुभदः सितः २।

टी०॥ नौका के चलाने और माल भरने की लग्न का ग्रहबल स्थान तीसरे ३ छटे ६ ग्यारहवें ११ सूर्य शुभ और चंद्र मंगल शनि यह भी इन में शुभ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में गुरु शुभ २।५।७।८।१२।६ इन स्थानों में बुध होय तो शुभ ७।१२।६ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभ जानना ॥२॥

(नौका स्थान के ग्रह)

नाड्यां पाप खगाः सौम्याः शुक्काणे शुभ कारकाः
व्यस्ता मृत्यु कराः क्रूरः पृष्ठे कूर्पे च भीतिकृत ॥।
अंते बाह्ये स्थितास्ते च स्युलाभाय स्मृता बुधैः।
एवं विचार्य दैवज्ञो नौयात्त समयं वदेत ॥ २ ॥

टी०॥ लग्न समय में जो जो ग्रह जिस जिस स्थान में पड़ा होय तिस का तैसा फल नाड़ी में पाप ग्रह शुभ शुक्काण पर शुभग्रह शुभ है और यह विपरीत होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर वा कूर्प पर आवे तो भय दायक और इन ग्रहों में से बाहर आवे तो लाभ होय यह विचारि कर के ज्योतिषी नाव बनवावे ॥१॥ २॥

दीपक चक्रम्

दीपिकाया मुखे पंच राज सन्मान लाभदाः॥
कंठे नव धन प्राप्तिर्मध्ये षट्‌ स्वामि मृत्युदाः २
दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्रिकस्तस्याच्च दीपिकाम् ।

टी०॥ कृतिका नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम-मुख

(बागलगानेकामु॰)

गोसिंहालिगते खुचोत्तरगते भानौ वुधाद्विवर्थे-

चंद्रार्के च शुभा वुधैरभिहिता रामप्रतिष्ठा क्रिया

टी०॥ उत्तरायन में वृष सिंह वृश्चिक इन राशियों का सूर्य और वु

धगुरु शुक्र रवि चन्द्रमा इनमें कोई वार हो ऐसा शुभ दिन देख

कर बाग लगाना चाहिये ॥ ५५॥

आश्लेषा भरणी द्वयं शत भिषक् त्यक्त्वा विशाखां कु

हूं रिक्ता पक्षति मष्टमीं परिहरेत्पष्ठीमपि द्वादशीम् १

टी०॥ श्लेषा भरणी कृतिका शतभिषा विशाखा और मावस्या रिक्ता

तिथि द्वितिया अष्टमी द्वादशी इन सब को छोड़के दिन में बाग लगावे॥

(सिक्का ढालने का मु॰)

मृदु ध्रुव क्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शनि चंद्र वर्ज्ये

वारे तथा पूर्णजलाव्हयेच मुद्रा प्रशस्ता शुभदा हि रासा

टी०॥ मृदु संज्ञक ध्रुव संक्षिप्र संज्ञक इन नक्षत्रों शुभ है शनि चन्द्र

ये वार छोड़के सिक्का रचे ॥ १॥

(प्रश्न अकर्णो तिथ्यादि प्रयुक्त प्रश्न:)

तिथिप्रहर संयुक्तं तारका वार मिश्रितम् ॥

अग्नि भिस्तु हरेद्भाग शेषं सत्व रजस्तमः ॥ १॥

सिद्धि स्तात्कालिकी सत्वे रजसा तु विलंवितः ।

तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्न कोविदैः २

टी०॥ जिस तिथि वार नक्षत्र में और प्रहर में प्रश्न में करे तिसका

उत्तर नीचे लिखते हैं ॥ उदाहरण ॥ तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर

२ इन सबों को छोड़के १७ तीन का भाग दे तो १५ गये शेष २ रहे तिस

का नाम दूसरा रज तिस का फल ये के कार्य में विलंब इसी प्रमाण से सब का

फल जानना तीन बचे ३ तम निष्फल १ बचे तो सत्व कार्य सिद्धि ॥५।२॥

(अपनी छाया से प्रश्न)

आत्मच्छाया त्रिगुणिता त्रयोदश समन्विता

धन सहज गतो सितः मरे ज्यो कथयत आगम
नं प्रवासि पुंसाम् ॥ तनु हिबुक गतौ विमो चत्त
ह्ल कदिति न्हृणां कुरुतो गह प्रवेशम् ॥ २ ॥

टी०॥ द्वितीय स्थान शुक्र तृतीय स्थानी गुरु अथवा प्रश्न लग्न में शुक्र चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होतो प्रदेशी शीघ्र ही आया जानिये

(कार्याकार्यप्रश्नः)

दिशा प्रहर संयुक्ता तारका वार मिश्रिता ॥ अष्ट
भिस्तु हृते भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणं ॥ फलं ॥ पं
चैके त्वरिता सिद्धिः षट् सूर्येन्च दिनत्रयम् ॥ त्रि
सप्तके विलंबश्च हौ चाष्टो नच सिद्धिदो ॥ २ ॥

टी०॥ पृच्छक का मुख जिस दिशा को होय वह दिशा और प्रहर वार नक्षत्र इन सबको एकत्र करिके ८ का भाग दे शेष बचे तिस में शुभाशुभ जानिये एक १ पांच ५ शेष बचें तो कार्य शीघ्र सिद्धि जानिये चार ४ छः ६ बचें तो तीन दिन में काम सिद्धि हो तीन ३ सात ७ बचें तो विलंब से कार्य सिद्धि होय और ८ आठ बचें तो कार्य नहीं होय ॥ २ ॥

(अंक प्रश्नः)

अंकं द्विगुणितं कृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम् ॥
त्रयोदश युतं कृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ फलं
एकेहि धन वृद्धिश्च द्वितीयेच धन क्षयः ॥
तृतीये क्षेम मारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेवहि ॥ २ ॥
पंचमेच स्त्रिलाभः स्यात षष्ठे बंधु विनाशनम्
सप्तमे इप्सिता सिद्धिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ।
नवमे राज्य संमान्निर्गर्भस्य चन्चनं तथा ॥ ४ ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका॥ जितने अंक का नाम होय उनको दूना करे फल और नाम के अक्षरों को मिलावे फिर उसमें १३ और मिलावे ९ का भाग दे शेष बचे तिस का फल कहिये एक से १ धन वृद्धि दो २ से धन क्षय तीन से ३ आरोग्य चार से ४ व्याधि पांच से ५ स्त्री का लाभ - छः ६

पंचभिस्तु हरे द्भागं शेषं तत्वं विनिर्दिशेत् ॥ फलं
पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयं जलस्थो ऽग्नि न लभ्यते ॥
तेजस राजसंज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत् २

टी०॥ तिथि वार नक्षत्र लग्न इन में तीन मिलावे और पांच का भाग दे शेष १ बचे तो पृथ्वी में जानिये दो २ बचें तो जल में जानिये तीन ३ बचें तो आकाश में पर मिले नहीं चार बचें तो अग्नि में राजा के गई जानिये पांच बचें तो वायु में शोक जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

(गर्भिणी प्रश्न)

तत्पृच्छ लग्ने रविजीवभौमे तृतीये सप्ते नव
पंच मे च ॥ गर्भः पुमान् वै ऋषिभिः प्रणीत
चान्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीतम् ॥ १ ॥ २ ।

टी०॥ गर्भिणी जिस लग्न में प्रश्न करे उस लग्न से प्रश्न कहे लग्न से तृतीय नवम पंचम सप्तम इन स्थानों में गुरु रवि भौम यह ग्रह स्थित हों तो पुत्र होय इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े होंय तो कन्या होय ॥ २ ॥

(मुष्टि प्रश्न)

मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नील वर्णकम् ॥
कर्केच पांडुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्र प्रकीर्तितम् १ ।
कन्यायां नील मिश्रं तु तुला पीत मिश्रितम् ।
वृश्चिके ताम्र मिश्रं च चापे पीत विनिश्चितम् २
नक्रे कुंभे कृष्ण वर्णं मीने पीतं वदेत्सुधी ॥

टी०॥ प्रश्न कर्ता की मुष्टि में किस रंग की वस्तु है तिसके बताने की रीति जो मेष लग्न होय तो लाल रंग की वस्तु मुट्ठी में है और वृष लग्न होय तो पीत मिथुन होय तो नील कर्क लग्न होय तो पांडुर सिंह लग्न से धूम्र कन्या में नीला मिला तुला में पीला मिला वृश्चिक में तांबा मिला धनु में पीला मिला मकर में हरा मिला बेलका वर्ण कुंभ में लोहमय मीन में पीत मय वर्ण जानना चाहिये ॥ २ । २

(लग्न से मन चिंतत प्रश्न)

षट् चतुर्षु भूत वाधा न वाधा एक पंच के ॥१॥

टीका ॥ तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको मिलावे और ८ का भाग देय शेष बचे तिससे फल कहना चाहिये ७।३ बचें तो देवता की वाधा- और २।८ बचें तो पित्र की वाधा-६। ४ बचे तो भूत की वाधा १।५ बचें तो वाधा नहीं जानिये ॥१॥

(लग्नदोष)

मेषे च देवी दोषः स्यात् वृषे दोषश्च पैतृकः ॥
मिथुने शाकिनी दोषो कर्कटे भूत दोषकः १
सिंहे सहोदराणां वै कन्यायां कुल मातृजाः ॥
तुले दोषश्चंडिकाया नाडी दोषो हि वृश्चिके २
चापे च यक्षिणी दोषो मकरे ग्राम देवतात् ॥
अपुत्राष्त्रिजाः कुंभे मीने आकाश गामिनः ३

टी० ॥ जिस लग्न में रोगी प्रश्न करे तिसका उत्तर मेष लग्न में पित्र दोष-वृष में आकाश देवी- मिथुन में महामाया- कर्क में वातज्वर भूत शाकिनी- सिंह में प्रेत भाई को दोष कन्या में कुल देवता तुला में चंडिका पूतना- वृश्चिक नाग दोष वा ज्वर पीड़ा- धन में यक्षिणी वा देह दोष मकर में ग्राम देवी हंसे रोवे कुंभ में अपुत्र स्त्री की दृष्टि का दोष मीन में ज्वर जंजाल दर्शन योगिनी दोष जानना ॥

(मेघ का प्रश्न)

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादि दिनत्रये ॥
रोहिणी कालमाख्याति सुख दुर्भिक्ष लक्षणं
रात्रावेव निरभ्रं स्यात् प्रभाते मेघडंबरम् ॥
मध्यान्हे जल बिंदुः स्यात्तदा दुर्भिक्ष कारणम् २

टी० ॥ आषाढ कृष्ण पक्ष की दशमी एकादशी द्वादशी इनमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तिथि क्रम से जानिये और रात्रि में मेघ न होय और प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्यान्ह में बूंदें पड़ें ऐसे लक्षण जिस संवत्सर के होंय उसमें महर्घता जानिये ॥२॥

सूर्य के होंय तो वायु चले और जो दोनों चंद्रमा के होंय तो मेघन बर्षे और सूर्य चंद्रमा के नक्षत्र होंय तो बर्षा होय ॥ १ ॥

(धान्यप्रश्न)

कापाये जय शर्म लाभ कुगिरो मित्राणि सर्व शुभं गोरा ये प्रिय मुग्ध नानिल परे लाभारि नाशादिकम् ॥ रथ्यां गे कलह: श्रियश्च वलगे स्थाना निमित्रागमो रोपरांवि पदा परांग कलहखालेय शोकावह: ॥ १ ॥ ३३ ॥

टीका ॥ २७ दाने धान्य के लेकर एक राशि करे उसी राशि में से एक चुटकी भर निकाल के रक्खे ऐसे तीन राशि करे उनमें से तीन २ दाने जुदे २ करता जाय जो तीन राशियों में से एक एक बचे तो जय लाभ होय -का कहिये १ पा कहिये २ य कहिये १ ऐसी तीन राशियों से पृथक करे एक एक बचे तो उसका फल जय लाभ जानिये ॥ १ ॥

२	कु	क	१	गी	क	२	मित्रादि सर्व सिद्धि
३	गो	क	३	रा	२	ये १	प्रिय भोग प्राप्ति
४	ल	३	प	१	रे	२	लाभ और शत्रु का नाश
५	र	२	प	१	ग	३	कलह होय
६	व	३	ल	३	गे	३	लक्ष्मी मित्र लाभ
७	रो	२	रो	२	रे	२	विपत्ति होय
८	प	१	रा	२	ग	३	कलह होय
९	खा	२	ल	३	प	१	शोक प्राप्ति

ऐसे तीन वार करने से बुरा भला फल जानिये और राशि के समय तीन तीन दाने गिने ॥ १ ॥

(पशु विषय प्रश्न)

द्युमणिभान्नवभेषु वने स्थितं तदनु पंच सुच कर्ण पथे स्थितम् ॥ अचलभेषु गतं गृह मागतं द्वयमतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ जो सूर्य नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र नववा होय तो पशु बन में

शीर्षे त्रीणि मुखे त्रयं च विभादे कैकं भं स्कंधयोरेकै
कं भुजयोस्तथा करतले धिष्णायानि पंचोदरे ॥ नाभौ
गुह्यतले च जानुयुगले एकैकमृक्षं क्षिपेत् जंतोः केचि
दिति वदंति गणकाः प्रोपाणि पादद्वयोः ॥ अल्पायुश्चर
णे स्थिते च गमनं देशांतरं जानुभे ॥ गुह्ये स्यात्परदारलं
भनमहीनाभौ च सौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यं हृदि चौर्य्यमं
स्यकरयोर्बाह्वो र्बलं वै मुखे मिष्टान्नं च लभेच्च मान
व गणो राज्यं स्थिरं मूर्द्धनी ॥ २ ॥ ं ं ं ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने प्रथम ३ मस्तक रा
ज्य प्राप्ति आगे मुख ३ मिष्टान्न भोजन १।१ कंधों पर बल अधिक दो
नों भुजाओं पर १।१ बलवान् हथेलियों पर १।१ चोर होय हृदय प
र ५ ऐश्वर्य नाभि पर १ सुख प्राः गुह्य पर १ परदार लंपटता जानु
पर १ प्रदेश गमन दोनों पैरों पर ३।३ अल्पायुः इस प्रकार जन्म
नक्षत्र का फल जानिये नव ग्रहों की टीका सुगम है सो आगे चक्र
लिखे हैं तिस्से सब ग्रहों का फल जानना ॥ २ ॥

सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्र में आर्के उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने
जितने नक्षत्र आवें वही फल जानना ॥ १

स्थान	मुख	दा·हा·	पायों	वा बाहु	हृदय	नेत्रों	मस्त·	गुदा	सूर्य
नक्षत्र	३	४	६	४	५	४	१	२	०
फल	रोग	लाभ	मार्ग	बंधन	लाभ	लक्ष्मी	राज्य	अ·स्ट·	चक्रं

जन्म नक्षत्र से जिस नक्षत्र में चंद्रमा होय तिस पर्यंत
गिने जितने आवें फल जानिये॥

स्थान	मस्तक	मुख	दो·हा	हृदय	वा·हा	कुक्षि	दो·पायं	वा·गयं	चंद्र
नक्षत्र	६	१	३	६	२	६	१	१	०
फल	लाभ	हानि	हानि	सु·प्रा·	रोगप्रा	शोक	हानि	रोग	चक्रं

जन्म नक्षत्र से जिस नक्षत्र पर मंगल होय तिस तक गिने

स्थान	मस्त·	हा·हा·	पायों·	बा·हा	हृदय	कंठ	मुख	नेत्रों	गुह्य
नक्षत्र	३	४	६	४	३	१	२	३	२
फल	राज्य	वियुक्ष·	मार्गच·	मृत्य	लाभ	रोग	जय	सौख्य	कष्ट

जन्म नक्षत्र से केतु जिस नक्षत्र में होय उस तक गिने तिस स्थान में पड़ा हो उसका फल जानना

स्थान	मस्तक	मुख	हाथों	पायों	हृदय	कंठ	गुह्य
नक्षत्र	५	५	४	६	२	४	१
फल	जय	भय	विजय	सुख	शोक	व्याधि	बड़ा भय

(लग्न शुद्ध में पंचक ज्ञान)

गत तिथि युत लग्ने नंद हृत शेष कंच वसु यम युग पट्के क्षोणिसंख्या क्रमेण ॥ रुगनल नृप चोरं मृत्यदं पंचकं स्या हृतगृह नृप मार्गोद्वाह के वर्जनीयम् ॥ १ ॥

टीका ॥ गत तिथि को लेकर उसमें लग्न मिलावे और नव का भाग दे शेष बचे तिसका फल कहिये ८ बचें तो रोग पंचक जानिये सो यज्ञोपवीत में वर्जित है २ बचें तो अग्नि पंचक जानिये यह गृहारंभ में वर्जित है ४ बचें तो राज पंचक जानिये और ६ बचें तो चोर पंचक जानिये यह दोनों पंचक यात्रा में वर्जित हैं और पांच ५ बचें तो मृत्यु पंचक जानिये यह भी विवाह में वर्जित है इससे अधिक जो अंक बचें तो निष्पंचक जानिये ये सब कार्य में विचारे ॥ १ ॥

(वारों में पंचक वर्जित)

रवौ रोगं कुजे वन्हिः सोमे तु नृप पंचकम् बुधे चोरं शनौ मृत्युः पंचकानि तु वर्जयेत् १

टीका ॥ रवि वार में रोग पंचक - मंगल में अग्नि पंचक - सोम वार में राज पंचक - बुध वार में चोर पंचक - शनि वार को मृत्यु पंचक इन वारों में वर्जित है ॥ १ ॥

(दिन रात्रि मानं)

अथ मृगादिके वासरे रामहृताः गगना नलवाण

९ का भाग दे जो अंक शेष रहें उतनी ही गत रात्रि जानना चाहिये ॥

(अंतरंगवहिरंग नक्षत्र)

सूर्यभाद्दुगणं पुनः पुनर्गणयता मितिच
तुष्टयं त्रयम् ॥ अंतरंग वहिरंगसंज्ञकं तत्र
कर्म विदधीतततान्दृशाम् ॥ १ ॥८८५ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्त्तमान नक्षत्र पर्यंत वार गिने तो वे अंतरंग वहिरंग संज्ञक होवे हैं ॥

सूत का स्नान

करेन्द्रभाग्यानिलवासवांत्यमैत्रेन्दुवाश्वि
ध्रुवभेहि पुसाम ॥ तिथ्यावरिक्ते शुभसासन
न्ति प्रसूतिकास्नानविधिम्मुनीन्द्राः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त ज्येष्टा पूर्वाफाल्गुणी स्वाति धनिष्टा रेवती अनुराधा मृगशिर अश्विनी और ध्रुव नक्षत्र इन में से कोई नक्षत्र जिस दिन होय उस दिन सूतिका का स्नान कहा है परंतु रिक्ता तिथि छोडिकें ॥ १ ॥

अस्यामेव दिग्विशेषे वायुसंचारफलम ॥ आ
षाढ्यांभास्करास्ते सुरपतिनिलये वातिवाते
सुदृष्टिसस्याढ्य कुर्याघदिहरिकोसंदष्टि
येमेन ॥ नैऋत्यांमन्ननाशोवरुणदिशिजलं
वायुकोणेप्रवायुः ॥ कौवेर्यासस्यपूर्णा सक
लवसुमतीतद्दीशानकोणे ॥ १ ॥८८६ ॥

टीका ॥ आषाढ की पूनों को वायु जिस दिशा की चले तो यथा योग्य फल जानना चाहिये वैसाही कहै यह टीका सुगम है ॥ १ ॥

(अस्या पूर्णिमायां हुतासनीफलम)

पूर्वे वायौ होलिकायां प्रजाभूपलयोः सुखं ॥ पला
यनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ पश्चिमेतृणसंपत्तिउ
त्तरे धान्यसंभवः ॥ यदि खेचिशिखावृद्धिदुर्गराज्ञाच संश्रयेत १

ईश्वरायनमः

॥ इति ज्योतिषसार संपूर्णम् शुभम् ॥

मिती माघ शुक्ला पूर्णमासी यां गरुवासरे सम्वत् १९६८

हस्ताक्षर रूपलाल कायस्थ

दोहा

॥ रूपलाल जन दीन को ईश्वर चरण की आस ॥
॥ जैसे चात्रक मिटै ना बिना स्वाति के प्यास ॥

बरना चकती कारगाहे सुलगहा के असवार
पलास सहित रक्षा करो सुनाहे बंस हमार

दोहा

तपरिपु ता रिपु तासु रिपु रिपु २ रिपे रिपेन
ता रिपु के असवार सों लगे हमारे नैन
लटपट पग धरती धरत अटपट बोलत बैन
कछु पीउ सों खटपट भई सु टपटप टपकत नैन
गिरिधिय पति के तिलक हैं ता जननी धिय कंत
ताके सुमिरन करत ही आवागवन मिटंत
अजा सहेली तासु रिपु ता जननी भरतार
ताके सुत के प्रातु को भज मन बारंबार

✤ { अक्षर चौगुन पंच जुत दून वसू कर पेख
राम रसे सब जगत में तुलसी चित में देख

✤ हिसाबसे नाम के जो अक्षर सब वर्णों में रमे हैं ॥

तुलसी जा संसार में पंच तत्व हैं सार
साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार